अंक 21

सत्र 2017-18

ऋतम्भरा

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय

अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

(चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध)

(NAAC ACCREDITED COLLEGE WITH CGPA 2.71)

Web.: www.dpbscollegeanoopshahr.org • E-mail : mails_principaldpbs@rediffmail.com • Phone : 05734-275450

॥ वन्दना ॥

हे हंस वाहिनी ज्ञान-दायिनी,
अम्ब विमल-मति दे, अम्ब विमल-मति दे॥
जग सिरमौर बनायें भारत,
वह बल विक्रम दे, अम्ब विमल-मति दे॥
साहस शील हृदय में भर दे,
जीवन त्याग तपोमय कर दे॥
संयम सत्य स्नेह का वर दे,
स्वाभिमान भर दे, अम्ब विमल-मति दे॥
लव-कुश ध्रुव प्रहलाद बनें हम,
मानवता का त्रास हरें हम।
सीता सावित्री दुर्गा माँ,
फिर घर घर भर दे, अम्ब विमल-मति दे॥
हे हंस वाहिनी ज्ञान दायिनी,
अम्ब विमल-मति दे, अम्ब विमल-मति दे॥

सम्पादक मण्डल

डॉ॰ यू॰ के॰ झा
(प्राचार्य/संरक्षक)

डॉ॰ (श्रीमती) चन्द्रावती
(प्रधान सम्पादक)

श्री सीमान्त कुमार दुबे
(सम्पादक)

डॉ॰ भुवनेश कुमार
(सम्पादक)

डॉ॰ एस॰ के॰ सिंह
(सम्पादक)

डॉ॰ विशाल शर्मा
(सम्पादक)

मानसी गर्ग
(बी.एस-सी. तृतीय वर्ष)

गौरव कौशिक
(बी.सी.ए. तृतीय वर्ष)

हे कर्मनिष्ठ, हे धर्मनिष्ठ, तुम शासन प्रिय हे सेनानी,
तुम सदा कर्म में लीन रहे, सबके हित के तुम कल्याणी।
तुम मरकर भी हो अमर सदा, जन-मन के हे तुम महाप्राण,
हम हैं श्रद्धांजलि अर्पित करते, शत प्रणाम, शत-शत प्रणाम।

श्रद्धेय स्व. श्री दुर्गा प्रसाद जी

श्रद्धेय स्व. श्री बलजीत सिंह जी

श्रद्धेय स्व. श्री भगवती प्रसाद गर्ग जी

A source of Eternal Inspiration

Shri Jaiprakash Gaur Ji

Founder Chairman, Jaypee Group
Managing Trustee, Jaiprakash Sewa Sansthan
President, Anglo Vedic Educational Association

On the path of progress, education is the medium that can allow our country to not only conserve its culture but also ignites the minds of our young countrymen and and empowering them to be at par with the citizens of other developed countries. Science & Technology in the 21st Century will unleash a revaluation of progress that is beyond our imagination today and which will transcend the limits of planet Earth to enable human beings to begin their tryst with the infinite universe.

We are determined to provide quality education to our students through the most modern educational institutions to make them financially empowered while shaping them into self reliant and confident citizens of modern India.

These institutions would strive to inculcate discipline and character building along with serious pursuit of knowledge, utilizing the most advanced teaching practices and high moral standards so that our teachers and students can stride forward and see the transformation of their country into an advanced nation within their lifetime.

Jai Prakash Gaur

Jaiprakash Gaur

महाविद्यालय प्रबन्ध कार्यकारिणी

श्री अजय गर्ग
(अध्यक्ष)

श्री विकास कुमार
(उपाध्यक्ष)

डॉ. के. पी. सिंह
(सचिव)

श्री रवि परमार
(संयुक्त सचिव)

श्री सुरेश चन्द जिन्दल
(कोषाध्यक्ष)

श्री सुनील गुप्ता
(आंतरिक लेखा परीक्षक)

श्री एस.पी.एस. तोमर
(सदस्य)

डॉ. सुधीर कुमार
(सदस्य)

कमाण्डर एस. जे. सिंह
(सदस्य)

डॉ. यू. के. झा
प्राचार्य (पदेन)

डॉ. वी. के. गोयल
(प्राध्यापक प्रतिनिधि)

श्री सुनील कुमार गर्ग
(तृतीय श्रेणी कर्मचारी प्रतिनिधि)

योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री
उत्तर प्रदेश

लाल बहादुर शास्त्री भवन,
लखनऊ

दिनांक : 06.12.2017

संदेश

हर्ष का विषय है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर, बुलन्दशहर द्वारा अपनी पत्रिका **'ऋतम्भरा'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षण संस्थाओं की पत्रिकाएं संस्थान की शैक्षिक, सांस्कृतिक तथा अन्य गतिविधियों की जानकारी प्रदान करने के साथ ही विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा अभिव्यक्त करने का मंच भी प्रदान करती हैं। मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका में पाठकों के लिए उपयोगी सामग्री का समावेश किया जायेगा।

वार्षिक पत्रिका के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(योगी आदित्यनाथ)

MANOJ GAUR
Executive Chairman

JAIPRAKASH
ASSOCIATES LIMITED

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर, अपनी उत्कृष्ट शैक्षिक परम्परा के अनुरूप अपनी वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** का इक्कीसवाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है। 'सूचना क्रांति' के इस युग में जब रोज नये-नये अन्वेषण हो रहे हैं और नई-नई घटनायें घटित हो रही हैं, अपने ज्ञान के स्तर को अद्यतन रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है— विशेषकर उन ग्रामीण एवं पिछड़े इलाकों में जहाँ इंटरनेट की सुविधा आज भी सीमित है। ऐसे में पत्र-पत्रिका ज्ञान को समृद्ध करने का एक सशक्त माध्यम है, बशर्ते कि इसमें परम्परागत विषयों के साथ-साथ सम-सामयिक घटनाओं, प्रवृत्तियों एवं अन्वेषणों का जिक्र हो। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका हमारी अपेक्षाओं के अनुरूप प्रकाशित होगी। इस अवसर पर मैं महाविद्यालय प्रबन्धतंत्र के सदस्यों, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

प्राचार्य
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलिज
अनूपशहर, बुलन्दशहर

मनोज गौड़

JAYPEE GROUP

Corp. & Regd Office : Jaypee Greens Wish Town, Sector-128, Noida - 201 304, Uttar Pradesh (India)
Ph.: +91 (120) 4963100 Direct : +91 (120) 4972140 / 4972141
Fax : +91 (120) 4963122 E-mail : manoj.gaur@jalindia.co.in
Delhi Office : JA House 63, Basant Lok, Vasant Vihar, New Delhi-110 057 (India)
CIN : L14106UP1995PLC019017 Website : www.jalindia.com

Sunil Sharma
Executive Vice Chairman

MESSAGE

JAIPRAKASH
ASSOCIATES LIMITED

It gives me great pleasure to know that Durga Prasad Baljeet Singh (P.G.) College, Anoopshahr, is about to publish the 21st edition of its house magazine 'Ritambhara'.

It is heartening to note that the tradition of publishing 'Ritambhara' your annual publication, has always been more than just a ritual, made possible by enthusiastic participation of the talented students and able faculty. I am upbeat that we are going to see yet another impressive edition of 'Ritambhara', enriched with wide range of creative expressions.

What is more admirable is that, for years now, D.P.B.S. (P.G.) College has been acting as an enabler for the students of Anoopshahr and its surrounding areas to realize their dream of achieving success in life through higher education. In the same vein, I would also urge the College authorities and the faculty to do everything possible to sustain its competitive edge by deftly adopting modern tech tools in teaching.

It is important for the students to make the best use of the available resources that the College is offering and equally important for the faculty to keep raising the bar for teaching standards in tune with the changing times, to remain relevant & up-to-date.

I also take this opportunity to acknowledge the efforts which went into publication of this magazine, and also wish the College, its students & faculty all the very best in their efforts to achieve all-round excellence.

With the Best Wishes.

S. K. Sharma

SUNIL KUMAR SHARMA

JAYPEE GROUP

Regd. & Corporate Office :
Sector 128, Noida - 201304, Uttar Pradesh (India)
Ph.: +91 (120) 4609000, 2470800 Direct : +91 (120) 2465504
Fax : +91 (120) 4609496, 4609464, Email: sunil.sharma@jalindia.co.in

COMMANDER SJ SINGH NM
PRESIDENT (EDUCATION)

संदेश

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में शिक्षा विशेषकर उच्च शिक्षा का महत्व सर्वाधिक है क्योंकि एक शिक्षित-प्रशिक्षित मानव संसाधन के बदौलत ही कोई देश विकास के पथ पर अग्रसर हो सकता है। हमारे देश में सभी स्तर के शैक्षिक संस्थानों का मात्रात्मक रूप से तो तीव्र गति से विकास हुआ है, लेकिन गुणात्मक रूप से जिस गति से विकास होना चाहिए था, उतना नहीं हो पाया है। यही कारण है कि 'ग्लोबल रैंकिंग' में हमारी शिक्षण संस्थाओं का स्थान काफी नीचे है। ऐसे में विचारणीय प्रश्न ये है कि शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता को कैसे बढ़ाया जाये?

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु यह अत्यन्त आवश्यक बन पड़ा है कि हम अपने शिक्षण संस्थानों में तकनीक जैसे– इंटरनेट, यू ट्युब और मुक्त पाठ्यक्रमों के माध्यम से शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ायें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि डी.पी.बी.एस. स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य और प्राध्यापकगण इस संदर्भ में महत्वपूर्ण व ठोस प्रयास करें।

मेरा यह मानना है कि शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि केवल किताबी ज्ञान से संभव नहीं है बल्कि इसके लिए आवश्यकता है विद्यार्थियों के बहुमुखी प्रतिभा को विकसित करने की, पत्र-पत्रिका एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो इस उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकती है।

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर द्वारा वार्षिक पत्रिका ऋतम्भरा का नियमित प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। मैं पत्रिका के इक्कीसवें अंक के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए प्राचार्य, संपादकीय मंडल के सदस्यों तथा विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ।

सुरेन्द्रबीर सिंह

चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ- 250 004 (उ.प्र.)

पत्रांक : एस.वी.सी./20/825 दिनांक : 01.01.2018

प्रोफेसर नरेन्द्र कुमार तनेजा
पी-एच.डी. (अर्थशास्त्र)
कुलपति

संदेश

जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर (बुलन्दशहर) द्वारा महाविद्यालय के शैक्षिक सत्र 2017-18 की वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' का प्रकाशन किया जा रहा है। विश्वास है कि यह पत्रिका ज्ञानोपयोगी एवं रोजगारोन्मुख उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित करेगी। महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को मानसिक एवं बौद्धिक रूप से सुदृढ़ बनाने हेतु किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय है।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका प्रकाशन करने हेतु शुभकामनायें।

डॉ. यू. के. झा
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महाशय दुर्गा प्रसाद मार्ग, अनूपशहर-202390 (बुलन्दशहर)

नरेन्द्र तनेजा
(प्रो. एन. के. तनेजा)

कुलपति आवास, विश्वविद्यालय परिसर
मेरठ-250 004

कार्यालय : +91-0121-2760554, 2760551, फैक्स : 2762838
शिविर कार्यालय : +91-0121-2600066, फैक्स : 2760577

वैबसाइट : ccsuniversity.ac.in
ई-मेल : vc@ccsuniversity.ac.in

Jaypee Institute of Information Technology

(Declared Deemed to be University u/s 3 of the UGC Act)

MESSAGE

It is indeed good to know the Durga Prasad Baljeet Singh (P.G.) College is going to publish the next issue of its annual magazine 'Ritambhara'. This will offer an opportunity to all the faculty members, students and staff of the college to contribute valuable articles of various kinds based on their experience and exposure in the college. They will also get a chance to provide feedback to the management of the college on various matters which they knwo and wish to attract the attention of the college authorities for improvement. The contributed articles like poems, stories, motivational write-ups etc. beyond college activities will enrich the quality of the magazine.

I would like to convey my appreciations to all those who are associated with the editing and publishing this magazine.

May God bless the college, its faculty, staff and administration and provide them zeal and great desire to take the college to next higher levels of quality education.

With best wishes and wishing you all a happy and prosperous New Year - 2018.

Saxena

Prof. (Dr.) S.C. Saxena
Vice Chancellor

A-10, Sector-62, Noida - 201309 (U.P.) India, Ph.: (91) 120-2400973-975 Fax : (91) 120-2400986 Website : www.jiit.ac.in

डॉ. राजेन्द्र पाल सिंह
निदेशक, उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा निदेशालय, उ० प्र०
इलाहाबाद

0532-2623874 (का.)
0532-2423919 (फैक्स)
0532-2256785 (आ.)
9415295755 (मो.)

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्न्ता हो रही है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलेज, अनूपशहर, बुलन्दशहर अपनी वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' के इक्कीसवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। जिसमें महाविद्यालय की वर्षभर की गतिविधियां तथा छात्र-छात्राओं की मौलिक रचनाओं यथा-निबन्ध, कविता, गीत, ग़ज़ल आदि का समावेश होगा।

शब्द को जब अनुभूति का स्पर्श मिलता है तो वह जीवन्त हो उठता है और मानवीय संवेदनाएँ जब शब्दों का जामा पहन लेती हैं तो नैतिकता की अभिव्यक्ति होती है। युवा विद्यार्थी अपनी सोच को, अनुभूति एवं संवेदनाओं की कहानी, कविता एवं लेखों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। युवा वर्ग की सोच की दिशा एवं दशा पर परिवेश का प्रभाव पड़ता है और उसकी दिशा एवं दशा से देश की दिशा एवं दशा का निर्धारण होता है। अतः युवा विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति से भावी समाज और देश की दिशा एवं दशा का आभास होता है।

आशा है कि 'ऋतम्भरा' के इक्कीसवें अंक के प्रकाशन से शिक्षकों को विद्यार्थियों के अन्तर्मन की टोह मिलेगी, जिससे अध्यापन को राह मिलेगी और प्रतिफल में हमारे युवा सही पथ के पथिक बनेंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. आर. पी. सिंह)

प्राचार्य, दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलेज, अनूपशहर, बुलन्दशहर।

प्रोफेसर (डॉ.) राजीव कुमार गुप्ता
(एम.कॉम., एल-एल.बी., पी-एच.डी., एम.बी.ए., एम.जे.)

दूरभाष :
0121-2400444, 09868106027
Office : Regional Higher Education Officer,
E-mail: rheomeerut@yahoo.com
www.rheomrt.org

संदेश

महोदय,

महाविद्यालय पत्रिका का प्रकाशन सामूहिक प्रयास से संभव हो पाता है। यह पत्रिका महाविद्यालय के विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकगण की रचनात्मक भूमिका का एक सराहनीय प्रयास है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'ऋतम्भरा' पत्रिका समयान्तर्गत प्रकाशित होकर प्रत्येक विद्यार्थी को पढ़ने को उपलब्ध हो पायेगी तथा पाठकों को रूचिकर तो लगेगी ही, साथ में देश और समाज के लिये कुछ करने की प्रेरणा भी देगी और सभी विद्यार्थियों को आभास भी करायेगी कि जीवन में सामूहिक प्रयासों से विशाल से विशाल लक्ष्य भी प्राप्त किये जा सकते हैं।

महाविद्यालय परिवार और विद्यार्थियों को प्रेरणादायी और समाजोपयोगी पत्रिका के प्रकाशन के लिये बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(राजीव कुमार गुप्ता)

डॉ. चन्द्रावती
प्रधान सम्पादक,
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलेज, अनूपशहर, बुलन्दशहर।

Dr. Bhola Singh
Mamber of Parliament
(Lok Sabha)
Bulandshahr U.P.

Member :
- Food & Consumer Affairs and Public Distribution Standing Committee
- Communication & Information Technology Consulting Committee
- Bureau of Indian Standards
- Aligarh Muslim University Court

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर सत्र 2017-18 में वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' का इक्कीसवां अंक प्रकाशित कर रहा है। निश्चित ही यह पत्रिका ज्ञानोपयोगी रोजगारन्मुख उच्चशिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों, शिक्षकों को अपने विचार प्रकट करने का अवसर प्रदान करेगी तथा मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों को विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को शुभकामना एवं हार्दिक बधाई देता हूँ।

भवदीय

डॉ. भोला सिंह

14-B, Ferozeshah Road, New Delhi-110 001 Tel.: (O) 011-23731276, Fax : 011-23731277
A-74, Yamuna Puram, Bulandshahr-203001, U.P. Tel.: 05732281111

संजय शर्मा विधायक
अनूपशहर, जिला-बुलन्दशहर
मो.: 9818326000, 8887150867

क. 6 No. 080361

दूरभाष : 6.1.2018

संदेश

मेरे लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि अनूपशहर की प्रतिष्ठित शिक्षण संस्था दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' का इक्कीसवां अंक प्रकाशित करने जा रही है। पत्र-पत्रिका एक विचार मंच है जो विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों को अपनी भावात्मक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है। आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में यह आवश्यक है कि हमारे युवा न केवल अपने विषय वस्तु के ज्ञान से सुसज्जित हों, बल्कि उनमें अपेक्षित कार्य को उत्कृष्टतम ढंग से सम्पादित करने का कौशल भी हो। यही कारण है कि हमारे केन्द्र एवं राज्य की सरकारें परम्परागत एवं औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ कौशल विकास पर पर्याप्त ध्यान दे रही है। मैं इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों को यही संदेश देना चाहूंगा कि वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु कठिन परिश्रम करें, अनुशासित रहें, सतत् जागरूक रहें तथा शासन स्तर पर युवाओं के लिए जो भी योजनायें चलायी जाती हैं उसका भरपूर लाभ उठायें।

पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए मैं महाविद्यालय प्रबंध तंत्र के सभी सम्मानित सदस्यों, महाविद्यालय के प्राचार्य एवं सभी प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

(संजय शर्मा)
विधायक, विधानसभा क्षेत्र, अनूपशहर

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय

महाशय दुर्गा प्रसाद मार्ग, अनूपशहर (बुलन्दशहर) उ.प्र.-203390
(सम्बद्ध चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
Web.: www.dpbscollegeanoopshahr.org • E-mail : mails_principaldpbs@rediffmail.com • Phone : 05734-275450
NAAC Certification Grade B (CGPA 2.71)

संदेश

अजय गर्ग
अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

दिनांक : 08.01.2018

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय अनूपशहर, अपनी वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' का इक्कीसवाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है। सदैव की तरह यह पत्रिका विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों की उत्कृष्ट रचनाओं से परिपूर्ण होगी तथा 'ऋतम्भरा' का यह अंक विद्यार्थियों एवं समाज को नई दिशा प्रदान करेगा।

इस अवसर पर मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए महाविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

(अजय गर्ग)

संदेश

डॉ. के. पी. सिंह
सचिव, प्रबन्ध समिति

दिनांक : 09.01.2018

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर अपनी वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' का इक्कीसवाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन करने के साथ-साथ उनकी साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने में भी सहायक होगी।

यह महाविद्यालय अनुशासन व शिक्षण की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान रखता है। मुझे पूर्ण आशा है कि महाविद्यालय अपनी विशिष्टता को कायम रखते हुए उच्च शिक्षा को जन-जन तक पहुँचाने के गुरूत्तर दायित्व का निर्वहन पूर्ण ईमानदारी व लगन से करता रहेगा। दृढ़ इच्छा शक्ति, कठिन परिश्रम एवं लगन के द्वारा जीवन में किसी भी लक्ष्य को सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य, प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(डॉ. के. पी. सिंह)
सचिव, प्रबन्ध समिति

प्राचार्य का उद्‌बोधन...

वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' का नियमित प्रकाशन हमारे महाविद्यालय द्वारा स्थापित श्रेष्ठ परम्पराओं में से एक है और मुझे यह खुशी है कि मैं इस परम्परा से लम्बे अर्से से सम्बद्ध रहा हूँ। दिनाँक 25 अक्टूबर 2017 से मुझे 'कार्यवाहक प्राचार्य' का दायित्व सौंपा गया है और एक प्राचार्य के रूप में मेरी यही कोशिश है कि मैं महाविद्यालय की 'शैक्षिक गुणवत्ता' को उच्चतम स्तर तक पहुँचा सकूँ। मेरा यह मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ डिग्री प्राप्त करना नहीं है बल्कि समय की माँग के अनुरूप ज्ञान के स्तर को अद्‌यतन रखते हुए एक ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना है जिसमें आधुनिक युग की चुनौतियों का सामना करने तथा वैश्विक स्तर पर उत्पन्न नये अवसरों का लाभ उठाने की क्षमता हो। मुझे यह खुशी है कि हमारे महाविद्यालय का 'कुशल प्रबन्ध तंत्र' महाविद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाने हेतु निरन्तर कृतसंकल्प है और अगर इसी तरह मुझे सभी का सहयोग मिलता रहा तो मैं अपने नये प्रशासनिक दायित्व का निर्वहन अपेक्षाओं के अनुरूप कर पाऊँगा।

'ऋतम्भरा' के इक्कीसवें अंक के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए मैं सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों, प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

Uha

(डॉ. यू. के. झा)

प्राचार्य

प्रधान सम्पादक की कलम से...

"ऋत" का तात्पर्य यथार्थ से एवं "भरा" का तात्पर्य धारण से है, इस प्रकार ऋतम्भरा का भावार्थ 'यथार्थ को धारण करने वाली वाली' अर्थात 'सत्य का बोध कराने वाली' है। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' अपने शीर्षक को सार्थक कर सके इसी आशा के साथ इसका इक्कीसवाँ अंक आप सभी को समर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। वास्तव में पत्र, पत्रिकाएँ और स्मारिकाएँ मानव की आत्मिक व बौद्धिक अभिव्यक्तियों की परिचायक होती है। इसी भाव को अन्तःकरण में समेटे हुए 'ऋतम्भरा' को शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं ने अपनी बौद्धिक अभिव्यक्तियों एवं अनुभवों से सजाया व सवांरा है। ऋतम्भरा महाविद्यालय की प्रगति एवं अनुभवों एवं विभिन्न शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक गतिविधियों की परिचायक बन सके इसके लिए पूर्ण प्रयास किया गया है।

वर्तमान, समय में किसी भी व्यक्ति की वास्तविक संपत्ति उसमें निहित ज्ञान व कौशल ही है। यदि व्यक्ति में ज्ञान और कौशल है तो वह व्यक्ति अपने पारिवारिक, सामाजिक व लोकतान्त्रिक दायित्वों के मध्य उत्कृष्ट सामंजस्य स्थापित कर राष्ट्र के विकास में अपना अमूल्य योगदान दे सकता है। निश्चित ही ऋतम्भरा का यह अंक छात्र-छात्राओं एवं पाठकों में ज्ञान, कौशल व तकनीकी की महत्ता की समझ विकसित करने में तथा राष्ट्र के सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं नैतिक विकास में अपना योगदान देने हेतु प्रेरित करने में सक्षम होगा।

ऋतम्भरा के इक्कीसवें अंक को इस रूप में संवारने में मुझे पत्रिका के संरक्षक प्राचार्य डॉ. यू. के. झा तथा सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ, जिसके लिए मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। पत्रिका को अपनी अभिव्यक्तियों, अनुभवों से युक्त रचनाओं के द्वारा समृद्ध बनाने वाले सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों व कर्मचारियों की आभारी हूँ। साथ ही मैं महाविद्यालय प्रबन्धतंत्र के सम्मानित सदस्यों एवं उन सभी विद्वतजनों की आभारी हूँ जिन्होंने अपने शुभ सन्देश देकर हम सभी का उत्साहवर्धन किया है। अंत में मैं डी.के. पब्लिशर्स एवं प्रिंटर्स, नई दिल्ली का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने हमारी अपेक्षाओं के अनुरूप 'ऋतम्भरा' को मुद्रित किया।

Chandravati

डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती

प्रधान सम्पादक

प्राध्यापक मण्डल (वित्त पोषित)

बाँये से दाँयें : श्री सीमान्त कुमार दुबे, श्री यजवेन्द्र कुमार, डॉ. पी. के. त्यागी, डॉ. मुनेश कुमार, डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य), डॉ. मुकेश गुप्ता, डॉ. वी. के. गोयल, डॉ. आर. के. अग्रवाल, डॉ. चन्द्रावती

प्राध्यापक मण्डल (स्ववित्त पोषित)

बाँये से दाँयें (बैठे हुए प्रथम पंक्ति) : डॉ. सुधा उपाध्याय, डॉ. घनेन्द्र बंसल, श्री मंयक शर्मा, श्री पंकज गुप्ता, डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य), डॉ. के. सी. गौड़, डॉ. भुवनेश कुमार, डॉ. तरूण बाबू, डॉ. सुनीता गौड़

बाँये से दाँयें (बैठे हुए द्वितीय पंक्ति): डॉ. वीरेन्द्र कुमार, श्री रविकान्त गौड़, डॉ. एस. के. सिंह, श्री अमित कुमार सोम, श्री सचिन अग्रवाल, श्री सत्य प्रकाश गौतम, श्री देव स्वरूय गौतम, श्री गुरूदत्त शर्मा, डॉ. राजीव गोयल, डॉ. विशाल शर्मा

बाँये से दाँयें (खड़े हुए) : श्री सत्यपाल सिंह, श्री चन्द्र प्रकाश, श्री गौरव जैन, श्री अनुज कुमार बंसल, श्री ऋषभ वार्ष्णेय, कु. देवश्री, श्रीमती ममता शर्मा, कु. कुशमाण्डे आर्य

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (वित्त पोषित)

बाँये से दाँयें (बैठे हुए) : श्री पंकज शर्मा, श्री सुनील कुमार, श्री के. के. श्रीवास्तव, डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य), श्री सुनील कुमार गर्ग (कार्यालय अधीक्षक), श्री अनिल कुमार अग्रवाल, श्री लक्ष्मण सिंह

बाँये से दाँयें (खड़े हुए) : श्री सुनील कुमार निर्मल, श्री कपूर चन्द्र, श्री गजेन्द्र सिंह, श्री अमरनाथ राय, श्री नारायण देव मिश्रा, श्री महेश चन्द्र, श्री डम्बर सिंह, श्रीमती पार्वती

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (स्ववित्त पोषित)

बाँये से दाँयें (बैठे हुए) : श्री प्रमोद कुमार, श्री दीपक कुमार शर्मा, श्री सुरेश रावत, डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य), श्री विजय कुमार शर्मा, श्री जितेन्द्र कुमार, श्री चन्द्र पाल सिंह

बाँये से दाँयें (खड़े हुए) : श्री सुन्दर पाल, श्री मान सिंह, श्री अंकुर, श्री साहब सिंह, श्री नितिन कुमार, श्री विजय कुमार, श्री रामबाबू, श्री जगदीश, श्री सोनू कुमार, श्री सुबोध कुमार, श्री नेत्रपाल सिंह, श्री योगेश कुमार

14 जनवरी 2017
अनूपशहर

अनुक्रमणिका

1.	प्रगति आख्या (2017-18)	डॉ. उमेश कुमार झा, प्राचार्य	3
2.	मेरी नजर में मेरा कॉलेज	विपनेश सिंह, बी.एड. प्रथम वर्ष	5
3.	सफलता के सबक	डॉ. पी.के. त्यागी, विभागाध्यक्ष, सांख्यिकी विभाग	6
4.	भारतीय शिक्षाः नवीन युग का प्रारम्भ	डॉ. मुकेश गुप्ता, पूर्व प्राचार्य	8
5.	भविष्य के ऊर्जा स्रोत	डॉ. मुनेश कुमार, विभागाध्यक्ष, रसायन विभाग	9
6.	मजबूत सपना	डॉ. भुवनेश कुमार, विभागाध्यक्ष, वणिज्य विभाग	11
7.	वृक्षों को बचाएं	सुनील कुमार गर्ग, कार्यालय अधीक्षक	12
8.	आर्थिक सुधारों का नतीजा	डॉ. वी. के. गोयल, विभागाध्यक्ष, भौतिकी विभाग	14
9.	आत्म ज्ञान की प्राप्ति	लक्ष्मण सिंह, कनिष्ठ सहायक	15
10.	हास्य कहानी	लोकेश कुमार, बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष	15
11.	कार्य की गरिमा-श्रम को अपने जीवन में अपनाएँ	साक्षी चौधरी, बी.कॉम. प्रथम वर्ष	16
12.	हँसो हसाँओ	श्रीकान्त शर्मा, बी.एस-सी. तृतीय वर्ष	16
13.	देश भक्तों को नमन	ऊषा कुशवाहा, बी. कॉम., तृतीय वर्ष	17
14.	हे शिक्षक तुम्हे नमन	रुबी कुमारी, बी.ए. द्वितीय वर्ष	17
15.	शैक्षिक नेतृत्व	डॉ. आर. के. अग्रवाल, एसोसिएट प्रोफेसर, गणित विभाग	18
16.	पढाई में मन कैसे लगायें	श्री यजवेन्द्र कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग	19
17.	जिन्दगी कैसी होती है	ज्योति कुमारी, बी.कॉम. प्रथम वर्ष	20
18.	शिक्षा	पायल, बी.कॉम. प्रथम वर्ष	20
19.	ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव	सीमान्त कुमार दुबे, विभागाध्यक्ष, शा. शिक्षा विभाग	21
20.	आत्म-परीक्षण	पूनम वर्मा, एम.ए., द्वितीय वर्ष (संस्कृत)	23
21.	हार में एक जीत है	सोनू कुमार, एम.एस-सी. प्रथम वर्ष (रसायन विज्ञान)	23
22.	हमारी राष्ट्र भाषाः हिन्दी	गीता भारद्वाज, एम.ए. (संस्कृत)	24
23.	बिटिया	प्रियंका रानी, बी.एड. द्वितीय वर्ष	24
24.	राष्ट्र ध्वज का मतलब	अनिल अग्रवाल, नैत्यिक लिपिक	25
25.	कॉलेज है आदर्श हमारा	गौरव कौशिक, बी.सी.ए. (तृतीय वर्ष)	26
26.	वाणिज्य और कैरियर	डॉ. तरुण बाबू, असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय	27
27.	गुरू का महत्व	शीतल, बी. कॉम प्रथम वर्ष	28
28.	जहरीली हवा के खिलाफ	पंकज शर्मा, लैब असिस्टेंट, भौतिकी विभाग	29
29	सुविचार	विशाल शर्मा, बी.सी.ए. तृतीय वर्ष	30
30	उद्यमिता गिरें, उठें और फिर चलें	काजल चौधरी, बी.कॉम. प्रथम वर्ष	31
31.	आखिर क्यों?	प्रियंका शर्मा, एम.एस.सी. द्वितीय वर्ष (भौतिकी)	32
32.	अनमोल वचन	सचिन चौधरी, बी.कॉम, प्रथम वर्ष	32
33.	दोस्ती	शोभा शर्मा, बी. कॉम., प्रथम वर्ष	33
34.	हमारे जीवन में विद्या का महत्व!	तमन्ना चौधरी, बी.कॉम. प्रथम वर्ष	33
35.	अपने व्यक्तित्व को बदलिये	दीपक शर्मा, लेखाकार	34
36.	भारतीय विधि और मानवाधिकार	जितेन्द्र कुमार, कनिष्ठ सहायक	35
37.	वैदिक वाङमय और पर्यावरण संस्कृति	कुशमाण्डे आर्य, अंशकालिक प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग	37
38.	तकनीक से पस्त होती दुनिया	डॉ. विशाल शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग	38
39.	मृत्यु पर विजय की अमिट गाथा	सत्यपाल सिंह लोधी, अंशकालिक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग	39

40	पुस्तकालय	के.के. श्रीवास्तव, पुस्तकालय प्रभारी	41
41.	चार पत्नियाँ	कु. काजल, बी.काम. द्वितीय वर्ष	42
42.	मेहनत का फल	निक्की कुमारी, बी.कॉम. प्रथम वर्ष	42
43.	नौकरी	कु. अंजू, बी.सी.ए. तृतीय वर्ष	43
44.	जिंदगी	लोकेश कुमार, बी.काम. द्वितीय वर्ष	43
45.	माता-पिता एक वृक्ष की तरह	शक्ति सिंह, बी.कॉम. तृतीय वर्ष	44
46.	गंगा प्रदुषण-कारण एव निवारण	नीरज भारती, बी.कॉम. तृतीय वर्ष	45
47.	वो वीर	काजल तौमर, बी.कॉम. प्रथम वर्ष	45
48.	जौं के दाने	सुरभि शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष	46
49.	गुरू का ज्ञान	पिंकी, बी.ए. प्रथम वर्ष	46
50.	धैर्यबान बनो	देवेश तौमर, बी.काम. प्रथम वर्ष	47
51.	चुटकुले	रितु चौधरी, बी.एस-सी. तृतीय वर्ष	48
52.	विचार!	तुलसी लोधी, बी.ए. प्रथम वर्ष	48
53.	दूध और पानी की मित्रता (संकलित)	प्रदीप भारती, एम.ए. द्वितीय	49
54.	कठिनाइयां समझना जरूरी है	गौरव कुमार गौतम, एम.ए. द्वितीय वर्ष (संस्कृत)	50
55.	क्रोध का फल	कु.सोनम, बी.ए. प्रथम वर्ष	51
56.	यह भी जानिए	दीक्षा वार्ष्णेय, बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष	51
57.	ऐ मेरे स्कूल मुझे, जरा फिर से बुलाना	तान्या शर्मा, बी.एस-सी. तृतीय वर्ष	52
58.	एक चिड़िया	शीतल चौधरी, बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष	53
59.	सबसे सच्चा रिश्ता-दोस्ती (संकलित)	रिंकी राघव, बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष	53
60.	क्या भारत में वित्त पोषण हासिल करने में वित्तीय..	सुरभि शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष	54
61.	आशा की मोमबत्ती	प्रीती पाल, बी.एड प्रथम वर्ष	57
62.	अच्छे विचार	राजकुमार, बी.एड. प्रथम वर्ष	58
63.	हमारा कॉलेज	शहजाद अली, बी.एड. प्रथम वर्ष	58
64.	मेरा कॉलिज महान	शैलेन्द्र कान्त, बी.एड प्रथम वर्ष	59
65.	कोशिश	पूनम, बी.एड. प्रथम वर्ष	59
66.	क्या भारत में वित्त पोषण हासिल ...	सुरभि शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष	60
67.	History of Mathematics in India	Gurudatt Sharma, Assistant Professor, B.Ed. Dept.	60
68.	Educational Technology: Importance & Utility	Dr. Sudha Upadhyaya, Assistant Prof., B.Ed. Dept.	61
69.	Importance of Information Technology for Teacher..	Dr. K.C. Gaur, Head of the Dept., B.Ed. Dept.	63
70.	Effective teaching & Role of media	Dr. Sunita Gaur, Assistant Prof., B.Ed. Dept.	65
71.	A Teacher	Pooja Chaudhary, B. Com. I	66
72.	Role of Computer	Sakshi Agrawal, BCA I	67
73.	What is the meaning of commerce?	Deepika, B.com. I	68
74.	Make me a Promise Dad	Gourav Kaushik, B.C.A., III	69
75.	Happiness	Ginni Sharma, B.Com Ist year	69
76.	The Smog: A State of Air Pollution	Dr. S. K. Singh, Assistant Prof., B.Ed. Department	70
77.	Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana (PMKVY)	Gaurav Kumar, B.Ed. I	71
78.	Tourism Circuits of Uttar Pradesh	Dr. (Smt.) Chandrawati, Associate Prof., Chem. Dept.	73
79.	Smart City Project	Sachin Agarwal, Assistant Prof., BCA Department	77
80.	My Teacher My Guru	Neha, B. Com., I	78
81.	Digital India	Pankaj Kumar Gupta, Head of the Dept., BCA Dept.	79
82.	Internet Banking	Mayank Sharma, Assistant Professor, BCA Dept.	80
83.	Uses of Computers in the Field of Education	Amit Soam, Assistant Professor, BCA Department	81
84.	A Brief Summary of the English Language	Dev Swaroop Gautam, Assistant Prof., BCA Dept.	82
82.	महाविद्यालय परिवार		84
83.	विभिन्न समितियाँ		87

प्रगति आख्या (2016-17)

डॉ. उमेश कुमार झा, प्राचार्य

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर अपनी स्थापना के 52 वर्ष पूर्ण कर चुका है। सन् 1965 से 2017 तक की इस अवधि में महाविद्यालय ने उत्तरोतर संरचनात्मक एवं गुणात्मक प्रगति की है। वर्तमान समय में चार अनुदानित एवं चार स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं, जिनमें कुल 1565 छात्र-छात्रायें अध्ययनरत हैं। शैक्षणिक उपलब्धियों एवं अनुशासन की दृष्टि से यह महाविद्यालय चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

01. सत्र 2016-2017 का परीक्षाफल विगत वर्ष की भाँति उत्तम रहा है। महाविद्यालय में उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार परीक्षाफल निम्न प्रकार है–

पाठ्यक्रम	**परीक्षाफल (उत्तीर्ण प्रतिशत)**
बी.ए.	92.06%
बी.एस-सी.	100%
बी.कॉम.	96.29%
बी.सी.ए.	93.44%
एम.ए. (संस्कृत)	85.18%
एम.एस-सी. (भौतिकी)	62.50%
एम.एस-सी. (रसायन)	64.70%
बी.एड.	96.61%

02. प्रबन्ध समिति द्वारा महाविद्यालय में सभी कक्षायें सुचारू रूप से चलाने हेतु विभिन्न विषयों में शासन स्तर से शिक्षकों के रिक्त पदों के सापेक्ष अंशकालिक शिक्षकों (ट्यूटर) की व्यवस्था की गयी है।
03. महाविद्यालय में रेडियो फ्रिकवेंसी लिंक द्वारा 4G की गति से सभी विभागों, पुस्तकालयों तथा कार्यालयों मे इंटरनेट की सुविधा प्रदान की गयी है।
04. "आन्तरिक गुणवत्ता सुनश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC)" के तत्वाधान में शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों की गुणवत्ता संवर्धन का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है।
05. महाविद्यालय में दिनांक 04-05 मार्च 2017 को "भूमण्डलीकरण के युग में मानवाधिकारों की सुरक्षा : चुनौतियां एवं अवसर" विषय पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया।
06. अनूपशहर के वरिष्ठ नागरिकों हेतु दिनांक 20.06.2017 से 19.10.2017 तक एक विशेष योग शिविर का आयोजन किया गया।
07. दिनांक 21.06.2017 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा कर्मचारियों को योगाअभ्यास का प्रशिक्षण दिया गया।
08. मानव संसाधन मंत्रालय भारत सरकार के निर्देशानुसार "एक दीप शहीदों के नाम" कार्यक्रम का आयोजन कर स्वतत्रंता सेनानियों को श्रद्धांजली अर्पित की गयी।
09. महाविद्यालय में राष्ट्रीय पर्व के रूप में 15 अगस्त 2017 को स्वतंत्रता दिवस तथा 02 अक्टूबर 2017 को गांधी जयंती उत्साह पूर्वक मनायी गयी।
10. महाविद्यालय में वर्ष भर अनेक महापुरूषों की जयंती तथा राष्ट्रीय महत्व के दिवसों जैसे "राष्ट्रीय खेल दिवस", "राष्ट्रीय शिक्षक दिवस", "राष्ट्रीय हिन्दी दिवस", "राष्ट्रीय शिक्षा

दिवस", "राष्ट्रीय गणित दिवस", "राष्ट्रीय युवा दिवस" तथा "राष्ट्रीय मतदाता दिवस" पर विभिन्न कार्यक्रमों को आयोजित कर मनाया गया।

11. मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार "विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द जी के भाषण के 125 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य" में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के उद्‌बोधन का सजीव प्रसारण किया गया।
12. महाविद्यालय की एन.सी.सी. इकाई एवं एन.एस.एस. इकाई के विद्यार्थियों को वर्षभर प्रशिक्षण दिया गया। अनेक विद्यार्थियों ने एन.सी.सी. के 'बी' एवं 'सी' प्रमाण पत्र प्राप्त करने हेतु विशेष शिविरों में प्रतिभाग किया। दिनांक 28.09.2017 को एन.सी.सी. कैडेट्स ने "स्वच्छ भारत अभियान" के अन्तर्गत रैली निकाल कर जन सामान्य को जागरूक किया। दिनांक 06.12.2017 को एन.सी.सी. कैडेट्स ने गंगा घाटों की साफ सफाई कर जनसामान्य को स्वच्छता हेतु प्रेरित किया।
13. 31 अक्टूबर 2017 को सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयंती को राष्ट्रीय अंखड़ता दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर "एकता के लिये दौड़" तथा सरदार पटेल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।
14. महाविद्यालय में 07 एंव 08 नवंबर 2017 को अंतर्विभागीय क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में बी.ए. की टीम विजयी रही ।
15. महाविद्यालय में 15 नंम्बर 2017 को बुलन्दशहर चैरिटेबल ब्लड बैंक के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने 42 यूनिट रक्तदान किया।
16. महाविद्यालय में वार्षिक "खेलकूद प्रतियोगिता" का आयोजन दिनांक 22 एवं 23 नवम्बर 2017 को किया गया, जिसमें अनेक छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। दिनांक 13 एवं 14 नवम्बर 2017 को एम.एम.एच. महाविद्यालय गाजियाबाद में आयोजित अंर्तमहाविद्यालयी शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता के 75 कि.ग्रा. वर्ग में बी.सी.ए. के छात्र गौरव कुमार ने विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया, गौरव का चयन वि.वि. की टीम ने अखिल भारतीय अंतरविश्वविद्यालयी प्रतियोगिता के लिये किया गया। शक्ति उत्तोलन प्रतियोगिता के 74 कि.ग्रा. वर्ग में बी.एस-सी. के छात्र करन कुमार ने विश्वविद्यालय में तीसरा स्थान प्राप्त किया।
17. पं. दीनदयाल उपाध्याय जन्मशताब्दी वर्ष के अन्तर्गत दिनांक 25-11-2017 को एक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 300 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।
18. उत्तर प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार कोतवाली प्रभारी, अनूपशहर के नेतृत्व में दिनांक 08.12.2017 महिला सुरक्षा विषय पर एक कार्यशाला आयोजित कर छात्राओं को आत्मरक्षा के कौशल सिखाये गए।
19. भारत सरकार के निर्देशानुसार दिनांक 09.12.2017 को मानवाधिकार दिवस की पूर्व संध्या पर प्राचार्य, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने मानवाधिकारों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु शपथ ग्रहण की।
20. दिनांक 15.12.2017 को पं. दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष के अंतर्गत वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम का रंगारंग आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं ने विभिन्न विषयों जैसे बेटी बचाओं बेटी पढाओं, पर्यावरण संरक्षण आदि पर अपनी प्रस्तुति दी ।
21. दिनांक 18.12.2017 से 23.12.2017 तक छः दिवसीय "स्काउट एवं गाइड शिविर" का आयोजन किया गया जिसमें बी.एड. प्रशिक्षुओं ने व्यक्तित्व एवं सामाजिक विकास की अनेक विधाओं को सीखा तथा विभिन्न सामाजिक बुराईयों जैसे-कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, अशिक्षा आदि को मिटाने हेतु एक जनजागरण रैली भी निकाली ।
22. भारत सरकार के निर्देशानुसार दिनांक 22.12.2017 को स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय परिसर की साफ सफाई की गयी तथा

बी.ए. की छात्रा सुरभि शर्मा को अभियान की नायिका तथा बी.कॉम. के छात्र राहुल शर्मा को नायक चुना गया।

23. दिनांक 20.01.2018 को मतदाता जागरूकता विषय पर श्री सदानन्द गुप्ता उपजिलाधिकारी अनूपशहर के नेतृत्व में छात्र-छात्राओं द्वारा रैली निकाली गयी। दिनांक 25.1.2018 को राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर श्री जीत लाल सैनी, तहसीलदार अनुपशहर की उपस्थिति में प्राचार्य, शिक्षकों कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने स्वस्थ लोकतंत्र हेतु निष्पक्ष मतदान की शपथ ग्रहण की।
24. दिनांक 26.01.2018 को महाविद्यालय में "गणतंत्र दिवस" समारोह धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय स्तर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा प्रत्येक कक्षा में द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।
25. दिनांक 21.1.2018 को उत्तरप्रदेश शासन के निर्देशानुसार संत रविदास जयंती पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।
26. दिनांक 14 एवं 15 फरवरी 2018 को वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ-साथ प्रत्येक कक्षा में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया तथा महाविद्यालय की पत्रिका "ऋतम्भरा के इक्कीसवें अंक" का विमोचन किया गया।
27. दिनांक 24 एवं 25 फरवरी 2018 को महाविद्यालय में उच्च शिक्षा की समसामायिक समस्याओं एवं उनके निवारण विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रस्तावित है।

श्रद्धेय श्री जयप्रकाश जी गौड़ अध्यक्ष, ऐंग्लो वैदिक शिक्षा समिति के नेतृत्व में महाविद्यालय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। ❑

मेरी नजर में मेरा कॉलेज

विपनेश सिंह, बी.एड. प्रथम वर्ष

संगमरमर की दीवारों का, एक अनोखा भवन बनाया है
गंगा किनारे अनूपशहर में, लाकर इसे बसाया है।
एक अभियान रखा है मन में हम सब इसके छात्र बने।
गुरू-सीख नीति पे चलके, पढ़ लिखकर इन्सान बने।
डिग्री देकर झोली भरकर, आगे हमें बढ़ाया है।
गंगा किनारे अनूपशहर में, लाकर इसे बसाया है।
ऐसे काबिल प्रोफेसरों का, हरदम हम गुणगान करें,
अध्यापक व लिपिक गणों के, चरणों में हम ध्यान करें।
डी.पी.बीएस. कॉलेज ने हम सबका मान बढ़ाया है।
गंगा किनारे अनूपशहर में, लाकर इसे बसाया है।
अगर हमारे कॉलेज में अब, एम.एड. भी आ जाये
फिर सोचो इस कॉलिज से, भला कोई छात्र क्यों जाए।
शाहू तूने कॉलेज खातिर, सबका अलख जगाया है,
गंगा किनारे अनूपशहर में, लाकर इसे बसाया है।
संगमरमर की दीवारों का, एक अनोखा भवन बनाया है
गंगा किनारे अनूपशहर में, लाकर इसे बसाया है।

True knowledge is The Best Teacher of life

सफलता के सबक

डॉ. पी.के. त्यागी, विभागाध्यक्ष, सांख्यिकी विभाग

अपने पैरों पर खड़ा होना और कैरियर की राह पर बढ़ना कोई मामूली बात नहीं है। तुम चाहे कैरियर बदल रहे हो या यूनिवर्सिटी वापस अटेंड कर रहे हो या अपने आठ से दस घंटे के जॉब को छोड़कर बिजनेस की शुरुआत कर रहे हो, ये सब बहुत हिम्मत का काम है।

लेकिन सिर्फ हौसला ही तुमको बहुत आगे नहीं ले जा सकता। हिम्मत जुटाने के बाद जब तुम अगली स्टेप पर छलांग मारते हो तो अपने रास्ते का बमुश्किल 5% रास्ता ही तय कर चुके होते हो। अभी तुम्हारी मंजिल कोसों दूर है और अपने सबसे खौफनाक डरों से तुम्हारा सामना होना बाकी है। ये डर वे हैं जो तुम्हें पहला कदम उठाने से बहुत देर तक रोकते रहे। मैं यह मानकर चल रहा हूं कि तुम मेरी तरह हो और तुम्हारे पास कोई अनुभवी परामर्शदाता नहीं है या तुम्हारे कंधे पर संपन्न पिता का हाथ नहीं है जो तुम्हें मार्ग दिखाए और अपने कैरियर को संभालने के लिए हर जरूरी साधन उपलब्ध कराए।

1. **आत्मविश्वास सबसे पहली जरूरत है**

सफल लोगों में एक अलग ही आत्मविश्वास झलकता है- जाहिर है कि वे खुद में और जो कुछ भी वे करते हैं उसमें यकीन करते हैं। यह आत्मविश्वास उनमें सफल होने के बाद नहीं आया। यह उनमें पहले से ही था।

आत्मविश्वास सफल कैरियर को बनाने वाला सबसे जरूरी बिल्डिंग ब्लॉक है, और आत्मविश्वास को सजोने पर तुम उन जगहों पर पहुंच सकते हो जिनकी संभावनाओं के बारे में तुमने कभी सोचा भी न होगा। कोई और नहीं बल्कि यह खुद तुम ही हो जो अपनी महत्वाकांक्षाओं को प्राप्त करने से खुद को रोक रहे हो। यही वह समय है जब तुम्हें खुद पर संदेह करना बंद कर देना चाहिए।

2. **तुम वह जिंदगी जी रहे हैं जो तुमने खुद बनाई है**

तुम परिस्तिथियों के शिकार नहीं हो। कोई भी तुम्हें तुम्हारी वैल्यूज़ और महत्वाकांक्षाओं के विरूद्ध जाकर निर्णय लेने और कार्यवाही करने पर मजबूर नहीं कर सकता। आज तुम जिन परिस्थितियों में जी रहे हो वे तुमने खुद ही पैदा की हैं। इसी तरह तुम्हारा भविष्य भी पूरी तरह तुम पर ही निर्भर करता है। यदि तुम खुद को कहीं फंसा हुआ पाते हो तो ऐसा बहुत हद तक इसलिए है कि तुम अपने लक्ष्य को प्रास करने और अपने सपनों को पूरा करने के लिए जरूरी रिस्क नहीं उठा पा रहे हो।

जब एक्शन लेने का वक्त करीब आ जाए तब यह याद रखना कि उस सीढ़ी के निचले पायदान पर होना बेहतर है जिसे आप चढ़ना चाहते हो न कि उस सीढ़ी के ऊपरी पायदान पर होना जिस पर से तुम कूद जाना चाहते हो।

3. **बिजी होने का मतलब यह नहीं कि तुम प्रोडक्टिव भी हो**

अपने आसपास मौजूद लोगों को देखो। वे सभी कितने बिजी होते हैं - मीटिंग-दर-मीटिंग भागते रहते हैं और ई-मेल्स भेजते रहते हैं। लेकिन क्या उनमें से ज्यादातर लोग वाकई बहुत प्रोडक्टिव काम कर रहे हैं, क्या वे वाकई ऊंचे लेवल्स पर सफलता पा रहे हैं?

सफलता भागमभाग और कुछ-न-कुछ करते रहने से नहीं आती। यह फोकस से आती है। सफलता यह सुनिश्चित करने से आती है कि तुमने अपने समय का उपयोग कितनी कुशलता पूर्वक और कितना प्रोडक्टिवली किया। तुम्हें भी काम करने के लिए उतने ही घंटे मिलते हैं जितने औरों के पास हैं। अपने समय का बेहतर उपयोग करो। तुम्हारी मेहनत को तुम्हारी कोशिशों से नहीं बल्कि रिजल्ट से आंका जाएगा। अपनी कोशिशों को मौजूदा काम पर केंद्रित रखो और बेहतर परिणाम पाओ।

4. **तुम उतने ही अच्छे हो सकते हैं जिनके साथ तुम जुड़े हो**
तुम्हें उन व्यक्तियों के साथ संबंधित होना चाहिए जो तुम्हें प्रेरित करें, और जो दिल से तुमको बेहतर होते हुए देखना चाहते हों। शायद तुम भी ऐसा ही करते हो। लेकिन उन लोगों के बारे में क्या जो तुम्हें पीछे धकेल देते हैं? ऐसे लोगों को तुमने अपनी जिंदगी का हिस्सा क्यों बनाया हुआ है? तुम्हें कमतरी का, बेचैनी का, और नाउम्मीदी का अहसास कराने वाले लोग तुम्हारा कीमती समय बर्बाद कर रहे हैं और शायद तुम्हें भी अपने जैसा ही बना रहे हैं। जिंदगी इतनी बड़ी नहीं है कि तुम ऐसे लोगों के विचारों का बोझ ढोते फिरे। उनसे अपना नाता तोड़ लो।

5. **दिल 'नहीं' कहता हो तो "हां" मत कहो**
विश्व की टॉप यूनिवर्सिटी (University of California in San Francisco) में हुई रिसर्च में यह पता चला है कि जिन लोगों को 'नहीं' कहने में बहुत मुश्किल होती है उन्हें तनाव, निष्क्रियता, और डिप्रेशन से जूझना पड़ सकता है, और ये सारी बातें कैरियर को ग्रोथ देने में बहुत बड़ी बाधा हैं. 'नहीं' कहना बहुत से लोगों के लिए बहुत बड़ा चैलेंज है। 'नहीं' बहुत शक्तिशाली शब्द है और आपको इस शब्द का उपयोग करने से झिझकना नहीं चाहिए। जब 'नहीं' कहने का वक्त करीब आ जाए तो आप गोल-मोल बातें जैसे 'मुझे नहीं लगता कि मैं... 'या' मैं इस बारे में सुनिश्चित नहीं हूँ' कोई नया कमिटमेंट करने के दौरान 'नहीं' कह सकने की हिम्मत से आपको मौजूदा कमिटमेंट्स को पूरा करने में मदद मिलती है और यह बात आपको सफलता के करीब पहुंचने के बेहतर मौके उपलब्ध कराती है।

6. **खुद से निगेटिव बातें करना बंद करो**
जब तुम अपने कैरियर को नई दिशा दे रहे होगे तो तुम्हें चीयरलीड करने वाला शायद कोई नहीं होगा। ऐसे में खुद पर कई तरह के संदेह होने लगते हैं। तुम्हारे निगेटिव विचारों को तुमसे ही ताकत मिलती है। तुम उन पर जितना फोकस करोगे वे उतने ही प्रबल होते जाएंगे। तुम्हारे ज्यादातर निगेटिव विचार सिर्फ विचार ही हैं, वे फैक्ट्स नहीं है। जब तुम्हें अपने निगेटिव विचारों और निराशाजनक बातों पर यकीन होने लगे तो एक काम करो- तुम उन्हें कहीं लिख लो। तुम जो कुछ भी कर रहे हो उसे वहीं रोक दो और विचारों को लिख लो। इस तरह तुम्हारे निराशाजनक विचारों की रफ्तार पर विराम लगेगा और तुम चीजों को उनके वास्तविक रूप में ज्यादा तार्किक होकर देख पाओगे और वस्तुस्थिति को बेहतर समझ पाओगे। ❑

भारतीय शिक्षाः नवीन युग का प्रारम्भ

डॉ. मुकेश गुप्ता, पूर्व प्राचार्य

देश में कुछ यूरोपीय कम्पनियों जैसे– ईस्ट इण्डिया कम्पनी, पुर्तगाली तथा फ्रांसिसी ईस्ट इण्डिया कम्पनियों का राजनीतिक सामाजिक तथा सास्कृतिक प्रभाव निरन्तर बढ़ता ही जा रहा था। इसके साथ-साथ इस दिशा में इन देशों की मिशनरियों की गतिविधियों का बढ़ना भी आरम्भ हो गया था। यहाँ सबसे पहले आने वाले यूरोपीय पुर्तगाली थे, जिन्होंने यहाँ अपने व्यापार में वृद्धि करने के साथ-साथ लोगों के शैक्षिक तथा सामाजिक साँस्कृतिक स्तर को ऊपर उठाने के लिए ही मुख्य रूप से ईसाई धर्म का भी प्रचार-प्रसार करना आरम्भ किया। विदेशी मिशनरियों के प्रभाव के कारण विद्यालयों में छपी पुस्तकों का प्रयोग आरम्भ हुआ। फ्रेंच मिशनरियों द्वारा भारतीय शिक्षकों को ही प्राथमिक शिक्षा कार्य के लिए नियुक्त किया गया तथा इस कदम ने अपने इस प्रयास में पर्याप्त संख्या में छात्र-छात्राओं को शिक्षा की ओर आकर्षित किया।

इन विभिन्न मिशनरियों का उद्देश्य निश्चित रूप से इस काल में भारत वर्ष में ईसाई धर्म का प्रचार व प्रसार करना ही था परन्तु इसके साथ-साथ यहाँ शिक्षा के स्तर में वृद्धि भी देखने में आयी। इस प्रकार यहाँ धर्म-परिवर्तन के प्रमुख कार्य के साथ-साथ शिक्षा सम्बन्धी कार्य में भी प्रगति होती चली गयी। इस प्रकार भारत वर्ष में स्वदेशी आंदोलन के पूर्वकाल में इन मिशनरियों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में स्पष्ट दिशा देखने में पर्याप्त प्रोत्साहन मिला। इससे भारतीय जनता को पाश्चात्य संस्कृति व आचार व्यवहार का भी नवीनतम ज्ञान प्राप्त हुआ। भारतीय समाज के निम्न स्तर के लोगों का धर्म-परिवर्तन के साथ सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर भी सुधार हुआ तथा भविष्य में इस कार्य को पूरा करने के लिए नवीन विद्यालयों की स्थापना के लिए भी दरवाजे खुल गये।

यह तथ्य उल्लिखित करना आवश्यक है कि इस काल में मिशनरियों के क्रिया-कलापों का प्रभाव निर्वाध रूप से बढ़ रहा था। इसके परिणामस्वरूप हिन्दुओं की पाठशालाओं व मुसलमानों के मदरसों के प्रति शासक वर्ग की व्यवहार उदासीनतापूर्ण हो चली थी।

जिन विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा का थोड़ा भी ज्ञान प्राप्त हो जाता था उन्हें प्रशासन-तन्त्र में लाभप्रद पदों पर कार्य मिल जाता था। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भिक काल में अंग्रेजी प्रशासन ने शैक्षणिक कार्यभार को अपने हाथों में ले लिया जिसके कारण प्रमुख रूप से अंग्रेजी–समर्थक शिक्षा प्रणाली का अभ्युदय हुआ, परन्तु इसी बीच भारत वर्ष में राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत स्वदेशी आन्दोलन का भी सूत्रपात हो गया। इसके उदय के कारण पाश्चात्य शिक्षा के साथ-साथ भारतीय शैक्षाणिक प्रगति का भी एक नवीन राष्ट्रीय स्वरूप विकसित होता हुआ दिखाई देने लगा। ❑

कर्म की महत्ता

छिलने से लकड़ी का सौन्दर्य बढ़ता है।
खिलने से फूलों का सौन्दर्य बढ़ता है,
सौन्दर्य बढ़ाने के कितने भी साधन ढूँढो,
मगर कर्म से ही मनुष्य का सौन्दर्य बढ़ता है।

अंकों का चमत्कार

$(11)^2 = 121$
$(111)^2 = 12321$
$(1111)^2 = 1234321$
$(11111)^2 = 123454321$
$(111111)^2 = 12345654321$
$(1111111)^2 = 1234567654321$

भविष्य के ऊर्जा स्रोत

डॉ. मुनेश कुमार, विभागाध्यक्ष, रसायन विभाग

हम सभी जानते है कि वर्तमान मे ऊर्जा के प्राथमिक स्रोत का सीमित भंडार है। वर्तमान ऊर्जा स्रोत जीवाश्म आधारित है। कभी ना कभी निकट भविष्य मे पृथ्वी के तेल भंडार समाप्त हो जायेंगे और उस समय हम ऊर्जा के वैकल्पिक संसाधनो पर पूर्णतया निर्भर हो जायेंगे। बहुत से देशो ने पारंपरिक सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा तथा जल ऊर्जा को अपना लिया है, कुछ देश इससे अधिक साफ-सुथरी और अधिक कार्यकुशल ऊर्जा स्रोत की खोज मे लगे हुये है। इस लेख मे हम ऐसे ही कुछ वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की चर्चा करेंगे।

अंतरिक्ष आधारित सौर ऊर्जा– पृथ्वी तक पहुंचने वाली सौर ऊर्जा का 50-60% भाग वायुमंडल द्वारा रोक दिया जाता है। अंतरिक्ष आधारित सौर ऊर्जा संयत्र मे उपग्रहों के समूहो के विशाल दर्पणो को अंतरिक्ष मे फैलाया जायेगा जोकि इस सौर विकिरण को सौर पैनलो पर केंद्रित करेंगे। ये सौर पैनल सौर ऊर्जा को माइक्रोवेव तरंगो मे परिवर्तित करेंगे, इन माइक्रोवेव तरंगो को पृथ्वी पर ऊर्जा ग्रहण करने वाले संयत्रों पर बीम किया जायेगा, इसमे यह ध्यान रखना होगा कि इस संवहन के दौरान न्यूनतम ऊर्जा ह्रास हो। मार्च 1915 मे जापान एअरोस्पेस एक्स्प्लोरेशन एजेंसी(JAXA) ने घोषणा की कि उन्होंने 1.8 किलोवाट ऊर्जा को माइक्रोवेव मे परिवर्तित कर बेतार रूप से 50 मीटर तक बीम करने में सफलता पायी है। यह प्रयोग दर्शाता है कि यह अवधारणा प्रायोगिक है।

मानव शक्ति– कुछ विशेषज्ञ मानते है कि ऊर्जा उत्पन्न करने का सबसे सरल तरीका मानव शरीर ही है। वर्तमान उपकरण पुराने उपकरणो की तुलना मे कम ऊर्जा खपत करते है, मानव शरीर से केवल एक माइक्रोवाट ऊर्जा का उत्पादन बहुत से छोटे इलेक्ट्रानिक उपकरणों के लिये पर्याप्त होगा। ऊर्जा का यह उत्पादन मानव शरीर की गतिविधियों के द्वारा होगा, हमें केवल एक ऐसी प्रणाली पहननी होगी जो हमारे शरीर से उत्पन्न ऊर्जा को जमा करेगी। ब्रिटेन के शोधकर्ताओं ने घुटनो पर लगाने वाला एक ऐसा उपकरण बनाया है जो चलते समय इलेक्ट्रान जमा करता है। जैसे ही पहनने वाले का घुटना मुड़ता है इस उपकरण की चार धातुई पट्टीयाँ किसी गिटार के तार जैसे झंकृत होती है और विद्युत निर्माण करती है।

ज्वारीय ऊर्जा– लहरों से उत्पन्न ऊर्जा तकनीकी रूप से वायु ऊर्जा है क्योंकि लहरों की उत्पति सागरों के उपर से बहते वायु प्रवाह से होती है। इस ऊर्जा को सतह पर, सतह के नीचे, सागर किनारे, सागर में तट के समीप या सागर में तट से दूर संग्रहीत किया जा सकता है। तरंग ऊर्जा को किलोवाट प्रति मीटर सागरीय तट मे मापा जाता है। संयुक्त राज्य अमरीका के सागरी तटो पर प्रति वर्ष 252 अरब किलोवाट/घंटा ऊर्जा उत्पन्न करने की क्षमता है। पांच देशो के पास ज्वारीय ऊर्जा उत्पन्न करने वाले विद्युत फार्म है जिसमे पुर्तगाल के पास विश्व का सबसे पहला व्यवसायिक ऊर्जा फार्म है जिसकी स्थापना 2008 मे हुयी थी। इसकी क्षमता 2.25 मेगावाट है।

हाइड्रोजन ऊर्जा– एक रंगहीन, गंधहीन गैस के रूप मे ब्रह्मांड के कुल द्रव्यमान का 74% भाग हाइड्रोजन से बना हुआ है। पृथ्वी पर यह गैस आक्सीजन, कार्बन और नाइट्रोजन के यौगिक के रूप मे ही पायी जाती है। हाइड्रोजन के ईंधन के रूप मे प्रयोग करने के लिये इसे अन्य तत्वो से अलग करना होगा। मुक्त हाइड्रोजन के दहन से अत्याधिक ऊर्जा मुक्त होती है और कोई प्रदुषण नही होता है। हाइड्रोजन से विद्युत बनाने वाले ईंधन सैलों का प्रयोग वाहनों, विमानों, घरों और इमारतों में वर्तमान में हो रहा है। इस तकनीक के विकास के लिये टोयोटा, होंडा और हुडंई जैसी वाहन निर्माता कार्यरत है।

लावा ऊर्जा– पृथ्वी के गर्भ मे उपलब्ध उष्ण लावा के प्रयोग

से भाप उत्पन्न कर उससे टरबाइन द्वारा विद्युत उत्पन्न की जा सकती है। 2010 मे आइसलैंड , फिलिपन्स तथा एक सल्वाडोर मे भूगर्भीय उष्मा से 10,700 मेगावाट ऊर्जा उत्पन्न हुई थी। इस अवधारणा पर ध्यान 2008 मे आइसलैंड डीप ड्रिलिन्ग प्रोजेक्ट द्वारा संयोगवश एक कम गहराई वाले लावा क्षेत्र के पाये जाने से गया और इन्होने इसकी उष्मा से ऊर्जा निर्माण का निर्णय लिया। आइसलैंड का IDDP1 लावा उष्मा से विद्युत उत्पन्न करने वाला पहला भूगर्भिय उष्मा विद्युत संयंत्र है जो पिघले लावा से सीधे सीधे उष्मा प्रास करता है। इसकी क्षमता 36 मेगावाट है।

नाभिकीय कचरे से ऊर्जा– नाभिकीय ऊर्जा संयंत्रो में विखंडन प्रक्रिया से ऊर्जा उत्पादन में युरेनियम की कुल मात्रा का केवल 5% ही प्रयुक्त होता है, शेष मात्रा नाभिकीय कचरे के रूप में व्यर्थ पड़ी रहती है। केवल अमरीका के नाभिकीय ऊर्जा संयत्रों में 77,000 टन रेडियो सक्रिय कचरा पड़ा है। 'फ़ास्ट रिएक्टर' नामक एक उपलब्ध तकनीक के प्रयोग से इस 95% नाभिकीय कचरे का ऊर्जा उत्पादन मे प्रयोग किया जा सकता है। हिताची ने Gen-IV ने एक फास्ट रिएक्टर (Power Innovative Small Module) का डिजाइन किया है जो नाभिकीय कचरे से ऊर्जा उत्पन्न कर सकता है। इस रिएक्टर से उत्पन्न कचरे की अर्ध आयु केवल 30 वर्ष होगी जोकि वर्तमान कचरे की हजारो वर्ष की अर्ध आयु से कम है।

अंतः स्थापित सौर ऊर्जा– सौर खिड़कियाँ किसी भी खिड़की या काँच की चादर को फोटोवाल्टिक विद्युत सेल मे बदल सकती है। ये विद्युत सेल प्रकाश के चुने हुये वर्णक्रम को विद्युत मे बदल सकते है। इस चुने हुए वर्णक्रम को हमारी आँखें नही देख सकती है लेकिन हमारे लिये दृश्य प्रकाश उसी तरह पार हो जायेगा, रोशनी उसी तरह रहेगी। इन सौर खिड़कियों का आकार विशाल खिड़कियों से लेकर छोटे घरेलु उपकरण के आकार का हो सकता है। मिशीगन राज्य के शोधकर्ताओ ने पारदर्शी सौर पैनलों को बनाने में सफलता पायी है। अब वे इसके व्यवसायिक उत्पादन के लिये उसके आकार को व्यवसायिक रूप से बड़े और घरेलु उपकरणो के लिये छोटा करने मे लगे हुए हैं। उनका प्रयास है कि इसकी कीमत इतनी हो कि ये सभी की पहुँच में हो।

शैवाल ऊर्जा– शैवाल आश्चर्यजनक रूप से ऊर्जा युक्त तेलों से भरपूर होते है जिन्हे जिनेटीक रूप से परिवर्तित कर सीधे सीधे जैव तेल के उत्पादन के लिये प्रयुक्त कर सकते हैं। उद्योगों से उत्पन्न अपशिष्ट जल जो सामान्य वनस्पति के लिये हानिकारक होता है शैवाल की खेती के लिये उपयोगी पाया गया है। एक एकड़ मे शैवाल द्वारा में 9,000 गैलन जैव ईंधन तेल उत्पन्न किया जा सकता है। अलाबामा अमरीका मे विश्व का सर्वप्रथम शैवाल जैव ईंधन की खेती हो रही है जो नगरी अपशिष्ट जल का प्रयोग करती है। इस प्रक्रिया द्वारा उत्सर्जित साफ जल को खाड़ी मे डाला जाता है।

उड़न पवन ऊर्जा– इस विधि मे पवन चक्कियों को जमीन से 1000-2000 फीट ऊंचाई पर गुब्बारो की सहायता से उड़ान में रखा जाता है। इस ऊंचाई पर वायु गति धरातल की तुलना में 5-8 गुणा होती है। ये उड़ान पवन टर्बाइन टावर वाले पवन टर्बाइन की तुलना मे दोगुनी विद्युत उत्पन्न करते है। अल्टेरोस एनर्जीस (Altaeros Energies) कंपनी ने प्रथम व्यवसायिक उड़ने वाला पवन टर्बाइन बनाया है जिसका नाम ब्युयांट एअर टर्बाइन (Buoyant Air Turbine) है और 35 फुट लंबा उच्च कोटि के कपड़े से बने गुब्बारे के रूप मे है। यह 30 किलोवाट ऊर्जा उत्पन्न करने मे सक्षम है और एक बार स्थापित होने पर पुर्णतः स्वचालित है, यह अपने आपको वायु गति के आधार पर समायोजन कर लेता है, आपतकाल मे सुरक्षित स्थान पर उतर जाता है।

संलयन ऊर्जा– संलयन ऊर्जा सूर्य तथा सभी तारों की ऊर्जा का स्रोत है। इस ऊर्जा स्रोत मे अनंत काल तक साफ सुथरी ऊर्जा देने की संभावना होती है। नाभिकीय संलयन मे हाइड्रोजन के समस्थानिक ड्युटेरियम तथा ट्रिटियम के परमाणुओं के संलयन से हिलियम बनती है और परमाणु विखंडन से चार गुना ऊर्जा उत्पन्न होती है। सात देशो के सहयोग से फ्रांस मे बन रहा ITER (International Thermonuclear Experimental Reactor) बनाया जा रहा है, इसके 2027 तक पूर्ण होने की संभावना है। आशा है कि यह सबसे पहला व्यवसायिक संलयन ऊर्जा संयत्र होगा। ❑

मजबूत सपना

डॉ. भुवनेश कुमार, विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग

बहुत पुरानी बात है एक छोटा लडका था जो घोड़ों के प्रशिक्षक का बेटा था। वह और उसके पिता अलग-अलग अस्तबलों में जाकर घोडों को प्रशिक्षण देते थे। परिणामस्वरूप उस लडके के स्कूल अक्सर बदलते रहते थे। जब छोटा बालक बडा होकर बड़े स्कूल में पहुँचा तो एक उसके क्लास टीचर ने उससे एक निबन्ध लिखने को कहा, विषय था-वह बड़ा होकर क्या बनना चाहता है।

उस रात लड़के ने सात पेज का एक निबन्ध लिखा जिसमें उसने लिखा कि उसका लक्ष्य घोडो के रेंज का मालिक बनना है। उसने अपने सपने को पूरे विस्तार से लिखा और 200 एकड के रेंज की एक तस्वीर खीची फिर उसने 4000 वर्ग फुट के मकान की विस्तृत योजना भी भी खींची। जिसे वह 200 एकड़ के रेंज पर बनाना था। अगले दिन उसने टीचर को वह निबन्ध थमा दिया। दो दिन पश्चात उसे उसका निबन्ध वापस मिल गया। जिसके पहले ही पेज पर एक बडा लाल ''Fail'' लिखा था, साथ ही उसके नीचे लिखा था कि क्लास के बाद मुझसे मिलो। लड़का क्लास के बाद टीचर से मिलने गया मिलने पर अध्यापक ने उसके द्वारा लिखे निबन्ध पर कहा कि तुम्हारे जैसे लड़के के लिए यह एक काल्पनिक सपना है। तुम साधारण से परिवार वाले, तुम्हारे पास पर्याप्त संसाधन भी नहीं हैं। इन हालात में इतना बड़ा सपना किस तरह से पूरा करोगे। तुम यह काम किसी भी हालत में पूरा नहीं कर सकते अध्यापक ने आगे कहा-यदि तुम इस निबन्ध में यथार्थवादी लक्ष्य शामिल कर लोगे तो मैं तुम्हारी ग्रेड पर विचार करने को तैयार हूँ।

वह लड़का घर गया और उसने इस बारे में काफी देर तक सोचा और हफ्ते भर तक विचार करने के बाद उस लड़के ने टीचर को वह निबन्ध ज्यों का त्यों दे दिया और कहा कि आप अपने Fail के ग्रेड को कायम रखें और मैं अपने सपने को कायम रखूगाँ।

सालों बाद एक समूह को सम्बोधित करते हुए उस लड़के ने अपनी यह कहानी सुनायी। उसने कहा कि मैं यह कहानी आपको इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि आप इस समय मेरे 200 एकड़ घोड़ों के रेंज के बीच बने 4000 वर्ग फुट के इस मकान में बैठे हैं। मैंने उस स्कूल के निबन्ध को मडवाकर दीवार पर टाँग रखा है जो हमेशा मेरे लक्ष्य को बताता रहा।

और इस कहानी का सबसे अच्छा हिस्सा यह है कि दो साल पहले ही वही क्लास टीचर अपने छात्रों को लेकर मेरे रेंज में एक सप्ताह रूकने के लिए आये, और जाते समय बोले-देखो बेटा मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ जब मैं तुम्हारा अध्यापक था तो एक तरह से मैं बच्चों के सपने चुराने का काम करता था। उन वर्षो में मैंने बहुत से बच्चों के सपने चुराये। सौभाग्य से तुममें इतना संकल्प था कि तुमने अपना सपना नहीं चुराने दिया। ठीक ऐसा ही हमारे आपके और सभी व्यक्तियों के साथ होता है। जो कोई अपने लक्ष्य को दिल से चाहते हैं उनके शिक्षक दोस्त, माता-पिता व परिवार के लोग उन्हें निराशा भरी बातें कहते हैं। वह आपका सपना चुराने का काम करते हैं।

बहुत से लोग होते है जो निराशाजनक बातों को सुनकर अपना लक्ष्य छोड़ देते हैं, और सफल वही हो पाते हैं जो अपने संकल्प पर कायम रहते हैं। हो सकता है आपका लक्ष्य बड़ा हो तो स्वाभाविक बात है कि उस लक्ष्य को प्राप्त करने में समय अवश्य लगेगा, लेकिन ऐसा नहीं कि पूरा नहीं होगा। इस पर अब्दुल कलाम जी ने कहा है कि ''अगर आप सूरज की तरह चमकना चाहते हैं, तो पहले सूरज की तरह जलिये'' याद रखिये बिना संघर्ष के कोई सफल नहीं हो पाता जितना कड़ा संघर्ष होगा उतनी ही बड़ी उपलब्धि हासिल होगी।

आप सफलता और असफलता मिलने के बाद एक एकान्त

जगह पर जाएं फिर अपने आप से बातें करें और अपने आप से पूछें कि क्या में सही जा रहा हूँ। अपनी सफलता और असफलता पर खुद से बातें करें, पूछें खुद से की क्या में सही जा रहा हूँ। ऐसा करने पर आप अपनी जिन्दगी की छोटी मोटी परेशानियों को मिटाकर अपनी सफलता की राह को आसान कर सफलता पा सकते हैं। ❑

वृक्षों को बचाएं

सुनील कुमार गर्ग, कार्यालय अधीक्षक

पृथ्वी के चेहरे से हर दिन पेड़ों की संख्या गायब हो जाती है। जब पेपर उत्पादों के उत्पादन के अन्य तरीके हैं, तो पेड़ अभी भी बड़े पैमाने पर उपयोग किए जा रहे हैं।

हम, पृथ्वी के निवासी इस चरण पर पहुंच गए हैं जहां हमें इस ग्रह पर और अधिक अस्तित्व के लिए अपनी जीवन शैली को नया स्वरूप और पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। यदि हम चाहते हैं कि पीढ़ियों को एक स्वस्थ और हरे रंग की पृथ्वी की आशा हो, तो हमें वास्तव में जल्द से जल्द अपने आप को बदलना होगा।

कोई इस तथ्य से इनकार नहीं करता है कि मानव की जरूरतों और गतिविधियों के कारण पूरे विश्व के वन क्षेत्र काफी समय से समाप्त हो रहे हैं। इसके लिए एक योगदान कारक है कागज उद्योग। मैं कागज के बारे में कुछ तथ्यों को आगे रख रहा हूँ–

दुनिया भर में हर साल 300 मिलियन मीट्रिक टन कागज और पेपरबोर्ड का उत्पादन होता है

औद्योगिक उपयोग के लिए कुल वैश्विक लकड़ी का 42 प्रतिशत पेपर बनाने में जाता है और अगले पचास वर्षों में 50 प्रतिशत तक पहुंचने की उम्मीद है। हमारे देश में हमारे पास लगभग 600 पेपर मिल्स हैं जो कि विभिन्न प्रकार के पेपर का उत्पादन करते हैं औसत पर हम में से हर एक में एक साल 700 पाउंड कागज के उत्पादों का उपयोग करता है। पेपर के उत्पादन के लिए पेड़ों के पौधों के विशेष प्रकार के रूप में प्रबंधित टिम्बरलैंड्स कहा जाता है। इन प्रबंधित टिम्बरलैंड्स में विशेष प्रकार के पेड़ शामिल हैं, जो कि सॉल्वुड ट्रेस (पाइन, फिर आदि) जैसे लुगदी और पेपर विनिर्माण के लिए आवश्यक हैं। इसका मतलब है कि विविध प्राकृतिक जंगलों को इन प्रबंधित वृक्षारोपण (तेजी से बढ़ते कॉनिफ़र जैसे) द्वारा बदल दिया गया है, जिसका पूरे जंगल की जैव विविधता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। लुगदी पीढ़ी के लिए प्रबंध किए गए टिम्बरलैंडों के डिजाइनिंग का मतलब मूल्यवान वन्यजीव निवास स्थान, खराब मिट्टी की गुणवता और पारिस्थितिक तंत्र का नुकसान है। उनके प्राकृतिक जंगलों की तुलना में 90 प्रतिशत कम प्रजातियां हैं।

प्रबंधित पर्यावरणीय प्रदूषण के कारण तेजी से उत्पादन दर सुनिश्चित करने के लिए प्रबंधित टिम्बरलैंड अक्सर रासायनिक जड़ी-बूटियों और कीटनाशकों का उपयोग करते हैं। पेपर कपास, भांग, घास और यहां तक कि हाथी के गोबर की तरह कई अन्य सामग्रियों से बनाया जा सकता है, लेकिन दुर्भाग्य से दुनिया के ज्यादातर हिस्सों में यह केवल पेड़ों का त्याग करके किया जाता है कचरा निपटान साइटों पर पेपर उत्पादों की सबसे बड़ी सामग्री है।

पल्प और पेपर उत्पादन उद्योग वायु और जल प्रदूषकों का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक, अपशिष्ट पदार्थ और जलवायु परिवर्तन (ग्रीन हाऊस गैस) के लिए जिम्मेदार गैसें हैं। पल्प और कागज उत्पादन ऊर्जा, जल और वन संसाधनों का सबसे बड़ा औद्योगिक उपभोक्ता है। पेपर बनाने की प्रक्रिया में शामिल

विशाल पानी की खपत पानी के स्तर में कम हो सकती है, जो कि पानी के तापमान में परिवर्तन के साथ मछली और अन्य जलीय वनस्पतियों और जीवों के लिए जरूरी है। लुगदी उद्योग के वायु निर्वहन में पॉर्नक्लिनीक सुगन्धित हाइड्रोकार्बन जैसे कुछ हार्मोन को बाधित और कैसिनोजेनिक रसायनों को शामिल किया है। घरेलू डस्टबिन की सामग्री के बारे में एक पांचवें में कागज और कार्ड होते हैं, जिनमें से आधे समाचार पत्र और पत्रिकाएं हैं।

विश्व की 20 प्रतिशत आबादी वाले औद्योगिक देश दुनिया के लेखन और मुद्रण के कागजात का 87 प्रतिशत का उपयोग करते हैं। इन सभी तथ्यों और आंकड़ों के सामने, अब सवाल यह है कि स्थिति को हमारे पक्ष में बदलने के लिए हम क्या कर सकते हैं। कई चीजें हैं जो कागज की रीसाइक्लिंग, कागज के अपव्यय या गैर-पेड़ आधारित पेपर उत्पादन पद्धतियों आदि के विकास से बचने जैसी हो सकती हैं। लेकिन कागज के उपयोग को कम करने के लिए एक बहुत सरल और आसान तरीका मुश्किल (मुद्रित) प्रपत्र के बजाय सूचना और डेटा की मुलायम प्रतियों के उपयोग पर जोर देना है। इंटरनेट के जरिए दुनिया के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को कम्प्यूटरीकृत और जुड़ा हुआ है, सभी प्रकार के संगठनों को मुलायम डेटा का उपयोग करने पर जोर देना चाहिए जिससे मुद्रित पदार्थों के उपयोग से बचने की आवश्यकता होती है।

इस दिशा में निम्नलिखित चरणों का पालन किया जा सकता है–

1. हम सभी को हमारे टेलीफोन, मोबाइल फोन, बिजली और पानी के बिल आदि के लिए मुद्रित वक्तव्य की बजाय ई-बिलों का विकल्प चुनना चाहिए, ज्यादातर निजी कम्पनियाँ पहले ही इसे शुरू कर चुकी हैं और दूसरों को भी उसी का पालन करना चाहिए। पेपर की गुणवत्ता, जो इन बिलों को बनाने के लिए उपयोग की जाती है, महान पर्यावरण प्रदूषण को लागू करती है।

2. बैंक विवरण, क्रेडिट कार्ड स्टेटमेंट आदि जैसे अन्य दस्तावेजों के लिए उसी. चीज का पालन किया जा सकता है।

3. मुद्रित रूप में केवल कानूनी दस्तावेजों का उपयोग किया जाना चाहिए और सूचना के सभी अन्य प्रकार के लेन-देन को इंटरनेट के माध्यम से किया जाना चाहिए।

4. एक संगठन के भीतर, हर बार प्रिंट किए गए नोटिस को परिचालित करने के बजाय ईमेल के माध्यम से जानकारी (जैसे आउटलुक मेल एक्सप्रेस) का पालन करना चाहिए।

5. सभी प्रकार के संचार को प्राथमिकता ई-मेल के जरिए किया जाना चाहिए।

6. शैक्षिक संस्थानों और अन्य ऐसे सेट अप, जिनके लिए पंजीकरण आदि की प्रक्रिया की आवश्यकता है, मुद्रित संस्करण में पारंपरिक 10 पृष्ठ (कभी-कभी और भी अधिक) प्रवेश फॉर्म की बजाय ऑनलाइन पंजीकरण और प्रवेश प्रारंभ करना चाहिए। यहां तक कि उम्मीदवारों के इस्तेमाल के लिए इंटरनेट पर प्रॉस्पेक्टस और दिशानिर्देश मैनुअल भी उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

7. परीक्षा का तरीका भी यथासंभव बदलना चाहिए। प्रवेश परीक्षा और अन्य योग्यता परीक्षणों को अनिवार्य रूप से ऑनलाइन बनाया जाना चाहिए।

कई अन्य समान प्रकार की साधारण चीजें हमारे दिन-प्रतिदिन जीवन में अपनायी जा सकती हैं।

इस प्रकार के उपायों से आपके घर और कार्यस्थल अव्यवस्था मुक्त हो जायेंगे और साथ ही यह पृथ्वी को स्वतंत्र रूप से सांस लेने की अनुमति देगा। ❑

आर्थिक सुधारों का नतीजा

डॉ. वी. के. गोयल, विभागाध्यक्ष, भौतिकी विभाग

अंतराष्ट्रीय क्रेडिट रेटिंग एजेंसी मूडीज ने भारत की क्रेडिट रेटिंग में सुधार किया है। मूडीज ने भारत का दर्जा बीएए-3 से बढ़ाकर बीएए-2 कर दिया है। इसका मतलब है कि सबसे कम निवेश की श्रेणी से ऊपर वाली श्रेणी में भारत को रखा गया है।

मूडीज ने भारत की रेटिंग में सुधार के लिए जो आधार प्रस्तुत किए हैं, उनमें सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में हो रही बढ़ोतरी, नोटबंदी और जीएसटी के लाभ, डूबते कर्ज से पैदा हुई बैंकों की समस्या दूर करने के लिए सरकार द्वारा दिया गया पैकेज, आधार का प्रसार और प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण योजना के लाभ शामिल हैं।

रेटिंग में सुधार से भारत के शेयर व बांड्स बाजार में विदेशी निवेशकों की रुचि बढ़ेगी। बांड्स बाजार की मजबूती से देश की कंपनियों को फंड जुटाने में मदद मिलेगी। आर्थिक और संस्थागत सुधार लगातार आगे बढ़ाने के लिए भारत की क्षमता बेहतर होगी। सरकारी ऋण के लिए व्यापक एवं स्थायी वित्तीय आधार तैयार होगा। इससे मध्यम अवधि में सरकार के सामान्य ऋण बोझ में धीरे-धीरे कमी लाने में मदद मिलेगी। साथ ही, रेटिंग से सार्वजनिक ऋण के ऊंचे स्तर में धीरे-धीरे गिरावट आने की संभावना बढ़ेगी। मूडीज ने नोटबंदी और जीएसटी को महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार माना है। नोटबंदी एक कड़वी दवा थी, पर एक वर्ष बाद उसके लाभ दिखाई दे रहे हैं। विश्व बैंक का तो कहना है कि काले धन को रोकने के परिप्रेक्ष्य में भारत में की गई नोटबंदी दुनिया में अब तक किसी भी देश की सरकार द्वारा उठाया गया सबसे बड़ा सार्थक कदम सिद्ध हुआ है। मूडीज ने जीएसटी को भारत का संस्थागत आर्थिक सुधार कहा है। एक जुलाई, 2017 के पहले तक देश में 17 तरह के अप्रत्यक्ष कर लागू रहे हैं। इतने विभिन्न टैक्सों की जगह अब जीएसटी के तहत माल एवं सेवाओं के लिए चार स्लैब बनाए गए हैं। जीएसटी के तहत छोटा कारोबार करने वालों को राहत दी गई है। 20 लाख रुपये से कम का कारोबार करने वाले कारोबारी पर जीएसटी लागू नहीं हुआ है।

केंद्र सरकार और जीएसटी परिषद द्वारा उद्योग-कारोबार की दिक्कतें दूर करने और ग्राहकों को उपयुक्त लाभ देने के लिए जीएसटी से संबंधित सुधारवादी कदम उठाए जा रहे हैं।

मूडीज के मुताबिक, भारत सरकार द्वारा घोषित किए गए आर्थिक पैकेज फंसे कर्ज की समस्या से जूझ रहे सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में नई जान फूंकने और अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाने में लाभप्रद होगा। वस्तुतः सरकारी बैंकों में पुनः पूँजीकरण का कदम एक बड़ा बैंकिंग सुधार है। इससे सरकारी बैंकों को दोबारा सही तरीके से काम करने का अच्छा मौका मिलेगा। मूडीज ने माना है कि भारत के क्रेडिट प्रोफाइल में एक प्रमुख कमजोरी दूर करने का उपाय दिखता है। मध्यम अवधि में यदि निवेश और ऋण के लिए मांग में तेजी आई, तो इससे दमदार आर्थिक वृद्धि दर्ज करने में मदद मिलेगी जिससे राजकोषीय सुदृढ़ीकरण को बल मिलेगा।

सरकार के पास व्यापक आर्थिक व वित्तीय सुधार कार्यक्रम मौजूद हैं, जिनमें से कुछ सुधारों को लागू किया जा चुका है। ऐसे सुधारों को तेजी से आगे बढ़ाना निवेश और कारोबार में सुधार के लिए जरूरी है। यह भी माना जा रहा है कि ऐसे सुधारों से प्रति व्यक्ति आय भी बढ़ेगी। आशा करनी चाहिए कि मूडीज की तरह अब अन्य प्रमुख रेंटिंग सुधारने की डगर पर आगे बढ़ेंगी। ❑

आत्म ज्ञान की प्राप्ति

लक्ष्मण सिंह, कनिष्ठ सहायक

एक बार राजा जनक ने ज्ञान प्राप्ति की आकांक्षा से अनेक ज्ञानी जनों को अपने दरबार में आमंत्रित किया। इनमें आठ जगहों से टेढ़े-मेढ़े अष्टावक्र भी आये उन्हे देखकर सभा के सभासद हँसने लगे। उन्हें हँसता देख अष्टावक्र और जोर से हँसने लगे। उन्हें हँसता देख राजा जनक द्वारा उनके हँसने का कारण पूछने पर अष्टावक्र बोले-"राजन्! मैं इसलिए हँसा, क्योंकि मैं गलत सभा में आ गया हूँ। मुझे सूचना थी की यह ज्ञानी जनों की सभा है, परन्तु यहाँ तो चर्मकार बैठे हैं, जो व्यक्ति के ज्ञान का नहीं उनके शरीर की बनावट का मूल्यांकन करते हैं।" यह सुनकर सभी सभासदों के सिर शर्म से झुक गए। राजा जनक को भान हो गया कि अष्टावक्र ही उनके गुरु हो सकते हैं।

राजा जनक उन्हें गुरु मानकर उनके चरणों में झुके तो अष्टावक्र बोले-"पहले आपको गुरु दक्षिणा देनी होगी।" राजा जनक बोले-"ऋषिवर! आप मेरा सारा खजाना ले लें। अष्टावक्र हँसे और बोले-"राजन्! राजकोष तो प्रजा का है, आपका नहीं।" राजा जनक बोले-"तो फिर आप मेरा राज्य ले लीजिए।" अष्टावक्र बोले-"राजन्! राज्य तो अनित्य है और अनित्य पर किसी का अधिकार नही रहता।" राजा जनक बोले- "तो मेरा शरीर आपके सामने समर्पित हैं।" अष्टावक्र बोले-"शरीर तो मन के अधीन रहता है।" राजा जनक ने कहा-"तो आप मेरा मन ही ले लीजिए।" अष्टावक्र ने राजा जनक से संकल्प करवाकर उनसे मन ले लिया और कहा-"अब तुम्हारे मन की समस्त गतिविधियों पर मेरा अधिकार है। इसे मुझे समर्पित करके कर्म करो।"

राजा जनक ने एक सप्ताह तक गुरू-आज्ञा का पालन किया तो उन्हें अनुभव हुआ कि उनके अन्दर निरासक्त भाव पनप रहा है। अष्टावक्र की इस छोटी-सी शिक्षा ने उन्हें आत्मज्ञान का अधिकारी बना दिया।

❑

हास्य कहानी

लोकेश कुमार, बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष

एक बार बड़े भाई ने अपने छोटे भाई से कहा– मेरी सुसराल जाकर अपनी भाभी को ले आ। भाई भाभी को लेने चलने लगा तो बड़े भाई ने कहा– सुन। वहाँ सुसराल में कोई कुछ भी पूछे तो जबाव जरा सोच-समझकर देना। कहा 'हाँ' और 'न' कहना है इसका ख्याल रखना। छोटा भाई चला। रास्ते में सोचता है इस हाँ-न में कुछ चक्कर जरुर है। कहीं ऐसा न हो कि वहाँ कुछ गड़बड़ हो जाए। इसलिए उसने तय किया कि कोई कुछ भी पूछे बस हर सवाल के जबाव में एक बार 'हाँ' दूसरी बार 'न' कहना है।

छोटा भाई सुसराल पहुँचा। स्वागत-सत्कार, भोजन-पानी हुआ। गाँव के सब लोग बैठे। ससुर ने पूछा– गाँव में सब आनन्द मंगल है? इसने कहा– 'हाँ'। फिर पूछा– और तुम्हारे बड़े भाई ठीक है? वह बोला– 'न'। तो क्या बीमार हैं? इसने कहा– 'हाँ'। दवा वगैरह कुछ देते हो? बोला न। तो ज्यादा बीमार हैं? बोला– 'हाँ'। पर बचने की उम्मीद तो है? उसने कहा– 'न'। अरे तो क्या इतने अधिक बीमार हैं? उसने कहा– 'हाँ'। पर हैं तो अभी जिन्दा। उसने कहा– 'न'। तो क्या मर गए हैं? बोला– 'हाँ'।

इसके बाद क्या हुआ मुझे पता नहीं। वैसे भी अब होने को बचा ही क्या।

❑

कार्य की गरिमा-श्रम को अपने जीवन में अपनाएँ

साक्षी चौधरी, बी.कॉम. प्रथम वर्ष

सुख और शांति की कामना सभी करते हैं लेकिन इसके लिए श्रम करना जरूरी है। श्रम ही सफलता का रहस्य है। परिश्रम के बल पर ही हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। एक आलसी व अकर्मण्य व्यक्ति कभी भी अपना लक्ष्य या कामयाबी प्राप्त नहीं कर पाता। ऊँची-ऊँची इमारतें, चलने के लिए अच्छी सड़के, स्कूल, अस्पताल आदि हमारी सुविधा की जो तमाम चीजें है, उनमें श्रम की ही ताकत छिपी हुई है। श्रम का महत्व समझने के यह आवश्यक है कि हम श्रम करने वाले हर व्यक्ति को आदर दें तथा उनसे प्रेरणा लें। किसी भी काम को छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए। कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता बल्कि व्यक्ति की सोच ही इसका कारण है। जब आप अपनी सोच को बदलेंगे तो आपको कोई भी कार्य करने में संकोच नहीं होगा। कुछ व्यक्ति अपने आलस्य के कारण यह सोचकर बैठ जाते हैं कि जो होगा सो भाग्य के अनुसार होगा या वही होगा जो भाग्य में लिखा होगा। परन्तु भाग्य के सहारे बैठने से कछ नहीं होता। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है जो कर्म करते हैं। तथा ईश्वर भी उन्हीं का साथ देते हैं। विद्यार्थी जीवन में तो श्रम का और भी महत्व है। क्योंकि यदि कोई विद्यार्थी पढ़ाई में श्रम करने से जी चुराता है तो वह परीक्षा में सफल नहीं हो पाएगा तथा उसका जीवन भी किसी कार्य का नहीं रहेगा। इसीलिए श्रम ही समस्त सफलताओं का रहस्य है जो चाहे किसी भी क्षेत्र में ही हमें श्रम की शुरूआत अपने घर से ही करनी चाहिए। पढ़ाई के अलावा घर के भी कामों में श्रम का परिचय देना चाहिए तथा हर सम्भव कार्य में अपने श्रम का योगदान करना चाहिए। खेंतों में किसान दिन-रात मेहनत करके हम तक अनाज उगाकर पहुँचाता है तथा मजदूरों द्वारा फैक्ट्रियों में किए जाने वाले श्रम द्वारा ही अनेक वस्तुएँ हम तक पहुँचती हैं। जो व्यक्ति श्रम करता है उसे पत्थरों पर भी नींद आ जाती है तथा श्रमहीन व्यक्ति करवटें ही बदलता है। ईश्वर ने हमें हाथ-पैर सहित सशक्त शरीर दिया है तो उसका उपयोग भी हमें श्रमकार्य में व्यतीत करना चाहिए। कहते हैं कि खाली दिमाग शैतान का घर होता है जब आप कोई कार्य करते हैं तो आपका दिमाग व्यस्त हो जाता है तथा व्यस्त दिमाग में उल्टे-सीधे विचार नहीं आते तथा व्यस्त मस्तिष्क मस्त रहता है। इसलिए हम सभी को अपने जीवन में श्रम को अपनाना चाहिए जिससे कि हम अर्कमण्य न बनें तथा अपना सारा जीवन श्रम करने में बिताएँ। श्रम से सुविधा मिलती है परन्तु सुविधाभोगी न बनकर हमें परिश्रम करते रहना चाहिए। अतः श्रम ही समस्त सुखों का मूल रहस्य है महान अर्थशास्त्री एडम स्मिथ के अनुसार, ''श्रम बढ़ेगा तथा ही देश का विकास होगा।

❑

हँसो हसाँओ

श्रीकान्त शर्मा, बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

एक दिन स्कूल में, इंसपेक्टर करने आया जाँच,
दो और दो कितने होते, लड़का बोला पाँच,
मास्टर जी आगे आये,
बच्चे की पीठ थप थपाये,
इंसपेक्टर बोला अरे ओ सत्यानाशी,
गलत गणित पर बच्चे को देता शाबाशी
मास्टर बोला, हुजुर क्यों होते हो नाराज,
बतलाता हूँ तुम्हे इसका भी राज
कल इसने बतलाये,
दो और दो छह और आज बतलाये पाँच,
इसी प्रकार प्रगति करता जाएँगा।
कल हुजुर स्वयं चार पर आयेगा ॥ ❑

देश भक्तों को नमन

ऊषा कुशवाहा, बी. कॉम. तृतीय वर्ष

मैं भारत वर्ष का हरदम अमिट सम्मान करती हूँ,
यहाँ की चाँदनी मिट्टी का ही गुणगान करती हूँ।
मुझे चिंता नही है स्वर्ग जाकर मोक्ष पाने की,
तिरंगा हो न काला मेरा बस यही अरमान रखती हूँ।
कुछ नशा तिरंगो की आन का है,
कुछ नशा मातृभूमि के मान का है।
हम लहराएगें हर जगह यह तिरंगा,
नशा यह हिन्दुस्तान की शान का है।
खुशनसीब है वो जो वतन पर मिट जाते है,
मर कर भी वे लोग अमर हो जाते है।
करती हूँ उन्हें सलाम ए वतन पर मरने वालों,
तुम्हारी हर साँस में तिरंगा का नसीब बसता है।।
लिख रही हूँ मैं अंजाम जिसका कल आगाज आएगा,
मेरे लहू का हर एक कतरा इंकलाब लाएगा।
मैं रहूँ या न रहूँ ये वादा है तुमसे मेरा
कि मेरे बाद वतन पर मरने वालों का सैलाब आएगा।
आजादी की कभी शाम नही होने देगें,
शहीदों की कुर्बानी बदनाम नहीं होने देगें,
बची हो जो एक बूँद भी लहू की,
तब तक भारत माता का आँचल नीलाम नहीं होने देगे।
खूब बहती है अमन की गंगा बहने दो,
मत फैलाओं देश में दंगा रहने दो।
लाल-हरे रंग में ना बाटो हम को,
मेरी छत पर एक तिरंगा रहने दो।
करते है अलविदा हम इस जहान को,
जाकर खुदा के घर से आया ना जाएगा।
हमने लगाई आग है। जो इंकलाब की,
इस आग को किसी से बुझाया ना जाएगा।
मुझे न तन चाहिए ना धन चाहिए,
बस अमन से भरा यह वतन चाहिए।
जब तक जिंदा रहूँ इस मातृभूमि के लिये,
और जब मरूँ तिरंगा काला न चाहिए।
'जय हिन्द जय भारत'

❑

हे शिक्षक तुम्हे नमन

रुबी कुमारी, बी.ए. द्वितीय वर्ष

महान हो तुम गुणवान हो तुम
ज्ञान की सदा से शान हो तुम।
जल से निर्मल पुष्प से कोमल
शिष्यों के भाग्य विधाता हो तुम
नदियों से, पर्वत से ऊँचे
सूरज जैसे तेजवान हो तुम।
सागर से गम्भीर, हृदय से कोमल
ज्ञान गंगा का भंडार हो तुम
इस जग में तुम सा कोई नही
सम्पूर्णता का वरदान हो तुम
हे शिक्षक तुम्हे नमन...

❑

शैक्षिक नेतृत्व

डॉ. आर. के. अग्रवाल, विभागाध्यक्ष, गणित विभाग

नेतृत्व से अभिप्राय व्यक्ति के व्यवहार के उस गुण से है जिसके द्वारा वह अन्य लोगों को संगठित कर अपने प्रयास से संबंधित कार्य कराने में मार्ग दर्शन करता है। प्रत्येक क्षेत्र में 'नेतृत्व योग्यता' की आवश्यकता होती है। धार्मिक, भौतिक, आर्थिक, व्यवसायिक आदि अनेक क्षेत्रों में 'नेतृत्व' के बिना व्यवस्था अनियन्त्रित रहती है। प्रायः समाज में प्रत्येक समूह, किसी न किसी व्यक्ति को नेता के रूप में स्वीकार करके ही अपनी सन्तुष्टि करता है, समूह को यह विश्वास होता है कि दुःख तथा झंझटों में, विवाद पूर्ण परिस्थितियों में आपका नेता, निसंकोच सहायता कर सकता है। समूह अपने कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहते हैं, विषम समस्याओं के निराकरण के लिए दौड़-धूप करना उनके स्वाभावानुकूल नहीं होता है। अतएव वे अपने कार्यभार को हल्का करने के लिए अथवा सुरक्षा के लिए किसी योग्य व्यक्ति का नेता के रूप में चयन करके निश्चित हो जाते हैं। समूह के व्यक्ति—'नेतृत्व' उसी को सौंपते हैं जो योग्य होता है, अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों की भाँति शिक्षा का क्षेत्र भी समाज कल्याण में सहायक होता है। लोकतन्त्र में शिक्षा के महत्व को सर्वोपरि समझा जाता है। शैक्षिक क्षेत्र में भी यदि योग्य 'नेतृत्व' की प्राप्ति होती है तो शिक्षा का स्तर उचित दिशा में विकसित होता चला जाता है। अविकसित परिस्थितियों में अन्य देशों की शैक्षिक दशाओं का अनुसरण करते रहने से कार्य तो चल सकता है, परन्तु विकासशील एवं लोकतन्त्रीय देशों की शिक्षा की सुव्यवस्था के लिए, मौलिकता तथा समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रणाली का होना आवश्यक है। परन्तु शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन तथा संशोधन करने से ही शिक्षा जगत में सुधार तब तक नहीं हो सकता जब तक शैक्षिक क्षेत्र में सुदृढ़ नेतृत्व की स्थापना न हो जाये। 'शैक्षिक नेतृत्व' के सम्बन्ध में अन्य बातों को जानने से पूर्व इसके अर्थ एवं महत्व को समझना आवश्यक है।

वर्तमान युग में शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया है। शिक्षा-मन्त्रालय, शिक्षा विभाग तथा विद्यालयों में सभी प्रकार के पदों पर व्यक्तियों को कार्य करना पड़ता है। इनमें से कुछ व्यक्ति, प्रशासन के रूप में अपना कार्य का निर्वाह करते हैं तथा अन्य व्यक्तियों से आशा की जाती है कि वे प्रशासक के आदेश के अनुरूप कार्य करें। वस्तुतः शिक्षा के क्षेत्र में निदेशक, विद्यालय निरीक्षक, प्रधानाचार्य/प्राचार्य, विभागाध्यक्ष तथा कुछ वरिष्ठ अध्यापकों और प्रशासकों को ही अपने उत्तरदायित्वों को निभाना पड़ता है। शिक्षा क्षेत्र में इन प्रशासकों को ही 'नेता' के रूप में स्वीकार किया जाता है ऐसे व्यक्तियों को शिक्षा तथा विद्यालय सम्बन्धी अनेक समस्याओं का विधिवत ज्ञान होना चाहिए। 'पाठयक्रम', 'पाठयपुस्तक', 'शिक्षण विधि', शिक्षक व्यवहार, मूल्यांकन प्रक्रिया का, प्रशासकों को सम्यक होना चाहिए। किन्तु यहाँ प्रश्न यह है कि क्या इन सभी बातों की पूर्ण जानकारी रखने पर तथा प्रसिद्ध होने पर कोई भी व्यक्ति सफल प्रशासक बन सकता है? यदि बात पूर्ण रूप से सही होती तो देश के सभी विद्वानों तथा ज्ञानियों को खोज खोजकर, शिक्षा विभाग में, प्रशासक पद पर नियुक्त करने की प्रथा अवश्य होती। आँकड़े इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि विद्वता तथा प्रशासन योग्यता में कोई धनात्मक सम्बन्ध नहीं है। इसके विपरीत यह भी देखने में आता है कि अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा शैक्षिक योग्यता में कुछ कम योग्य होने पर भी कुछ प्रशासक अपने क्षेत्रों में इतने अधिक कार्यकुशल होते हैं कि बड़े-बड़े विद्वान तथा जनता के प्रभावशाली व्यक्ति भी उनके व्यक्तित्व का लोहा मानते हैं तो फिर भी इनमें ऐसी कौन-सी विशेषता है जिसके कारण कोई प्रशासक, स्थायी प्रभाव को प्राप्त कर लेता है तथा जिसके अभाव में वह अवकाश प्राप्ति के समय तक उदरपूर्ति को करता रहता है परन्तु उसके सम्पर्क में रहने वाले व्यक्ति, सदैव उसकी निन्दा करते हैं। ❑

पढ़ाई में मन कैसे लगायें

यजवेन्द्र कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग

आजकल सभी विद्यार्थी अपनी कक्षा में टॉप करना चाहते है। लेकिन उनकी एक ही समस्या होती है कि वह एक या दो घंटो से ज्यादा देर तक नहीं पढ़ पाते. यह समस्या अधिकतर सभी विद्यार्थियों को आती है। इस समस्या को दूर करने के लिए यहाँ आपको कुछ ऐसी आसान टिप्स बताई जा रही है जिनको आप डेली फोकस करके अपने पढ़ने का समय 2 घंटे तक बढ़ा सकते है। पढ़ाई करते समय ध्यान देने योग्य बातें–

1. पढ़ते समय आप केवल चेयर पर बैठकर ही पढ़ाई करे। पढ़ाई करते-करते बिस्तर पर लेटने से हमारा ध्यान पढ़ाई से ज्यादा सोने में लगता है। और हमें नींद आने लगती है।
2. एकांत वाली जगह में पढ़े जहां हल्ला गुल्ला बिलकुल भी न हो।
3. पढ़ते समय टेलीविजन, रेडियो या गाने भी बंद रखे ।
4. पढ़ते समय अपना मोबाइल स्विच ऑफ या साईलेंट मोड में रखे। क्योकि एक रिंग आने से ही आपका ध्यान पढ़ाई से हट सकता है। मोबाइल को खुद से दूर रखे।
5. पढ़ने से पहले सोच ले की आपको कौन सा विषय पढ़ना है। सभी विषयों को एक साथ न पढ़े।
6. पढ़ाई करते समय विचार मंथन जरुर करें रटने की प्रवृत्ति से बचे।
7. पढ़े हुए पाठ्य पर अपने मित्रों से विचार-विमर्श जरुर करें, ग्रुप डिस्कशन पढाई में लाभदायक होता है।
8. कुछ टॉपिक्स ऐसे होते है। जो हमारे माइंड में ज्यादा देर तक नहीं रह पाते ऐसे टॉपिक्स के शार्ट नोट्स बना ले। इन नोट्स से आपको परीक्षा की तैयारी के लिए काफी मदद भी मिलेगी।
9. कोई भी पाठय कम से कम दो से तीन बार तक जरुर पढ़े।
10. ग्राफ, रेखाचित्रों या मानचित्रों आदि की मदद से भी आप पढ़ सकते है. इस टिप्स से आप अपना पढ़ा हुआ लम्बे समय तक याद रख सकते है।

पढाई करते समय अपना ध्यान कैसे केंद्रित करें

एकांत जगह को चुने– पढ़ाई करने के लिए आप किसी ऐसी जगह का चुनाव करे जो एकांत हो अर्थात जहाँ शोरगुल बिलकुल भी ना हो। ऐसे जगह पर न जाये जहां पर टीवी या रेडियो चल रहा हो। पढ़ते समय एक आरामदायक कुर्सी का प्रयोग करें इसके साथ साथ अच्छी प्रकाश व्यवस्था होनी चाहिए। अध्ययन हेतु सब सामान पास में हो पढ़ते समय आपकी जरूरत का सारा सामान आपके पास होना चाहिए।

पढ़ते समय बार बार अपनी जगह से न उठे। बार बार उठने से आपको डिस्टर्ब तो होगा ही बल्कि आपका मन दुबारा से पढ़ाई में लगे ये भी मुश्किल है। जिस रूम में आप पढ़ रहे है। याद रहे वहाँ उपस्थित सभी सामान व्यवस्थित तरीके से होना चाहिए। ताकि आपके मन में अव्यवस्था उत्पन्न न हो।

पढ़ाई एक अच्छे सहपाठी के साथ करे यदि संभव हो तो आप पढ़ते समय अपने किसी अच्छे सहपाठी को भी इनवाइट कर सकते है। आपके साथ पढ़ने वाला सहपाठी ऐसा होना चाहिए जो आपकी तुलना में अधिक होशियार हो। आप दोनों मित्र पढ़ाई को और ज्यादा इंटरेस्टिंग करने के लिए कॉम्पिटिशन भी कर सकते है। कॅम्पिटिशन करने से कार्य में दिलचस्पी बढ़ने लगती है और दोनों को पहले की अपेक्षा जल्दी याद भी होगा।

मोबाइल को खुद से दूर रखें पढ़ते समय मोबाइल को खुद से दूर रखना अति आवश्यक है यदि आप ध्यानपूर्वक कुछ पढ़ रहे हैं और अचानक आपके मोबाइल की रिंग बज पड़ती है तो आपका ध्यान पढ़ाई से पूरे तरीके से हट मोबाइल पर जाता है और आपका दिमाग विचलित होने लगता है इसलिए पढ़ते समय मोबाइल को एयरप्लेन या साइलेंट मोड में रखें।

थोड़ा ब्रेक जरूर ले पढ़ने के लिए एक समय सारिणी तैयार रखे। यदि आपको पढ़ते पढ़ते 50 से 60 मिनट हो चुके हो तो पढ़ाई के बीच 05 से 10 मिनट का ब्रेक जरूर ले। क्योंकि लगातार पढ़ाई करने से आपका दिमाग थक जाता है. जिससे आप जो याद करते हैं वह अपनी थकान की वजह से ज्यादा देर तक याद नहीं रख पाते। ❑

जिन्दगी कैसी होती है

ज्योति कुमारी, बी.कॉम. प्रथम वर्ष

कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है
कभी हँसना तो कभी रोना भी पड़ता है
ये जिन्दगी एक खेल की तरह है
इससे कभी कभी मजबूर भी होना पड़ता है।
जिन रास्तों पर फूल बिछते है
उस पर काँटे ही नजर आते हैं
जिन्हें समझते है अपना वे ही पराये हो जाते है।
तकदीर किस्मत मानकर यूँ ही रो पडते है।
ये जिन्दगी एक खेल की तरह है
इसमें कभी-कभी मजबूर, भी होना पड़ता है।
गम तो हर वक्त पास आते रहते है
हमेशा आँखों से आँसू भी बहते रहते है।
जो अपने जख्मों को हृदय से छुपाये
लोग भी न जाने कैसे होते है उन जख्मों को
कुरेदते है उस वक्त आँसुओं को सैलाब होना पड़ता है।
ये जिन्दगी एक खेल ही तरह है
इसमें कभी कभी मजबूर भी होना पड़ता है
इसमें कुछ कमी इन्सान की तो कुछ कमी तकदीर की।
कुछ कमी हमारी आँखों की तो कुछ कमी हमारे लिए पानी की।
पर दुख के समय में तो रोना पड़ता है।
ये जिन्दगी एक खेल की तरह है
इसमें कभी-कभी मजबूर भी होना पड़ता है। ❑

शिक्षा

पायल, बी.कॉम. प्रथम वर्ष

शिक्षा सभ्य बना देती है पढ़कर देखो,
ऊँचा बनना है तो सीढ़ी चढ़कर देखो,
एक दिन लोग अवश्य तुम्हारा मान करेगें,
अच्छाइयों की राह पर चलकर देखो।
पढ़ने को वरदान बनाकर देखो
शिक्षा को सम्मान बनाकर देखो।
सपनों को साकार बनाकर देखो।
सपनों की राह पर चलकर देखो,
बुलदिंयो की राह को छूकर देखो
एक दिन मंजिल अवश्य मिलेगी,
मेहनत की किताब पढ़कर देखो।
जीवन की राह में आगे बढ़कर देखो
बुराईयों की राह से पीछे हटकर देखो,
सम्मान तो अवश्य करेगा ही हर कोई,
स्वंय को तुम थोड़ा-सा बदलकर देखो।
मुश्किलों में भाग जाना आसान होता है
हर पहलू जिंदगी का इम्तेहान होता है
डरने वालों को कुछ नहीं मिलता जिंदगी में,
मेहनत करने वालों के कदमों में जहान होता है।
''अभी तो असली मंजिल पाना बाकी है,
अभी तो इरादों का इम्तेहान बाकी है
अभी तो तोली मिट्टी भर जमीं
अभी तो तोलना आसमां बाकी है। ❑

ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव

सीमान्त दुबे, विभागाध्यक्ष, असिस्टेंट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग

जो पानी को बरबाद करते हैं, उनसे मैं यही पूछना चाहता हूँ कि क्या उन्होंने बिना पानी के जीने की कोई कला सीख ली है, तो हमें भी बताए, ताकि भावी पीढी बिना पानी के जीना सीख सके। नहीं तो तालाब के स्थान पर मॉल बनाना क्या उचित है? आज हो यही रहा है। पानी को बरबाद करने वालो यह समझ लो कि यही पानी तुम्हें बरबाद करके रहेगा। एक बूँद पानी का मतलब एक बूँद खून, यही समझ लो। पानी आपने बरबाद किया, खून आपके परिवार वालों का बहेगा। क्या अपनी आँखों को इतना सक्षम बना लोगे कि अपने ही परिवार के किसी प्रिय सदस्य का खून बेकार बहता देख पाओगे? अगर नहीं, तो आज से ही नहीं, बल्कि अभी से पानी की एक-एक बूँद को सहेजना शुरू कर दो। अगर ऐसा नहीं किया, तो मारे जाओगे।

वैश्विक तापमान यानी ग्लोबल वार्मिंग आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है। इससे न केवल मनुष्य, बल्कि धरती पर रहने वाला प्रत्येक प्राणी परेशान है। ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए दुनिया-भर में प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन समस्या कम होने के बजाय साल-दर-साल बढ़ती ही जा रही है। चूंकि यह एक शुरुआत भर है, इसलिए अगर हम अभी से नहीं संभलें तो भविष्य और भी भयावह हो सकता है। आगे बढ़ने से पहले हम यह जान लें कि आखिर ग्लोबल वार्मिंग है क्या?

क्या है ग्लोबल वार्मिंग?

जैसा कि नाम से ही साफ है, ग्लोबल वार्मिंग धरती के वातावरण के तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी है। हमारी धरती प्राकृतिक तौर पर सूर्य की किरणों से ऊष्मा प्राप्त करती है। ये किरणें वायुमंडल से गुजरती हुई धरती की सतह से टकराती हैं और फिर वहीं से परावर्तित होकर पुनः लौट जाती हैं। धरती का वायुमंडल कई गैसों से मिलकर बना है जिनमें कुछ ग्रीनहाउस गैसें भी शामिल हैं। इनमें से अधिकांश धरती के ऊपर एक प्रकार से एक प्राकृतिक आवरण बना लेती हैं। यह आवरण लौटती किरणों के एक हिस्से को रोक लेता है और इस प्रकार धरती के वातावरण को गर्म बनाए रखता है। गौरतलब है कि मनुष्यों, प्राणियों और पौधों के जीवित रहने के लिए कम से कम 16 डिग्री सेल्शियस तापमान आवश्यक होता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि ग्रीनहाउस गैसों में बढ़ोतरी होने पर यह आवरण और भी सघन या मोटा होता जाता है। ऐसे में यह आवरण सूर्य की अधिक किरणों को रोकने लगता है और फिर यहीं से शुरू हो जाते हैं ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव।

क्या है ग्लोबल वार्मिंग की वजह– ग्लोबल वार्मिंग के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार तो मनुष्य और उसकी गतिविधियां ही हैं। अपने आप को इस धरती का सबसे बुध्दिमान प्राणी समझने वाला मनुष्य अनजाने में या जानबूझकर अपने ही रहवास को खत्म करने पर तुला हुआ है। मनुष्य जनित इन गतिविधियों से कार्बन डाइआक्साइड, मिथेन, नाइट्रोजन ऑक्साइड इत्यादि ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में बढ़ोतरी हो रही है जिससे इन गैसों का आवरण सघन होता जा रहा है। यही आवरण सूर्य की परावर्तित किरणों को रोक रहा है जिससे धरती के तापमान में वृद्धि हो रही है। वाहनों, हवाई जहाजों, बिजली बनाने वाले संयंत्रों, उद्योगों इत्यादि से अंधाधुंध होने वाले गैसीय उत्सर्जन की वजह से कार्बन डायआक्साइड में बढ़ोतरी हो रही है। जंगलों का बड़ी संख्या में हो रहा विनाश इसकी दूसरी वजह है। जंगल कार्बन डायआक्साइड की मात्रा को प्राकृतिक रूप से नियंत्रित करते हैं, लेकिन इनकी बेतहाशा कटाई से यह प्राकृतिक नियंत्रक भी हमारे हाथ से छूटता जा रहा है।

इसकी एक अन्य वजह सीएफसी है जो रेफ्रीजरेटर्स, अग्निशामक यन्त्रों इत्यादि में इस्तेमाल की जाती है। यह धरती के ऊपर बने एक प्राकृतिक आवरण ओजोन परत को नष्ट करने

का काम करती है। ओजोन परत सूर्य से निकलने वाली घातक पराबैंगनी किरणों को धरती पर आने से रोकती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस ओजोन परत में एक बड़ा छिद्र हो चुका है जिससे पराबैंगनी किरणें सीधे धरती पर पहुंच रही हैं और इस तरह से उसे लगातार गर्म बना रही हैं। यह बढ़ते तापमान का ही नतीजा है कि ध्रुवों पर सदियों से जमी बर्फ भी पिघलने लगी है। विकसित हो या अविकसित देश, हर जगह बिजली की जरूरत बढ़ती जा रही है। बिजली के उत्पादन के लिए जीवाष्म ईंधन का इस्तेमाल बड़ी मात्रा में करना पड़ता है। जीवाष्म ईंधन के जलने पर कार्बन डायआक्साइड पैदा होती है जो ग्रीनहाउस गैसों के प्रभाव को बढ़ा देती है। इसका नतीजा ग्लोबल वार्मिंग के रूप में सामने आता है।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव– वातावरण का तापमान पिछले दस सालों में धरती के औसत तापमान में 0.3 से 0.6 डिग्री सेल्शियस की बढ़ोतरी हुई है। आशंका यही जताई जा रही है कि आने वाले समय में ग्लोबल वार्मिंग में और बढ़ोतरी ही होगी।

समुद्र सतह में बढ़ोतरी– ग्लोबल वार्मिंग से धरती का तापमान बढ़ेगा जिससे ग्लैशियरों पर जमा बर्फ पिघलने लगेगी। कई स्थानों पर तो यह प्रक्रिया शुरू भी हो चुकी है। ग्लैशियरों की बर्फ के पिघलने से समुद्रों में पानी की मात्रा बढ़ जाएगी जिससे साल-दर-साल उनकी सतह में भी बढ़ोतरी होती जाएगी। समुद्रों की सतह बढ़ने से प्राकृतिक तटों का कटाव शुरू हो जाएगा जिससे एक बड़ा हिस्सा डूब जाएगा। इस प्रकार तटीय इलाकों में रहने वाले अधिकांश लोग बेघर हो जाएंगे।

मानव स्वास्थ्य पर असर– जलवायु परिवर्तन का सबसे ज्यादा असर मनुष्य पर ही पड़ेगा और कई लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पडेगा। गर्मी बढ़ने से मलेरिया, डेंगू और यलो फीवर जैसे संक्रामक रोग बढ़ेंगे। वह समय भी जल्दी ही आ सकता है जब हममें से अधिकाशं को पीने के लिए स्वच्छ जल, खाने के लिए ताजा भोजन और श्वास लेने के लिए शुद्ध हवा भी नसीब नहीं हो।

पशु-पक्षियों व वनस्पतियों पर असर– ग्लोबल वार्मिंग का पशु-पक्षियों और वनस्पतियों पर भी गहरा असर पड़ेगा। माना जा रहा है कि गर्मी बढ़ने के साथ ही पशु-पक्षी और वनस्पतियां धीरे-धीरे उत्तरी और पहाड़ी इलाकों की ओर प्रस्थान करेंगे, लेकिन इस प्रक्रिया में कुछ अपना अस्तित्व ही खो देंगे।

शहरों पर असर– इसमें कोई शक नहीं है कि गर्मी बढ़ने से ठंड भगाने के लिए इस्तेमाल में लाई जाने वाली ऊर्जा की खपत में कमी होगी, लेकिन इसकी पूर्ति एयर कंडिशनिंग में हो जाएगी। घरों को ठंडा करने के लिए भारी मात्रा में बिजली का इस्तेमाल करना होगा। बिजली का उपयोग बढ़ेगा तो उससे भी ग्लोबल वार्मिंग में इजाफा ही होगा।

ग्लोबल वार्मिंग से कैसे बचें?– ग्लोबल वार्मिंग के प्रति दुनियाभर में चिंता बढ़ रही है। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस साल का नोबेल शांति पुरस्कार पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाली संयुक्त राष्ट्र की संस्था इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज और पर्यावरणवादी अमेरिका के पूर्व उपराष्ट्रपति अल गोर को दिया गया है। लेकिन सवाल यह है कि क्या पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वालों को नोबेल पुरस्कार देने भर से ही ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से निपटा जा सकता है? बिल्कुल नहीं। इसके लिए हमें कई प्रयास करने होंगे–

1. सभी देश क्योटो संधि का पालन करें। इसके तहत 2012 तक हानिकारक गैसों के उत्सर्जन को कम करना होगा।

2. यह जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं है। हम सभी भी पेट्रोल, डीजल और बिजली का उपयोग कम करके हानिकारक गैसों को कम कर सकते हैं।

3. जंगलों की कटाई को रोकना होगा। हम सभी अधिक से अधिक पेड लगाएं। इससे भी ग्लोबल वार्मिंग के असर को कम किया जा सकता है।

4. टेक्नीकल डेवलपमेंट से भी इससे निपटा जा सकता है। हम ऐसे रेफ्रीजरेटर्स बनाएं जिनमें सीएफसी का इस्तेमाल न होता हो और ऐसे वाहन बनाएं जिनसे कम से कम धुआँ निकलता हो।

❑

आत्म-परीक्षण

पूनम वर्मा, एम.ए., द्वितीय वर्ष (संस्कृत)

एक युवक किराने की दुकान पर गया। वहां सिक्का डालने वाला सार्वजनिक फोन लगा था। उसने एक रुपये का सिक्का डालकर एक नंबर डायल किया। युवक ने फोन पर किसी महिला से कहा, 'मैम, क्या आप मुझे अपने बगीचे की घास काटने का काम देंगी? महिला ने कहा मेरे पास तो पहले से ही एक युवक काम कर रहा है। इसलिए मुझे दूसरे युवक को जरुरत नहीं है।' युवक बोला, 'आपके यहां जो युवक काम करता है, मैं उससे भी कम पैसों में यह काम करने को तैयार हूं।' महिला ने कहा, 'लेकिन जो मेरे यहां काम करता है, मैं उसके काम से खुश हूं। बात पैसों की नहीं है, हमें जैसा काम चाहिए वैसा ही वह करता है।'

लड़का जोर देकर बोला, वह जितना काम करता है, मैं उससे ज्यादा काम करूंगा। सिर्फ बगीचा ही नहीं मैं आपके दालान और गैरेज को भी साफ कर दिया करूंगा। इतना ही नहीं आपके बगीचे को कॉलोनी का सबसे सुंदर बगीचा बना दूँगा।'

महिला ने कहा, 'माफ कीजिए, हमें इसकी जरूरत नहीं है।' लड़के ने फोन का रिसीवर रख दिया। जिस दुकान पर लड़का फोन से बात रहा रहा था उसका दुकानदार लड़के की बात ध्यान से सुन रहा था। उसे भी एक मेहनती लड़के की जरूरत थी। उसने लड़के से कहा, 'मुझे तुम जैसे काम करने वाले लड़के की ही तलाश थी। तुम मेरे यहां काम कर लो।' लड़के ने विनम्रतापूर्वक कहा, 'नहीं, धन्यवाद। मुझे काम नहीं चाहिए।'

दुकानदार हैरानी से बोला लेकिन अभी तो तुम फोन पर काम पाने के लिए किसी महिला के सामने गिड़गिड़ा रहे थे। मैं तुम्हें घर बैठे काम दे रहा हूं। तो तुम नखरे करने लगे।'

लड़का बोला, 'महोदय, सच्चाई यह है कि मुझे काम की जरूरत नहीं है। मैं तो अपने काम की परीक्षा ले रहा था। उसे महिला के घर काम करने वाला लड़का मैं ही हूँ।

कथा मर्म–हर व्यक्ति को अपने काम का आत्म–परिक्षण करते रहना चाहिए, तभी वह अपनी कमियों को जानकर सुधार पाता है। ❑

हार में एक जीत है

सोनू कुमार, एम.एस-सी. प्रथम वर्ष (रसायन विज्ञान)

तेरी हार में एक जीत है,
तू हार से न खुद को निराश कर,
जीतेगा भी तु, हारेगा भी तू,
यूँही खुद को तू निराश न कर
न परवाह कर, न फिक्र कर,
बस अपने इरादे बुलंद कर
तेरी हार में एक जीत है,
तू हार से न खुद को निराश कर।

विश्वास रखेगा अगर खुद पर तो
हर मुश्किल को पीछे छोड़ जायेगा,
एक दिन तेरी राहों में ऐसा भी आयेगा
नाम सग में माँ-बाप का रोशन कर जायेगा,
फिर तू ही तू नजर आयेगा,
तू ही तू नजर आयेगा।
तेरी हार में एक जीत है
तू हार से न खुद को निराश कर।

जो हौंसला रखते है आसमाँ छूने की,
परवाह नहीं करते गिर जाने की,
वो तो हमेशा जीतते है,
सोचते नहीं कभी हारने की
तेरी हार में एक जीत है,
तू हार से न खुद को निराश कर
जीतेगा भी तू, हारेगा भी तू,
यूँही खुद को तु निराश न कर।

❑

हमारी राष्ट्र भाषाः हिन्दी

गीता भारद्वाज, एम.ए. (संस्कृत)

देश को आजाद हुए साल हो गये परन्तु देश में अभी तक अनेक क्षेत्रों में अंग्रेजी भाषा का बोलबाला है और इसके विपरीत हिन्दी भाषा का निरन्तर ह्रास हो रहा है। मैं किसी भाषा के विरोध में नहीं हूँ और न ही इसे सीखने बालों के! ठीक है हमें अन्य भाषाओं का ज्ञान भी होना आवश्यक है परन्तु इसका अर्थ यह तो नहीं है कि हम अपनी मातृभाषा को ही भुला दें। वैसे आजकल कहीं-कहीं हिन्दी भाषा का प्रयोग भी देखने को मिलता है परन्तु उस मात्रा में नहीं जिस मात्रा में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग होता है। जैसे—न्यायालय, अस्पताल इत्यादि में अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग करते हैं।

हिन्दी की दशा को देखते हुए छत्तीसगढ़ के एक हाइकोर्ट ने निर्णय लिया है कि वह अपने सारे निर्णय हिन्दी में ही सुनायेगा और मैं आशा करती हूँ कि उसके इस निर्णय का सम्मान करते हुए अन्य प्रदेश भी उसका अनुसरण करें।

स्वतन्त्रता के समय यह निर्णय लिया गया था कि सन् 1965 तक अंग्रेजी से काम लिया जायेगा उसके पश्चात् इसे हटा दिया जायेगा और हिन्दी भाषा को मातृभाषा का पद दे दिया जायेगा। परन्तु सन् 1963 के अधिनियम के द्वारा हिन्दी कें साथ-साथ अंग्रेजी को भी सम्मिलित कर लिया गया।

विश्व के अन्य देश अपनी-अपनी भाषाओं पर गर्व करते हैं परन्तु हमारे भारतीय लोगों को अपनी भाषा को बुलाने में भी लज्जा आती है अपनी मातृभाषा को बोलने में पता नहीं नही कौन—सी समस्या होती है परन्तु हमारे देश में प्रायः यह देखा जाता है कि हमारे देशवासी हिन्दी और संस्कृत को ही तुच्छ दृष्टि से देखते हैं। हिन्दी बोलने में उनको अपमान का अनुभव होता है और अंग्रेजी बोलने में बडप्पन समझते हैं।

देश के कुछेक प्रान्तों में हिन्दी भाषा का विरोध करते हैं अरे दोस्तों-विरोध करना है तो विदेशी भाषाओं का करो अपनी मातृभाषा का ही क्यों? अन्य देशों से कुछ तो सीखो हिन्दी भाषा के लिए अपने-अपने हृदय में सम्मान लाओ तभी तो हमारी भाषा का विदेशों में प्रचार—प्रसार होगा। ❑

बिटिया

प्रियंका रानी, बी.एड. द्वितीय वर्ष

पग-पग संघर्ष करती हैं बिटिया
अजन्मी ही आज मरती हैं बिटिया
कुछ पाने की चाह में फूल सी खिली
अजन्मी खुशबु बिखेरती हैं बिटिया
बेटों से बढ़कर होती हैं बिटिया
चाँदनी-सी बढ़कर होती हैं बिटिया
इसी विरोधाभास में पलती हैं बिटिया
चुनौतियों के आगे न कभी हारने वाली
वक्त के हर साँचे में ढलती हैं बिटिया
पत्नी से माता बनी, भाई की बनी बहन सभी
रूपों में दर्द को सहती हैं बिटिया
विपरीत हालातों से जीकर भी खुद
दहेज की ज्वाला में जलती हैं बिटिया
पराये घर की रोशनी होकर भी
उम्र भरी सपने-सी विचारती हैं बिटिया
जिन्दगी भर-संघर्ष जीवन बिटिया का

❑

राष्ट्र ध्वज का मतलब

अनिल अग्रवाल, नैत्यिक लिपिक

गाँधी के तीन करीबी राजनीतिक सहयोगी थे, जवाहरलाल नेहरू, बल्लभभाई पटेल और सी राजगोपालाचारी जिन्हें राजाजी के नाम से जाना जाता था। एक युवा राष्ट्रवादी ने एक बार उन्हें महात्मा का हार्ट (दिल), 'हैंड' (हाथ) और 'हेड' (सिर) बताया था। नेहरू ने, गांधी के दिल के रूप में अपने खुद के करिश्मे और वक्तृत्व कौशल के जरिये महात्मा के संदेश को व्यापक लोगों तक पहुंचाया। पटेल ने, गांधी के हाथ के रूप में जमीनी स्तर पर राष्ट्रवादी आंदोलन की स्थापना की, कांग्रेस पार्टी का संचालन करने के साथ ही बड़े सत्याग्रहों को संगठित किया। राजाजी ने, गांधी के सिर या मस्तिष्क के रूप में नैतिक और बौद्धिक सुझाव दिए।

हाल ही में अहमदाबाद स्थित साबरमती अभिलेखागार में कुछ काम करते हुए मेरा सामना राजाजी की तीक्ष्णता और विद्वता से जुड़े कुछ नए उदाहरण से हुआ। 1937 में ब्रिटिश भारत के अनेक प्रांतों में कांग्रेस की सरकारें सत्ता में आई। पहली बार भारतीयों को सीमित अर्थों में ही सही स्वशासन का एहसास हुआ, इससे युवाओं में राष्ट्रवादी, भावनाओं का विस्तार हुआ, इसके साथ व्यापक रूप में तिरंगे का प्रचार भी दिखा, जिसे कांग्रेस ने राष्ट्रध्वज के रूप में पहले ही स्वीकार कर लिया था। इसमें रंगों का वैसा ही समायोजन था, जैसा कि स्वतंत्र भारत में स्वीकार किए गए ध्वज का था। सिर्फ एक अंतर था, वह यह कि इसके मध्य में अशोक चक्र दर्ज है। जबकि वहां पहले एक चरखा था।

कांग्रेस के मंत्रिमंडलों की स्थापना के एक वर्ष बाद अक्टूबर, 1938 में राजाजी ने गांधी को लिखा, 'यह आम घटना हो चुकी है, इसलिए आपका ध्यान इस ओर जाना चाहिए कि तीन रंगों वाले राष्ट्रीय ध्वज को इस तरह प्रदर्शित किया जा रहा है, मानो धार्मिक ध्वजों और प्रतीकों से उसकी प्रतिद्वंद्विता है या उन पर उसका प्रभुत्व है। एक ओर जहां हम सब चाहते हैं कि राष्ट्रीय ध्वज को एकता का प्रतीक होना चाहिए और सभी दिशाओं में निर्बाध प्रगति हासिल करने का संकल्प होना चाहिए, वहीं हम इस उद्देश्य को राष्ट्रीय ध्वज और अन्य ध्वजों तथा धार्मिक प्रतीकों के बीच प्रतिद्वंद्विता की कोशिश करके निष्फल कर रहे हैं।'

राजाजी उस समय मद्रास सरकार के प्रधानमंत्री थे। वह, बेशक खुद एक कट्टर राष्ट्रभक्त थे, लेकिन जैसा कि उन्होंने गांधी को लिखा कि वह हर जगह और हर मौकों पर कार्यकर्ताओं द्वारा ध्वज को प्रचारित करने के उत्साह से व्याकुल हैं, क्योंकि इससे कुछ वर्ग में राष्ट्र ध्वज के विरोधी पैदा हो गए हैं, जैसा कि पहले नजर नहीं आता था। राजाजी युवा राष्ट्रवादियों के इस अतिरिक्त उत्साह से चिंतित थे, क्योंकि इससे देश को नुकसान हो सकता था। उन्होंने गांधी को लिखा, 'ऐसा लगता है कि आपने जिन अनेकों आंदोलनों को खड़ा किया यदि आप उनकी फिर से व्याख्या करने को तैयार न रहते और गलतफहमियों को दूर न करते, तो उन्हें गलत समझा जा सकता था और उन्हें गलत दिशा की ओर मोड़ा जा सकता था। मुझे विशेष रूप से राष्ट्र ध्वज और हिंदुओं या मुसलमानों या अन्य समूहों के धार्मिक प्रतीकों के बीच किसी भी तरह से प्रतिद्वंद्विता खड़ा करने की मंशा से किए जाने वाले कृत्यों के परिणामों को लेकर भय है। मंदिरों के शिखरों और स्तंभों में राष्ट्रध्वज लगाने की प्रवृत्ति से धर्म की सार्वभौमिकता को लेकर मेरी समझ आहत होती है और ईश्वर के राष्ट्रीयकरण की कोशिश मुझे अनुपयुक्त लगती है।

हमेशा की तरह गांधी ने राजाजी के विचारों को गंभीरता से लिया। उल्लेखनीय है कि उन्होंने अपने सहयोगी के इस पत्र का जवाब निजी तौर पर नहीं, बल्कि सार्वजनिक रूप से अपनी पत्रिका हरिजन के अपने कॉलम में दिया और इसमें उन्होंने मद्रास के प्रधानमंत्री का जिक्र सिर्फ एक 'पत्र' के तौर पर किया। पत्र के

महत्वपूर्ण हिस्से का उल्लेख करते हुए गांधी ने पाठकों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया कि तिरंगे से क्या अपेक्षा है। उन्होंने लिखा, 'ध्वज की परिकल्पना इस तरह की गई है कि यह वास्तविक सांप्रदायिक एकता के जरिये अहिंसा को प्रदर्शित करे और अहिंसक श्रम को प्रदर्शित करे, जिसमें सबसे निचले तबके और सबसे ऊंचे तबके के लोग आसानी से देश की समृद्धि में बिना किसी भेदभाव के सहयोग कर सकें।

यह तो आदर्श था, लेकिन वास्तविक स्थिति अलग होती है। इसलिए गांधी ने लिखा, 'राष्ट्र ध्वज के विचार के लेखक के रूप में और वर्तमान में यह ध्वज जो भाव प्रदर्शित करता है, उसे देखते हुए मुझे इस बात का दुख है कि इसका किस तरह से उपयोग किया जा रहा है और किस तरह इसकी आड़ में हिंसा को छिपाया जा रहा है।' वह राजाजी से सहमत थे कि चूंकि ध्वज कोई धार्मिक प्रतीक नहीं है और सभी धर्मों में सामंजस्य को प्रदर्शित करता है, इसलिए धार्मिक जुलूसों में, या मंदिरों में या धार्मिक समारोहों में इसकी कोई जगह नहीं है।

गांधी ने इस बात पर भी जोर दिया कि ध्वज अहिंसा का एक प्रतीक है, इसलिए इसे विनम्र भी होना चाहिए। ब्रिटिश भारत के नौ प्रांतों में से सात में कांग्रेस की सरकारें थीं, मगर गांधी ने कहा कि,'मौजूदा तनाव की स्थिति में, मैं तब तक सरकारी भवनों या नगरपालिका के कार्यालयों में इसे नहीं फहराऊंगा, जब तक कि इसे न केवल भारी मतों से, बल्कि सर्वसम्मति से स्वीकृति नहीं मिल जाती।

इस दिलचस्प संवाद को आज भुला दिया गया है और मैंने इसका जिक्र यहां इसलिए किया है, क्योंकि इसका सीधा संबंध वर्तमान से है। यह दिखाता है कि गांधी, जिन्हें हम राष्ट्रपिता कहते हैं, वह सारे भारतीयों पर उस ध्वज का सम्मान किए जाने के लिए बनाए जाने वाले दबाव से भयभीत हो जाते, जिसे तैयार करने में उनकी अपनी-भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। गांधी यह देखकर आतंकित हो जाते कि किस तरह से आज स्वयंभू राष्ट्रवादी धमकी और जबर्दस्ती करते हैं और यहां तक कि राज्य की ताकत के दम पर नागरिकों पर दबाव बनाया जा रहा है कि वे राष्ट्रध्वज के आगे शीश झुकाएं। वह नहीं चाहते कि मंदिरों, चर्चों, मस्जिदों, कार्यालयों, स्कूलों और कॉलेजों में रोजाना राष्ट्रध्वज फहराना अनिवार्य किया जाए या फिर ध्वज की लंबाई निश्चित की जाए।

भारत में आज सत्ता में काबिज 'राष्ट्रवादी घृणा और बदले की भावना से भरे हुए हैं। वे ध्वज का उपयोग विभाजन और हिंसा को ढंकने के लिए कर रहे हैं। दूसरी ओर गांधी का राष्ट्रवाद समावेशी और रचनात्मक था। ध्वज की पूजा करने पर जोर देने के बजाय वह भारतीयों को सद्भाव और श्रम के सम्मान के आदर्श को मोड़ने का प्रयास करते थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के सत्तर वर्ष बाद हम इसका छोटा अंश भी पूरा नहीं कर पाए हैं। ❑

कॉलेज है आदर्श हमारा

गौरव कौशिक, बी.सी.ए. (तृतीय वर्ष)

मेरे प्यारे दोस्तो कभी भी, तुम यह मत जाना भूल
कॉलेज है आदर्श हमारा, अनुशासन यहाँ का मूल।
चारों ओर बनी है शाला, सुन्दर पौधे लगे हुए,
इसके प्रांगण में देखो, सुन्दर गमले सजे हुए।
शिक्षक खूब पढ़ाते, रखते विद्यार्थियों का ध्यान,
विद्यार्थी बड़े योग्य हैं, नित दिन करते हैं क्लास।
अनुशासन में योग सभी का, रखें नियमों का ध्यान
हम सब मिल बढ़ा रहे, इस कॉलेज का मान।
रहे वाटिका सदा महकती, हम इस उपवन के फूल,
अपने कॉलेज को याद रखो, कभी इसे ना जाना भूल। ❑

वाणिज्य और कैरियर

डॉ. तरुण बाबू, असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

परिचय– वर्तमान समय में, यह पाया गया है कि छात्रों को कक्षा 12 (वाणिज्य धाराओं) के बाद चुनने के लिए कैरियर विकल्प के बारे में और अधिक भ्रमित हो रहे हैं, क्योंकि इसके लिए चुनने के लिए बहुत सारे पाठ्यक्रम हैं। एक-एक को कैरियर विकल्प चुनने की जरूरत है जो भविष्य में अच्छा अवसर प्रदान करती है और साथ ही छात्रों के बीच इसे आगे बढ़ाने में रुचि पैदा करती है। कैरियर विकल्प का चयन छात्र के जीवन में एक महत्वपूर्ण निर्णय है, इस प्रकार इस क्षेत्र को उचित ध्यान और समझ के बाद समझदारी से बनाया जाना चाहिए। कक्षा 12 (वाणिज्य) के बाद 11 सर्वश्रेष्ठ कैरियर विकल्प की सूची यहां दी गई है।

बैचलर ऑफ कॉमर्स (बी. कॉम)– यह सबसे लोकप्रिय कोर्स है, जो अपने कक्षा 12 (वाणिज्य) को पूरा करने के बाद अधिकतम छात्र आगे बढ़ते हैं। यह एक सामान्य डिग्री कोर्स है जो 3 साल की अवधि के लिए जारी है। इन पाठ्यक्रमों के तहत कठिनाई का स्तर बहुत अधिक नहीं है, छात्रों को आसानी से किसी भी कॉलेज से इस कोर्स के तहत प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं। इसके तहत, छात्रों को इकोनोमिक्स, मार्केटिंग, कॉर्पोरेट, एकाउंटिंग, लॉ, व्यवसायिक पर्यावरण इत्यादि जैसे विषयों का अध्ययन करना है।

अर्थशास्त्र में स्नातक– कक्षा 12 (वाणिज्य) के बाद छात्रों के लिए यह एक और महत्वपूर्ण और उपयोगी विकल्प है। इस कोर्स के तहत, छात्रों को कई आर्थिक अवधारणाओं, विश्लेषणात्मक तरीकों, और अध्ययनों के संपर्क में मिलता है। उन सभी छात्रों को अर्थशास्त्र में रुचि रखने वाले इस पाठयक्रम को ले सकते हैं। जो लोग इस क्षेत्र में विशेषज्ञता प्रास करना चाहते हैं, उनके लिए यह सबसे अच्छा है। पाठयक्रम की अवधि 3 साल के लिए है। छात्र कृषि अर्थशास्त्र, मैक्रो अर्थशास्त्र, भारतीय अर्थशास्त्र, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, आदि जैसे विषयों का अध्ययन करते हैं।

बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (बीबीए)– बीबीए कक्षा 12 (वाणिज्य) के बाद छात्रों के बीच एक और लोकप्रिय विकल्प है। यह कोर्स 3 सालों के लिए है जहाँ छात्रों को व्यापार और उसके प्रशासन के बारे में जानकारी होती है। छात्रों को कई व्यावसायिक पहलुओं और तरीकों से अवगत कराया जाता है। यह उन लोगों के लिए सबसे अच्छा है जिनका व्यवसाय में दिमाग है और वे अपने व्यवसाय को उच्च स्तर तक ले जाना चाहते हैं।

विधि कानून में स्नातक (एल.एल-बी.)– कक्षा 12 (वाणिज्य) के बाद सभी अच्छे विद्यार्थियों के लिए एल.एल-बी. एक बहुत अच्छा विकल्प है। यह कोर्स द बार काउंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआई) द्वारा शासित है। कोर्स पूरा करने के बाद छात्र एक वकील या वकील के रूप में डिग्री प्राप्त करते हैं। इस कोर्स में संवैधानिक कानून, सम्पत्ति कानून, बैंकिंग कानून आदि जैसे विषयों का अध्ययन शामिल है।

चार्टर्ड अकाउंटेंसी (सीए)– यह एक पेशेवर स्तर का पाठ्यक्रम है जो एक पेशेवर शरीर द्वारा प्रशासित है, संस्थान के चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया इस कोर्स के तहत कठिनाई का स्तर अन्य स्नातक पाठयक्रमों की तुलना में काफी अधिक है। इस कोर्स को समाशोधन करने के बाद एक छात्र सीए के रूप में जाना जाता है और पेशेवर बन जाता है जिससे उन्हें उच्च रिटर्न मिल सकता है। छात्रों को टेक्सेशन, लॉ, ऑडिटिंग, कॉस्टींग इत्यादि जैसे विषयों का अध्ययन करना होगा। इस कोर्स को विभिन्न स्तरों में बाँटा गया है।

कम्पनी सचिव (सीएस)– जो छात्र कानून और सैद्धांतिक विषयों में रुचि रखते हैं, वे कक्षा 12 (वाणिज्य) के बाद कैरियर विकल्प के रूप में सीएस का चुनाव कर सकते हैं। यह एक

व्यावसायिक स्तर के पाठ्यक्रम के रूप में भी माना जाता है जो भारत के कंपनी सचिवों (आईसीएसआई) द्वारा आयोजित किया जाता है। इस पाठ्यक्रम में सीए की तरह विभिन्न स्तर शामिल हैं। इस कोर्स के दौर से गुजर करके, छात्रों को कंपनियों से संबंधित कामकाज और कानूनी अनुपालन समझा जाता है।

लागत और प्रबंधन लेखाकार (सीएमए)– यह इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एकाउंटेंट ऑफ इण्डिया द्वारा आयोजित एक और व्यवसायिक स्तर का कोर्स है। इसका पाठ्यक्रम सीए और सीएस के समान ही अलग-अलग स्तरों में बांटा गया है। इस छात्र के तहत प्रबंधन लेखांकन से संबंधित लागत, योजना, नियंत्रण और विभिन्न पहलुओं से संबंधित ज्ञान का अध्ययन और ज्ञान प्राप्त करना है।

प्रमाणित वित्तीय नियोजक (सीएफपी)– व्यक्तिगत वित, धन प्रबंधन, बीमा योजना, और म्यूचुअल फंड निवेश आदि जैसे क्षेत्रों में रुचि रखने वाले सभी छात्र इस कोर्स को आगे बढ़ा सकते हैं। यह कोर्स वितीय योजना मानक बोर्ड इंडिया (एफपीएसबी) द्वारा शासित और आयोजित किया जाता है।

पत्रकारिता और जन संचार– छात्र इस कैरियर विकल्प को भी चुन सकते हैं, जहां वे देश में मौजूदा आर्थिक रुझानों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। कोर्स की अवधि तीन साल की है, जिसे आसानी से इस कोर्स की पेशकश करते हुए किसी भी कॉलेज से पूरा किया जा सकता है। इस कोर्स को पूरा करने के बाद उम्मीदवार आसानी से किसी मीडिया हाउसों (प्रिंट और डिजिटल मीडिया) में नौकरियाँ प्राप्त कर सकते हैं।

होटल प्रबंधन पाठ्यक्रम– छात्र विभिन्न होटल प्रबंधन पाठ्यक्रमों के लिए भी जा सकते हैं। यह कोर्स 3 से 5 साल की समय सीमा के लिए अलग-अलग हो सकता है, जिसके बाद होटल उद्योग में अच्छा रिटर्न मिलता है। यह कोर्स उन सभी छात्रों के लिए अच्छा है जो हॉस्पिटैलिटी सेक्टर में रूचि रखते हैं। पाठयक्रम सरकारी क्षेत्र के साथ ही निजी क्षेत्र दोनों में छात्रों के लिए महान रोजगार के अवसर प्रदान करता है।

सांख्यिकी में स्नातक– यह कक्षा 12 (वाणिज्य) के बाद छात्रों के लिए अभी एक और पाठयक्रम उपलब्ध है। गणित और सांख्यिकी में रूचि रखने वाले सभी छात्र इस पाठयक्रम को आगे बढ़ा सकते हैं। कोर्स की अवधि 3 साल है छात्रों को संभावना, सांख्यिकीय विधियों, क्रम परिवर्तन आदि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। ब्रुकनर अंग्रेजी उपन्यासकार और कला इतिहासकार अनीता ने वाणिज्य के बारे में कहा– "महान किताबों में सिखाया जाने वाला सबक भ्रामक है वास्तविक जीवन में वाणिज्य शायद ही कभी बहुत सरल है और ऐसा कभी नहीं।" ❑

गुरू का महत्व

शीतल, बी. कॉम. प्रथम वर्ष

आप ही है संसार के ज्ञाता
आप ही है पिता और माता
आप से ये संसार जुड़ा
आपसे ही ज्ञान का भण्डार भरा।
राहों में काँटों पर चलना आप सिखाते हैं
कठिनाइयों में गिरने वाले को आप ही उठाते हैं
इतनी आसानी से आप मिल जाते हैं
नसीब वाले होते है वे लोग
जो गुरू ज्ञान से भी तर जाते हैं।
काँटो पर राह बनाना गुरू ही तो बताते हैं
कठिनाइयों से गले मिलना आप ही तो बताते हैं
दुख कब होता है कैसे उभर जाते हैं
सुख कब होता है। कैसे भूल जाते हैं।
फूल कब आते कब काँटे झड़ जाते हैं
इन सबका ज्ञान आप ही तो कराते हैं।

❑

जहरीली हवा के खिलाफ

पंकज शर्मा, लैब असिस्टेंट, भौतिकी विभाग

दिल्ली समेत पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लोगों को वैसी हवा में सांस लेना पड़ रही है, जो स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है। यह समस्या सर्दियों के मौसम में बढ़ जाती है, जब मौसम प्रतिकूल होता है और प्रदूषण ऊपर उठ नहीं पाता। राष्ट्रीय वायु प्रदूषण निगरानी कार्यक्रम के तहत विभिन्न वायु प्रदूषण निगरानी केंद्रों के आंकड़ों के मुताबिक, पिछले हफ्ते से दिल्ली और आसपास के इलाकों में वायु प्रदूषण सूचकांक खतरनाक रूप से उच्च रहा। इस अवधि में पीएम 2.5 (2.5 माइक्रोमीटर से छोटे कण) का स्तर बेहद ऊंचा था। दिल्ली के कुछ निगरानी केंद्रों में कुछ खास घंटों के दौरान पीएम 2.5 का स्तर 1,000 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर रहा, जो निर्धारित 24 घंटे के मानक 60 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर से बहुत ज्यादा है। गाजियाबाद, नोएडा, फरीदाबाद और लखनऊ के निगरानी केंद्रों पर भी इसी तरह के रुझान देखे गए, जो गंगा के मैदानी इलाकों में प्रदूषण की समस्या को दर्शाते हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड 100 या उससे नीचे की वायु गुणवत्ता सूचकांक को संतोषजनक मानता है, पर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के ज्यादातर इलाकों में प्रदूषण का स्तर गंभीर और खतरनाक श्रेणी तक पहुंच गया है।

वायु प्रदूषकों के संकेद्रण के लिए दो कारक मुख्यतः जिम्मेदार हैं-विभिन्न स्रोतों से उत्सर्जन और मौसम। इस समय मौसम संबंधी स्थिति वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाती है। अक्टूबर से जनवरी में तापमान में कमी आती है, सतही वायु की गति कम होती है, वायुमंडलीय मिश्रित परत की ऊंचाई घट जाती है, जिस कारण वायु प्रदूषक जमीनी धरातल के आसपास घनीभूत हो जाते है। और लोगों के लिए जोखिम का कारण बनते हैं। उत्सर्जन स्रोतों में भारी वृद्धि हुई है, खासकर दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में, क्योंकि यह सबसे तेजी से विकास करने वाला क्षेत्र है। पीएस 2.5 और विभिन्न मानवीय गतिविधियों से उत्सर्जित होने वाली सल्फर डाइऑक्साइड, एनओएक्स, कार्बन ऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन जैसी गैसें मौसमी स्थितियों के साथ मिलकर वातावरण में प्रदूषण फैलाती हैं।

द एनर्जी ऐंड रिसोर्स इंस्टीटयूट (टेरी) के आकलन के मुताबिक, दिल्ली में करीब 40 फीसदी पीएम 2.5 के संक्रेद्रण में शहर के स्थानीय स्त्रोतों, मसलन निर्माण वाहन, सड़क की धूल कूड़ा जलाने आदि का हाथ होता है, और शेष के लिए एनसीआर के अन्य क्षेत्र तथा पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों के प्रदूषण के स्रोत जिम्मेदार हैं। इन स्रोतों में उद्योग, ऊर्जा संयंत्र, ग्रामीण रसोई में बायोमास ईंधन जलाना और खेतों में फसलों के अवशेष (पराली) जलाना शामिल हैं। हालांकि खतरनाक श्रेणी के वायु प्रदूषक उद्योग दिल्ली में प्रतिबंधित हैं, पर वे एनसीआर के अन्य क्षेत्रों में अब भी चल रहे हैं। एनसीआर में 4,500 से अधिक वायु प्रदूषणकारी उद्योग हैं। पंजाब और हरियाणा में पराली जलाने से दिल्ली और आसपास के इलाकों में प्रदूषण बहुत ज्यादा फैलता है। इस वर्ष भी सितंबर से पंजाब एवं हरियाणा के बड़े क्षेत्र में पराली जलाए जा रहे हैं, जो अक्तूबर के आखिरी हफ्ते में चरम पर पहुंच गया और अब भी जारी है। सरकार द्वारा प्रदूषण नियंत्रण के लिए कई कदम उठाए गए हैं, जिनमें बीएस-4 वाहनों की शुरुआत, ईंधन में एलपीजी की पैठ बढ़ाने, खुले में कूड़ा जलाने जैसी गतिविधियों की जांच के लिए टीमों का गठन शामिल हैं। हालांकि वे पर्याप्त नहीं हैं तथा और भी बहुत कुछ करने की जरूरत है। निजी वाहनों की भीड़ कम करने के लिए दिल्ली एवं एनसीआर क्षेत्र में बस आधारित परिवहन व्यवस्था बढ़ाए जाने की जरूरत है। पुराने वाहनों की, जो नई प्रौद्योगिकी से संपन्न वाहनों की तुलना में ज्यादा उत्सर्जन करते हैं, उन्नत आई ऐंड एम केंद्रों के माध्यम से निगरानी की जानी चाहिए। धीरे-धीरे पुराने वाहन हटाकर नए वाहन लाए जाने चाहिए।

कंजेशन प्राइसिंग एक अन्य उपाय है, जिससे न केवल प्रदूषण कम किया जा सकता है, बल्कि सड़कों से वाहनों की भीड़ घटाई जा सकती है। कृषि अवशेषों और कूड़ा जलाने पर प्रतिबंध को कठोरता से लागू करने की जरूरत है। ऐसी तकनीक लाए जाने की जरूरत है, जो कृषि अवशेषों को उपयोगी ऊर्जा में बदल सके। औद्योगिक क्षेत्रों में स्वच्छ कुशल प्रौद्योगिकी अपनाई जानी चाहिए। प्रदूषण नियंत्रण के लिए उद्योगों में सख्त मानक लागू करना चाहिए। पत्थर के फर्शों के निर्माण और वैक्यूम क्लीनर के इस्तेमाल से सड़क की धूल पर नियंत्रण किया जा सकता है। निर्माण क्षेत्र में उत्सर्जन नियंत्रण के दिशा निर्देशों को अनिवार्य रूप से लागू करना चाहिए और एनसीआर में सामग्रियों के उचित लोडिंग एवं अनलोडिंग निर्माण स्थलों पर पानी का छिड़काव और निर्माण क्षेत्रों को घेरने जैसे कदम उठाए जाने चाहिए।

वायु गुणवत्ता के मोर्चे पर आपात स्थितियों से बचने के लिए सबसे पहले हमें वैज्ञानिक तरीके से विकसित दीर्घकालीन वायु गुणवत्ता प्रबंधन योजना की आवश्यकता है। चूंकि अब हर वर्ष आपातकालीन स्थितियां पैदा होती हैं, इसलिए हमें कुछ विशिष्ट आपातकालीन उपाय करने की जरूरत है। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने 2016 में सर्दियों की धुंध को देखते हुए श्रेणीबद्ध कार्ययोजना जारी की, जिसे लागू करने की जरूरत है। पिछले वर्ष टेरी ने प्रदूषण स्तर पर तत्काल नियंत्रण के लिए एक आपातकालीन कार्य योजना सौंपी थी। उसमें हमने आपातकालीन स्थितियों के दौरान निम्नलिखित उपाय अपनाने की सिफारिश की थी-जिनमें बीएस-4 नियमों का अनुपालन न करने वाले ट्रकों (आवश्यक वस्तुओं को छोड़कर) के प्रवेश पर प्रतिबंध, सड़कों की व्यापक सफाई, वाहनों के फेरे घटाने और बच्चों को जोखिम से बचाने के लिए स्कूल बंद करने, निर्माण कार्य बंद करने तथा एनसीआर में ठोस, तरल ईंधन पर आधारित औद्योगिक गतिविधियों को बंद करने और सरकारी और निजी कर्मियों को घर से काम करने जैसे सुझाव शामिल हैं। ❑

सुविचार

विशाल शर्मा, बी.सी.ए. तृतीय वर्ष

1. आनन्द ही एक ऐसी चीज है जो आपके पास न होने पर भी आप दूसरों को बिना किसी असुविधा के दे सकते हैं।
2. हमारे व्यक्तित्व की उत्पत्ति हमारे विचारों में है इसलिए ध्यान रखें कि आप क्या विचारते हैं। विचारों का असर दूर तक जाता है।
3. हम जितना ज्यादा अध्ययन करते है, उतना ही हमें अपने अज्ञान का आभास होता जाता है।
4. जिस मनुष्य में सभ्यता और ईमानदारी नहीं, उसके लिए समस्त ज्ञान कष्टकारी है।
5. स्वयं से लड़े, बाहरी दुश्मन से क्या लड़ना जो स्वयं पर विजय प्राप्त कर लेता है, उसे ही आनन्द की प्राप्ति होती है।
6. खुद को खुश करने का बेहतरीन तरीका है किसी और को खुश करने की कोशिश करना।
7. समझदार व्यक्ति वे नहीं है जो अवसर की राह देखते है बल्कि वे है जो अवसर को अपने अधीन रखते है वे स्वयं अवसर के अधीन नहीं होते।
8. जीवन में तीन आर्शीवाद जरूरी है-बचपन में मां का, जवानी में महात्मा का और बूढापे में परमात्मा का।
9. ईश्वर मूर्तियों में नहीं आपकी भावनाओं में है और आत्मा आपका मन्दिर है।
10. दान गरीबी को खत्म करता है सदाचरण दुख को मिटाता है विवेक अज्ञान को नष्ट करता है और जानकारी भय समाप्त करती है। ❑

उद्यमिता गिरें, उठें और फिर चलें

काजल चौधरी, बी.कॉम. प्रथम वर्ष

जब भी हम कुछ सीखने, कुछ बनाने या कुछ करने का प्रयास करेंगे तो जाहिर है कि हमसे गलतियाँ भी हो सकती है। जैसे शुरू में जब हम म्यूजिक सीखने जाते हैं तो हारमोनियम पर सरगम बजाते हुए हमसे अचानक गलती से शुद्ध गंधार की जगह कोमल गंधार वाला बटन दब जाता है। इससे सरगम का सुर बिगड जाता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम म्यूजिक सीखना छोड दे इस गलती का फायदा यह होता है कि अगली बार जब हम सरगम बजाते है तो इस बात का ध्यान रखते हैं। इसलिए गलतियाँ होने पर निराश न हो बल्कि यह मानकर चले कि यदि हमसे गलती हुई है। तो वह हमे सिखाने के लिए है। आखिर गलतियाँ ही तो हमे सिखाती है।

- ❖ कोई भी नया काम हाथ में लेने से न डरे कोशिश तो यह होनी चाहिए कि हम आगे बढकर नया काम हाथ में ले और अपने लिए चुनौती मानकर उसे पूरा करें।
- ❖ शिशु चलना खुद ही सीखता है वह खुद ही खड़ा होता है। चलता है गिरता है लेकिन बार-बार गिरने के बावजूद आखिरकार वह खडा होकर चलना सीख जाता है। कोई भी चीज सीखने की सही प्रक्रिया है। इसलिए गिरने से कभी न डरे। खुद में आत्म विश्वास जगाकर कदम बढ़ाएँ हर राह आसान होती चली जाएगी।
- ❖ गलती होने पर शर्मिंदगी या ग्लानि का अनुभव ना करें, क्योंकि गलती सभी से होती है। इसका सबसे अच्छा तरीका यह है कि गलती होते ही आप यह सोचना शुरू कर दें कि गलती का क्या कारण था और कैसे आप उसे सुधार सकते हैं।
- ❖ यह मानकर चले कि गलती उसी से होती है जो कुछ नया करता है जो कुछ करेगा ही नहीं उससे न तो गलती होगी और न ही उसका विकास हो पाएगा। यह मांइडसेट से ही हम कोई बड़ा काम कर पाते हैं।
- ❖ आमतौर पर गलतियाँ शुरूआत में ही होती है। शुरूआती मुश्किलों को आपने पार कर लिया तो अपने पैरों पर खड़े होकर दौड़ सकते हैं।
- ❖ विफलताओं के बाद जो सफलता मिलती है वह हमारे अंदर गजब का आत्मविश्वास ला देती है। जिससे हम कोई भी काम सहजता से कर पाते हैं।
- ❖ गलतियों से हम तभी डरते हैं जब हमारे अंदर आत्मविश्वास नहीं होता अपने आत्म विश्वास को बढाएँ।
- ❖ हमें अपने निर्णय स्वयं लेने चाहिए। तभी हममें आत्मनिर्भरता आएगी और हमारा आत्म विश्वास जागेगा।

❑

आखिर क्यों?

प्रियंका शर्मा, एम.एस.सी. द्वितीय वर्ष (भौतिकी)

आखिर क्यों इंसान-इंसान की वजह से रोता है?
आतंकवाद ही हिंदुस्तान का दुश्मन है,
इस बात को कोई आखिर क्यों नहीं समझता है?
हिंदु हो या मुस्लिम फर्क नहीं पड़ता,
देश के साथ जो गद्दारी करे,
उसे इंसान कहलाने का कोई हक नहीं होता।
वह गद्दार है जिस थाली में खाते है, उसी में छेद करते हैं,
न जाने कितने मासूमों को मारकर, आतंकवाद को जन्म देते है।
सब मिलकर आखिर क्यों आतंकवाद का खात्मा नहीं करते,
देश की इज्जत के साथ खिलवाड़ करने वाले
गद्दारों को आखिर क्यों बेइज्जत नहीं करते?
उन्हें कैदी के नाम पर जेल में रखकर
सारी सुविधाओं के साथ करोड़ों रुपये खर्च करते है।
आखिर क्यों नहीं सोचते कि उन पैसों से,
न जाने कितने गरीबों को सहारा दे सकते हैं।
इक गुजारिश है सबसे हिन्दू मुस्लिम मुद्दा छोड़कर
देश को आतंकवाद से मुक्त करायें,
यदि तुम भारत माता के सुपुत्र हो तो
हर हिंदुस्तानी को आतंकवाद के खिलाफ जागरूक करायें।

❑

अनमोल वचन

सचिन चौधरी, बी.कॉम. प्रथम वर्ष

"वाणी" को "वाणी" बनाये
"वाणी" को "बाण" न बनाये।
क्योंकि "वाणी" बनेगी तो
जीवन में "संगीत" होगा।
और "बाण" बनेगी तो
जीवन में "महाभारत" होगा ॥
सबको इकट्ठा
रखने की ताकत
प्रेम में है और
सबको अलग
करने की ताकत
भ्रम में है।
कभी भी मन में भ्रम न पाले।
जल्द मिलने वाली
चीजें ज्यादा दिन तक
नहीं चलती और जो
चीज ज्यादा दिन तक
चलती है वो
जल्दी नहीं मिलती।
गरीब दूर तक चलता है... खाना खाने के लिए
अमीर दूर तक चलता है.... खाना पचाने के लिए।
किसी के पास खाने के लिये एक वक्त की रोटी नहीं है
किसी के पास रोटी खाने के लिये वक्त ही नहीं है ॥
कोई लाचार है इसलिए बीमार है कोई बीमार है इसलिए लाचार है।
कोई अपनों के लिए रोटी छोड़ देता है, कोई
रोटी के लिए अपनों को छोड़ देता है।

❑

दोस्ती

शोभा शर्मा, बी. कॉम., प्रथम वर्ष

दोस्ती खुदा का दिया हुआ
वह नायाब तोहफा है
दोस्ती से सारी खुशियाँ है
संगीत में सुर जिन्दगी में रंग
दोस्ती से भरे होते है।

दोस्ती शक्ति है तो कमजोरी भी
दोस्ती सूरज की तपती रोशनी है
तो कभी चाँद की ठण्डक है
दिल का रिश्ता है दोस्ती।

न उम्मीदों से उम्मीद की किरण है
दोस्ती सोचो तो पूरी दुनिया
लिखो तो कोरा कागज है दोस्ती।
दोस्ती वह प्यारा सा बन्धन है
जो पक्षी की तरह खुले आसमान में
पंख फैलाये उडती है
ये प्यारा सा रिश्ता है दोस्ती।

❑

हमारे जीवन में विद्या का महत्व!

तमन्ना चौधरी, बी.कॉम. प्रथम वर्ष

विद्या का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व है। विद्या हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। जो हमारी आखिरी सांस तक हमारे साथ रहता है इसे अपने जीवन से अलग नहीं करा जा सकता। क्योंकि अगर हम कहे की विद्या की कोई सीमा है, तो यह कहना गलत होगा, क्योकि चाहे बड़े हो या फिर छोटे उन्हें अपने जीवन के हर पड़ाव पर या इसकी आवश्यकता होती है। लेकिन आजकल यह देखा जाता है, कि बहुत से बच्चे इण्टरमीडिएट होते है। अपने आप को विद्यापूर्ण समझने लगते है। और अपने कॉलिज लाईफ को मजे से व्यतीत करते है। मुझे लगता है कि वे नहीं जानते कि ये दिन पढ़ाई के है और इन दिनो को उन्हें यूहीं नहीं जाने देना चाहिए। उन्हें समझना चाहिए कि असली पढ़ाई तो अब शुरू हुई है। विद्या से ही प्रत्येक व्यक्ति अपनी मंजिल पर जाने की कोशिश करता है, माना कि कुछ को अपनी मंजिल प्राप्त नहीं होती, फिर भी विद्या व्यर्थ नहीं जाती, उसका कही न कही तो इस्तेमाल जरूर होता है या तो स्थान घर हो या व्यापार आदि। इसलिए विद्या एक ऐसी कुंजी है, जो कभी व्यर्थ नहीं जाती। विद्या धन सभी धनों में प्रधान है इसे इस उदाहरण से अवश्य अच्छे से समझा जा सकता है–

न चौरहार्य न च राजहार्यं, न भ्रातृभाज्यं न च भारकार्र!
व्यये कृते वर्द्धत एवं नित्यं, विद्याधन सर्वधन प्रधानम् ।।

अर्थ– विद्या एक ऐसा धन है, जो न तो चोर द्धारा चुराया जा सकता है, न राजा द्धारा छीना जा सकता है, न भाई द्धारा बांटा जा सकता है, और न ही भारकारक है, तथा व्यय करने से नित्य बढ़ता है, जो सब धनों में प्रधान है।

अभी तो असली मन्जिल पाना बाकी है, अभी
तो इरादों का इम्तेहान बाकी है!
अभी तो तोली मिटटी भर जमीं, अभी
तो तोलना आसमाँ बाकी है। ❑

अपने व्यक्तित्व को बदलिये

दीपक शर्मा, लेखाकार

अपने आपको बदल लेना, आपके हाथ की बात है। परिस्थितियों को बदलना आपके हाथ की बात नहीं, लोगों को अपनी मर्जी से बदलना आपके हाथ की बात नहीं जो आपके हाथ की बात नहीं है, उसके लिये आप प्रयत्न करेंगे तो बेकार परेशान होते रहेंगे। आपके घर वालों को आपके आज्ञानुवर्ती बनना चाहिए, यह मत सोचिए। आप यह देखिए आप उन घर वालों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर सकते हैं कि नहीं, बस इतना ही काफी है और आगे बढ़िए मत। परिस्थितियाँ आपके अनुकूल बन जायेंगी, मत सोचिए। परिस्थितियाँ कहाँ बन पाती हैं, आदमी की स्थिति के अनुरूप।

श्री कृष्ण भगवान् सारे जीवन भर पुरुषार्थ तो करते रहे, पर परिस्थितियाँ कहाँ बनीं उनके साथ में, आप बताइये? गृह-कलह हुआ और सारे परिवार के लोग मारे गये, अंततः उनको अपना जो राज- पाट बड़ी मेहनत से जमाया था, सुदामा जी के हवाले करना पड़ा, तो बताइए आपकी परिस्थितियाँ अनुकूल हो सकती हैं? भगवान् की परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं हुई तो अगर आप ये सपना देखते हैं कि हमारी मनोकामना पूरी हो जायेगी और हमारी इच्छानुकूल परिस्थितियाँ बदल जायेंगी, ऐसा आप सोचते हैं, तो आपको नहीं विचार करना चाहिए।

यह दुनिया आपके लिये बनी हुई नहीं है। आपकी इच्छा पूर्ति के लिये पात्रता की और पूर्व संचय- कृत्यों की जरूरत है, वरना ऐसा आप क्यों सोचते हैं कि सब आपकी इच्छानुकूल हो जायेगा। आप स्वयं को बदल दीजिए। क्या बदल दें? बूढ़े से जवान हो जायें? नहीं, ये आपके हाथ की बात नहीं। ये शरीर प्रकृति का बनाया हुआ है और प्रकृति उसकी मालिक है। वो जब चाहती है, पैदा करती है और जब चाहती है, समेट लेती है। आप प्रकृति के मालिक हैं क्या? बुढ़ापे को जवानी में बदल सकते हैं क्या? न, मौत को जिन्दगी में बदल सकते हैं क्या, न। आदमी की सीमा है और जिस सीमा से आप बँधे हुए हैं, आप उसी सीमा की बात कीजिए, उसी सीमा का विचार कीजिए तो पूरा होना भी सम्भव है। वाला नहीं है। आप हैरानी में न पड़ें, जो उचित है, उसी को विचार करें, जो सम्भव है, उसी में हाथ डालें। आपके हाथों में ये सम्भव है कि अपने मन को बदल दें। अपने ढर्रे को बदल दें, अपने रवैयों को बदल दें, अपने सोचने के तरीके को बदल दें, अपने स्वभाव को बदल दें, यह बदल देना आपके लिये बिलकुल सम्भव है।

आप यहाँ से जायें तो आप एक ऐसी जिन्दगी लेकर जायें, जो सब किसी को बदली हुई मालूम पड़े। आकृति तो नहीं बदली जा सकती आपकी, पर प्रकृति बदल जायेगी। आकृति कैसे बदली जा सकती है? आकृति नहीं बदली जा सकती है। आपके शरीर की बनावट नहीं बदली जा सकती। आपका स्वभाव बदला जा सकता है।

अब तक तो आपकी जिन्दगी में दो काम शामिल रहे हैं- एक जिन्दगी के लिये काम शामिल रहा है, उसका नाम है- पेट भरना। दूसरे शब्दों में उसे लोभ कहते हैं। दूसरा काम आपके जिम्में रहा है— प्रजनन। शादी कर लेना, परिवार को आगे बढ़ाना और फिर परिवार के दायित्वों के वजन को कंधे पे उठाना। उस भारी वजन को उठाने के लिये उचित और अनुचित काम करते रहना। दिन और रात चिंता में डूबे रहना, पेट और प्रजनन के लिये। यही तो काम रहा है और बताइये, कौन- सा काम रहा। इन दो कामों के अलावा और आपने क्या काम कर दिया? चलिये, तीसरा एक और काम भी किया होगा आपने। अपने अहंकार की पूर्ति के लिये, ठाठ- बाट बनाने के लिये, लोगों की आँखों में चकाचौंध पैदा करने के लिये, हो सकता है आपने कुछ ऐसे काम किये हों, जिससे आपको बड़प्पन का आभास होता हो। बड़प्पन का आभास होता है। है नहीं बड़प्पन। दूसरों की आँखों

में चकाचौंध पैदा करके आप किस तरीके से बड़े बन पायेंगे। बड़ा बनना तो अपने व्यक्तित्व की कीमत और व्यक्तित्व के मूल्य बढ़ा देने के ऊपर है। आँखों में चमक तो कोई भी पैदा कर सकता है। आँखों में चमक से क्या है? आँखों में चमक तो तस्वीरें भी पैदा कर लेती हैं, मूर्तियाँ भी पैदा कर लेती हैं। बीमार आदमी को सजाकर बिठा दिया जाये तो वो भी चमक पैदा कर लेता है। चमक पैदा करना भी कुछ काम है क्या? उसमें अपने सिवाय अहंकार की पूर्ति के दूसरा कुछ है ही नहीं। हम बड़े आदमी हैं, बड़े आदमी हैं। अरे, आप क्या बड़े आदमी हैं? मन आपका बड़ा नहीं है, व्यक्तित्व आपका बड़ा नहीं है, संस्कार आपके बड़े नहीं हैं तो बड़प्पन का स्थायित्व कैसे रह पायेगा? सारी जिन्दगी आपकी इन कामों में खतम हो गई है।

अपनी जिन्दगी में कुछ नये काम शामिल करिये। हम अपने स्वभाव को बदल दें, हम अपने चिंतन को बदल दें, हम अपने आचरण को बदल दें। अपने कुटुम्ब के प्रति जो रवैया है, जो आपके सोचने का तरीका है, उसको आप आसानी से बदल सकते हैं और आपको बदल ही देना चाहिए। अपने समाज को प्रगतिशील बनाने के लिये, उन्नतिशील बनाने के लिये कुछ न कुछ योगदान देना। ऐसा निर्धारण अगर करके आप ले जायें, ऐसा कार्यक्रम यहाँ से बनाकर ले जायें, ऐसी तैयारी में जाते ही आप जुट जायें तो मैं ये कहूँगा कि आपका भविष्य इतना शानदार होगा कि आप देखकर के स्वयं दंग रह जायेंगे और जो भी आपके सम्पर्क में आयेंगे, वे सब ये कहते रहेंगे कि इस आदमी का कायाकल्प हो गया। आप ऐसा कर पायें तो सार्थक हो जाये, आपका ये शिविर।

संसार में रह करके हम अपने कर्तव्य पूरे करें। हँसी-खुशी से रहें, अच्छे तरीके से रहें, लेकिन इसमें इस कदर हम व्यस्त न हो जायें, इस कदर फँस न जायें कि हमको अपने जीवन के उद्देश्यों का ध्यान ही न रहे। अगर हम फँसेंगे तो मरेंगे। ❑

भारतीय विधि और मानवाधिकार

जितेन्द्र कुमार, कनिष्ठ सहायक

मानवाधिकारों के संदर्भ में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत मिली-जुली तस्वीर पेश करता है। भारत के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश। पीएन, भगवती ने एक बार कहा था कि भारत जैसे विकासशील देश में मानवाधिकारों का मुख्य बल सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक अधिकारों पर होना चाहिए न कि राजनीतिक और नागरिक अधिकारों पर परंतु भारतीय परिप्रेक्ष्य का सबसे सबल तत्व उसकी प्रबल न्यायपालिका है, जो स्वतन्त्रता के बाद के 60 वर्षों के इतिहास में एक-दो अपवादों को छोड़कर कभी भी कार्यपालिका की गुलाम नहीं रही, बल्कि मानवाधिकारों के संरक्षक के रूप में हमारे देश में कार्यशील है। आज हमारी कार्यपालिका और न्यायपालिका जीवन, स्वतंत्रता, सुरक्षा का अधिकार, दासता, मृत्युभाव से मुक्त, दारुण वेदना, अमानुषिक अत्याचार, अमानवीय व्यवहार दंड से मुक्ति, मनमाने ढंग से बन्दी बनाया जाना, विवाह करने, परिवार बनाने, सम्पत्ति रखने, कोई भी धर्म मानने, मत-निर्माण करने, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे मानवाधिकारों की समस्या का सार्थक निराकरण कर रहा है।

प्रो. उपेंद्र बख्शी के अनुसार-भारतीयों में अपीलीय न्यायालय न्यूनाधिक रूप में राज-व्यवस्था के प्रभाव से मुक्त रहे हैं। सन् 1975-77 के अप्रत्याशित समय को छोडकर भारतीय अपीलीय न्यायालय पूर्णतया स्वतंत्र रहे हैं और किसी भी स्तर पर वे कार्यपालिका के हाथों में नहीं रहे न्यायपालिका ने 'न्यायिक पुनरीक्षण' को एक संपूर्ण अधिकार मानते हुए यह विचार व्यक्त

किया है कि न्यायिक पुनरीक्षण का अधिकार उस स्थिति में भी इससे नहीं छीना जा सकता है जब पूरी संसद् इस विषय में एकमत हो। और भारत का यही प्रबल पक्ष है जो मानवाधिकारों के संरक्षण की तस्वीर उभारता है, किंतु इस तस्वीर का एक दूसरा पहलू है।

इसका ज्वलंत उदाहरण 'स्टिंग ऑपरेशन' के दौरान रंगे हाथों रिश्वत कांड में पकड़े गए प्रमुख राजनीतिक दलों के वे सांसद हैं, जिनका प्रकरण न्यायालय में ले जाने पर न्यायालय द्वारा संसद से स्पष्टीकरण माँगा है और संसद ने सर्वसम्मत से न्यायालय द्वारा भेजे गए किसी भी नोटिस का जवाब नहीं देने का तथा इस संबंध में न्यायालय को किसी भी प्रकार की अभिक्रिया न देने का निर्णय करना है। भारत में सशक्त न्यायपालिका, अल्पसंख्यक आयोग, पिछडा वर्ग आयोग आदि सरकारी संस्थाएँ मौजूद हैं, जो मानवाधिकारों के आर्थिक और सामाजिक पक्ष की प्रतिष्ठा के लिए प्रयासरत हैं, किंतु इसके दोषपूर्ण कार्यान्वयन से मानवाधिकार के हनन की घटनाएँ आम बन गई हैं। भारत में अस्पृश्यता विद्यमान है, बँधुआ मजदूरी विद्यमान है, बाल-श्रमिकों से काम कराया जा रहा है तथा उनके उज्ज्वल भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है, पुलिस की बर्बरता जारी है। भारत में पुलिस की छवि आम जनता के मनो-मस्तिष्क में अत्यंत विकृत रूप में है। वस्तुतः अपराध को रोकने वाले संस्थान न्यायालय पदलोलुप और धनलोलुप हो गए हैं। भारत में जो शक्तिशाली है उन्हें ही भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता खुले रूप में प्राप्त है। इस प्रकार कमजोर को अपराधी कर दिया जाता है। पुलिस-तंत्र, जो अपराध के ढाँचे का प्रमुख अवयव है अपराध-यंत्र के चालू होते ही मानवीय मूल्यों को चीरने लगता है।

आज भारत में मानवाधिकार के हनन के विभिन्न रूप विद्यमान हैं, जो आए-दिन मीडिया के माध्यम से आम जनता तक पहुँचते रहते हैं। इनके अंतर्गत चोरी, डाका, अपहरण, हत्या, अपमान, वेश्यावृत्ति, आतंकवाद, बलात्कार, उग्रवादियों द्वारा निरीहों की हत्या, जातीय व भाषाई तनाव, अलगाववाद आदि आते हैं। इसी प्रकार हमारे यहाँ पुलिस मुठभेड की संख्या में भी अप्रत्याशित वृद्धि होती जा रही है। कुल मिलाकर शक्ति का दुरुपयोग, अधिकारों का हनन, प्रताडना, भय और निरंकुशता का खतरा भारतीय परिवेश में व्याप्त हो गया है एमनेस्टी इंटरनेशनल सन् 1961 में लंदन में स्थापित एक ऐसी संस्था है, जिसका दावा है कि वह दुनिया भर में मानवाधिकारों की रक्षा के लिए सजग प्रहरी का काम करती है।

150 देशों में लगभग 3 लाख कार्यकर्ता समाचार-पत्रों, टीवी, चैनलों, स्वयं सेवी संस्थाओं, जागरूक बुद्धिजीवियों तथा लेखकों के माध्यम से प्रत्येक देश में ऐसी जानकारी एकत्र करते हैं, जिससे संबद्ध देश की सरकार तथा अन्य एजेंसियों द्वारा मानवाधिकार के हनन का मामला बनता है। यह संस्था प्रतिवर्ष एक रिपोर्ट प्रकाशित करती है, जिसमें प्रत्येक देश के बारे में उपर्युक्त घटनाओं का ब्योरा रहता है। इस संस्था के पास कोई कानूनी अधिकार तो नहीं है, परंतु यह मानवाधिकार हनन के विरूद्ध विश्व- जनमत तैयार करती है। विभिन्न देशों में सरकार विरोधी उग्रवादी संगठन एमनेस्टी से सीधे संबंध बनाए रखते हैं। इस संस्था ने पिछले कई वर्षों से भारत में पंजाब तथा कश्मीर मामले में लगातार ऐसी रिपोर्ट प्रकाशित की हैं जिसमें भारत की सुरक्षा एजेंसियों पर इन राज्यों में अत्याचार के आरोप लगाए गए हैं ।

भारत ने हर बार ऐसी रिपोर्ट का खंडन किया है और हर बार अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए इसके विरुद्ध तीव्र विरोध और रोष प्रकट किया है। अतीत में कई वर्षों तक इस संगठन का भारत के प्रति रवैया विद्वेषपूर्ण रहा है। आज संगठन द्वारा उन लोगों के मामले नहीं उठाए जाते जो हिंसक गतिविधियों में लिप्त हैं तथा निर्दोष आम जनता की हत्या कर मानवाधिकार का उल्लंघन कर रहे हैं। इस नकारात्मक रवैए के कारण भारत ने इस संगठन का देश में प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया था, किंतु इस संगठन और 'एशिया वाच' जैसे मानवाधिकार संगठनों पर लगाए गए प्रतिबंधों को विश्व समुदाय संदेह की दृष्टि से देखने लगा था। फलतः भारत ने इस संगठन को अपने देश में प्रवेश की इजाजत दे दी। हाल के वर्षों में प्रकाशित रिपोर्ट में एमनेस्टी ने आतंकवादियों और उग्रवादियों को जहाँ मानवाधिकारों के हनन का दोषी माना है, वहीं पुलिस-मुठभेड़ में हुई मौतों पर गहरी चिंता व्यक्त की है। ❑

वैदिक वाङःमय और पर्यावरण संस्कृति

कुशमाण्डे आर्य, अंशकालिक प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग

पर्यावरण एक व्यापक शब्द है। यह उन सम्पूर्ण शक्तियों, परिस्थितियों एवं वस्तुओं का योग है, जो भारत जगत को परावृत करती है तथा उनके क्रियाकलापों को अनुशासनित करती है। हमारे चारों ओर जो विराट प्राकृतिक परिवेश व्याप्त है उसे ही हम पर्यावरण करते हैं। परस्परावलबी संबंध का नाम पर्यावरण है। हमारे चारों और जो भी वस्तुएं परिस्थितियां एवं शक्तियाँ विद्यमान हैं वे सब हमारे क्रियाकलापों को प्रभावित करती है और उसके लिए एक दायरा सुनिशिचित करती है। इसी दायरे को हम पर्यावरण कहते हैं। यह दायरा व्यक्ति, गाँव, नगर, प्रदेश, महाद्वीप, विश्व अथवा सम्पूर्ण सौरमण्डल या ब्रह्मांड हो सकता है इसीलिए वैदिकालीन मनीषियों ने द्युलोक से लेकर व्यक्ति तक समस्त परिवेश के लिए शान्ति की प्रार्थना की है। शुक्ल यर्जुवेद में ऋषि प्रार्थना करता है द्यौः शान्तिरंतरिक्षं.... इसलिए वैदिक काल से आज तक चिन्तकों और मनीषियों द्वारा समय-समय पर पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता को अभिव्यक्त कर मानव-जाति को सचेप्त करने के प्रति अपने उत्तरदायित्त्व का निर्वाह किया गया है।

इस प्रकार द्युलोक से लेकर पृथ्वी के सभी जैविक और अजैविक घटक सन्तुलन की अवस्था में रहें; अदृश्य आकाश (द्युलोक) नक्षत्रयुक्त दृश्य आकाश (अन्तरिक्ष) पृथ्वी एवं उसके सभी घटक जल, औषधियाँ, वनस्पतियां सम्पूर्ण संसाधन (देव) एवं ज्ञान सन्तुलन की अवस्था में रहे तभी व्यक्ति और विश्व, शान्त एवं सन्तुलन में रह सकता है। प्रकृति में हमें जो कुछ भी परिलक्षित होता है, सभी सम्मिलित रूप में पर्यावरण की रचना करते हैं। जैसे—जल, वायु, मृदा, पादप और प्राणी आदि। अर्थात जीवों की अनुक्रियाओं को प्रभावित करने वाली समस्त भौतिक और जीविय परिस्थितियों का योग पर्यावरण है। इसलिए विद्वानों का मत है कि प्रकृति ही मानव का पर्यावरण है और यही संसाधनो का भंडार है।

वैदिक ऋषियों ने उन समस्त उपकारक तथ्यों को देख कहकर उनके महत्व को प्रतिपादित तो किया ही है, साथ ही मनुष्य के जीवन में उनके पर्यावरणीय महत्व को भी भलि-भाँति स्वीकार किया है। इन देवताओं के लिए मनुष्य का जीवन ऋणी हो गया और शास्त्रीय कल्पनाओं ने मनुष्य को पितृऋण के साथ साथ देवऋण से भी उन्मुक्त होने की और संकेत किया है। वह अपने कर्त्तव्य में देव ऋण से मुक्त होने के लिए भी कर्तव्य करें। ऋषियों ने उसके लिए यह मर्यादा स्थापित की है। पर्यावरण को सन्तुलित रखने के लिए जिन देवताओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। उनमें-सूर्य, वायु, वरूण (जल) एवं अग्नि देवताओ से रक्षा की कामना की गई। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में दिव्य, पार्थिव और जलीय देवों से कल्याण की कामना स्पष्ट रुप से उल्लिखित है। आधुनिक चिन्तन में पर्यावरण के दो भेदों का ही वर्णन मिलता है। वे हैं—

1. भौतिक व प्राकृतिक पर्यावरण-इसके अन्तर्गत वे तत्व सम्मिलित होते हैं। जो जैव-मण्डल का निर्माण करते हैं।
2. सांस्कृतिक या मानवीय पर्यावरण इसमें आर्थिक क्रियायें, धर्म, अन्धविश्वास, आवासीय दशायें एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ आदि सम्मिलित हैं। इस प्रकार यह तथ्य वैदिक और आधुनिक चिन्तन से स्वयं स्पष्ट होता है कि प्राणी-जगत का प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय तत्व देव केवल पार्थिव ही नहीं हैं अपितु उनका स्थान अंतरिक्ष और भूलोक भी है। वैदिक ऋषियों ने उन सभी से प्राणियों की मंगल-कामना एवं सुरक्षा चाही है। ❑

तकनीक से पस्त होती दुनिया

डॉ. विशाल शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

कुछ समय पहले तकनीक सबसे अच्छा उद्योग था। हर कोई गूगल, फेसबुक और ऐपल जैसी कंपनियों में काम करना चाहता था। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से , लोगों की मानसिकता बदल गई है। कुछ लोग । प्रौद्योगिकी उद्योग को तंबाकू उद्योग जैसा मानने लगे हैं-ऐसे निगम जो अरबों डॉलर की विनाशकारी लत लगाते हैं। निश्चित रूप से प्रौद्योगिकी उद्योग से जुड़े लोग, जो वास्तव में इस दुनिया को बेहतर बनाना चाहते हैं, इस रास्ते पर जाना नहीं चाहते। यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या वे अपनी कंपनियों को समाज से खारिज होने से बचाने के लिए कोई तीन जरूरी कदम उठा सकते हैं।

बड़ी 'प्रौद्योगिकी कंपनियों को लेकर मुख्यतः तीन आलोचनाएं हैं। पहला तो यही कि ये युवाओं को बर्बाद करती हैं। सोशल मीडिया अकेलेपन को खत्म करने का वायदा करता है, पर वास्तव में यह एकांत में वृद्धि करता है! इसके कारण सामाजिक बहिष्कार को लेकर एक तीव्र जागरूकता पैदा होती है। संदेश भेजने वाली तकनीक और अन्य प्रौद्योगिकियां आपको अपने सामाजिक संबंधों पर ज्यादा नियंत्रण प्रदान करती हैं, लेकिन दुनिया के साथ वास्तव में बहुत कम संलग्नता और बहुत कम बातचीत की तरफ प्रवृत्त करती हैं। -

जैसा कि जीन ट्विज ने अपनी किताब और आलेखों में दर्शाया है, जबसे स्मार्टफोन का प्रसार बढ़ा है, किशोर उम्र के बच्चों में दोस्तों के साथ बाहर निकलने या डेट पर जाने या फिर कुछ काम करने की दिलचस्पी कम हो गई है। आठवीं क्लास का बच्चा, जो सोशल मीडिया पर हफ्ते में दस घंटे से ज्यादा समय बिताता है, उसके उन बच्चों के, मुकाबले 56 फीसदी ज्यादा नाखुश रहने की संभावना होती है जो कम समय व्यतीत करते है। आठवीं क्लास का वह बच्चा, जो सोशल मीडिया पर बहुत ज्यादा समय बिताता है, उसके अवसादग्रस्त होने का खतरा 27 फीसदी बढ़ जाता है। जो किशोर दिन में तीन घंटे या उससे ज्यादा समय इलैक्ट्रिक उपकरणों के साथ बिताता है, उसके आत्महत्या करने का 35 फीसदी ज्यादा जोखिम होता है, संभवतः वह यह योजना बनाता है कि इसे कैसे करना है। तकनीक से बहुत ज्यादा प्रभावित लड़कियों ने अवसादग्रस्त लक्षणों में 50 फीसदी वृद्धि का अनुभव किया है।

तकनीक उद्योग की दूसरी खामी यह है कि यह पैसा कमाने की लत पैदा कर रहा है। तकनीकी कंपनियां समझती हैं कि कौन-सी चीज मस्तिष्क में डोपेमीन (आनंददायी रसायन, जो बड़ी संख्या में शारीरिक व मानसिक प्रक्रियाओं में शामिल रहता है) बनने का कारण बनती हैं और वे अपने उत्पादों को ऐसी तकनीक से लैस करती है, जो हमें आकर्षित कर अपनी गिरफ्त में कस लेता है। स्नैप करने वाले दास्तों को पुरस्कृत करता है और स्नैपचैट इस प्रकार नशे की लत को प्रोत्साहित करता है। खबरों को बिना सिर-पैर के तैयार किया जाता है, ताकि एक पेज देखने के बाद आप दूसरा पेज खोलें और इसी तरह अगला पेज, इस तरह यह लत व्यवहार का हिस्सा बन जाती है।

तीसरी आलोचना यह है कि ऐपल, अमेजन, गूगल और फेसबुक लगभग एकाधिकार रखते हैं और अपने उपयोगकर्ताओं के निजी जीवन पर हमले के लिए अपनी बाजार शक्ति का इस्तेमाल करते हैं और सामग्री निर्माता और छोटे प्रतिस्पर्धियों पर अनुचित शर्तें थोपते हैं। इस मोर्चे पर राजनीतिक हमला बढ़ रहा है। वामपंथी विचारधारा के लोग तकनीकी कंपनियों पर इसलिए आक्रमण करते हैं क्योंकि ये बड़े निगम हैं, जबकि दक्षिणपंथी लोग इन पर इसलिए हमला कर रहे हैं क्योंकि ये सांस्कृतिक रूप से प्रगतिशील हैं। राष्ट्रीय परिदृश्य पर तकनीकी कंपनियों के रक्षक बहुत कम होंगे।

जाहिर है, तकनीकी कंपनियों के लिए सबसे बेहतर उपाय

है कि आगे आएं और अपने प्रदूषण को साफ करें। टाइम वेल स्पेंट के त्रिस्टान हैरिस जैसे कार्यकर्ता हैं, जो तकनीकी दुनिया को सही दिशा में ले जाने की कोशिश कर रहे हैं।

बड़ी सफलता तभी मिलेगी, जब तकनीकी अधिकारी अपनी असली सच्चाई को स्वीकार करेंगे, उनकी तकनीक काम और खुशी के लिए बेहद उपयोगी है, जिसे सामान्य चेतना की जरूरत है लेकिन वे अक्सर सामाजिक बहिष्कार को जन्म देते हैं और चेतना के गहरे स्वरूपों को नष्ट करते हैं, जो लोगों के लिए जरूरी है।

'ऑनलाइन' (इंटरनेट) मानव संपर्क के लिए एक जगह है, अंतरंगता के लिए नहीं। यह सूचना

की जगह है, प्रतिबिंब के लिए नहीं। यह किसी व्यक्ति या स्थिति के बारे में आपको पहले रूढ़िवादी विचार देता है, लेकिन तीसरे पंद्रहवें या तैतालीसवें विचार के लिए यहां समय और जगह निकालना मुश्किल है। ऑनलाइन खोज की जगह है, लेकिन यह एकजुटता को हतोत्साहित करता है। यह आपका ध्यान खींचता है, लेकिन चीजों को हटाने के लिए उसे विशाल क्षेत्र में फैला देता है।

लेकिन हम तब बहुत खुश होते हैं, जब हम पूरे दिल से अपनी तमाम शक्तियों के साथ किसी एक बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं।''

रब्बी अब्राहम जोशुआ हेचल लिखते हैं कि हम दुनियावी कामकाज से इसलिए अवकाश नहीं लेते हैं कि ज्यादा ताकत के साथ फिर से वापसी करें, बल्कि हम जीवन के निर्णायक क्षणों को जीना। चाहते हैं। वह कहते हैं, काल में सातवां दिन वह महल है, जो हम बनाते हैं। यह आत्मा, आनंद और मितव्ययिता से बना है। काम और प्रौद्योगिकी से अलग हम चेतना की एक भिन्न स्थिति में प्रवेश करते हैं, समय और वातावरण के एक अलग आयाम में, एक खान, जहां आत्मा का कीमती धातु पाया जा सकता है।

कल्पना कीजिए कि हम जीवन की बेहतर चीजें देने का दावा करने के बजाय तकनीक ने खुद को दक्षतापूर्ण उपकरणों के रूप में पेश किया इसके नवाचार छोटे स्तर में हमारा समय बचा सकते हैं, इसलिए हम ऑफलाइन हो सकते हैं और जीवन में बेहतर चीजों का अनुभव कर सकते हैं। ❑

मृत्यु पर विजय की अमिट गाथा

सत्यपाल सिंह लोधी, अंशकालिक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग

यमराज को मृत्यु का देवता माना जाता है। माना जाता है कि यमलोक की शासन-व्यवस्था यमराज ही देखते हैं। जब हम यमलोक की चर्चा करते हैं, तो एकदम मृत्यु का भय सताने लगता हैं। इसके साथ ही हमकों भी मृत्यु का भय सताने की आशंका बन जाती है। लेकिन सत्य को भला कौन भयभीत कर सकता है, सत्य तो स्वयं सत्-चित-आनंदस्वरूप है। सत्य को ईश्वर का ही रुप माना गया है। इसलिए सत्य पर चलने वाले व्यक्ति की हमेशा जीत होती है। जैसा कि कहा गया है।—सत्यमेव जयते

नचिकेता एक ऐसा ही सत्यनिष्ठ बालक था, वाजश्रवा ऋषि के तरुण पुत्र नचिकेता ने जब देखा कि उसके पिता यज्ञ में आए हुए ब्राह्मणों को दूध नहीं देने वाली बूढ़ी व दुबली गायें दान कर रहे हैं, तो उसे बहुत दुख हुआ। उसने सोचा यह तो दान नहीं मिथ्याचरण है। मैं और कुछ तो नहीं कर सकता, पर पिता को इस पाप से बचाने के लिए स्वयं को ही दान की सामग्री के रूप में प्रस्तुत कर सकता हूँ।

ऐसा सोचकर वह अपने पिता से बार-बार प्रश्न करने लगा—''आखिरकार आप मुझे किसको दान कर रहे हैं पिताजी?'' उसका प्रश्न सुनकर वाजश्रवा क्रोधित हो गए और बोले—''जा

मैं तुझे यमदेव को देता हूँ।'' पिता के कथन की सत्यता की रक्षा के लिए नचिकेता ने यमलोक जाने का निश्चय कर लिया। वाजश्रवा ने उसे मनाने का प्रयास किया, परन्तु नचिकेता अपने संकल्प से पीछे हटने को तैयार नहीं था और अंततः वह यमदेव के द्वार पर पहुँच गया।

यमदेव उस समय यमलोक से बाहर गये हुए थे। फिर भी तीन दिन तक भूखे-प्यासे रहकर उसने यमदेव की प्रतीक्षा की। यमदेव आए। उसकी सत्यनिष्ठा से अत्यंत प्रभावित हुए और बोले—''वत्स! तुम मुझसे तीन वरदान माँग लो।'' पहले दो वर माँगते हुए नचिकेता बोला—''भगवान्! मेरे पिताजी का क्रोध शांत हो, वे मुझे पूर्व की भाँति प्रेम करें एवं उन पर उनके द्वारा किए गए दुष्कृत्य का पाप न लगें।'' दूसरा वर उसने यह माँगा कि कृपया मुझे यज्ञ के विज्ञान के विषय में बताएं, जिसको जानकर व्यक्ति स्वर्ग जाने में समर्थ होता है। यमदेव ने तथास्तु कहा। तीसरे वर के रुप में नचिकेता ने माँगा—''भगवान! मुझे मृत्यु और आत्मा का ज्ञान दीजिए।'' एक तरुण बालक के मुख से ऐसा सुनकर यमदेव भी अचंभित रह गए। यम ने इस आखिरी वर को टालने की भरपूर कोशिश की और नचिकेता को मृत्यु रहस्य और आत्मज्ञान के बदले संसार के सारे सुख, ऐश्वर्य देने का प्रलोभन दिया, पर नचिकेता को तो आत्मज्ञान ही चाहिए था। इससे कम उसे कुछ भी मंजूर नहीं था। उसने पीछे न हटने की ठान ली। उसकी सत्यनिष्ठा के सामने यमदेव को भी झुकना ही पड़ा। यह प्रलोभन भी यमदेव द्वारा नचिकेता की एक कठिन परीक्षा थी, जिससे वह सफल हो गए।

मृत्यु और आत्मा के रहस्य को समझाते हुए यमदेव, नचिकेता से बोले—''वस्स! मनुष्य का शरीर ब्रह्म की नगरी है। आत्मा के रूप में परमात्मा इसी नगरी में मनुष्य के हृदय में निवास करते हैं।

अपनी आत्मा के परमात्मा रूप ब्रह्मरूप का ध्यान करने से व्यक्ति-जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाता हैं। शरीर के मरने पर भी आत्मा का नाश नहीं होता; क्योंकि यह आत्मा शाश्वत, सनातन अजर-अमर हैं।''

''परमात्मा का वास क्या सचमुच मनुष्य के हृदय में होता हैं भगवन?''

नचिकेता ने पूछा। ''हाँ वत्स! मनुष्य का हृदय ब्रह्म को पाने का स्थान माना जाता है, क्योंकि आत्मा का निवास स्थान मनुष्य का हृदय है। आत्मा परमात्मा का ही स्वरूप होने के कारण परमात्मा का निवास स्थान भी है। अपने हृदय में भगवान का वास मानने वाला व्यक्ति यह मानता है कि दूसरों के हृदय में भी ब्रह्म इसी तरह विराज रहे हैं। इसलिए वह दूसरों को दुख, पीड़ा नहीं देता। किसी से घृणा भी नहीं करता। सारा जगत ही उसके लिए परिवार (ब्रह्ममय) होता हैं—

अयं निज परोवेति गणना लनघुचेत्साम्।
उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

नचिकेता ने पुनः प्रश्न किया—''फिर आत्मसाक्षात्कार आत्मज्ञान प्राप्त करने का क्या मार्ग है भगवन?'' यमराज बोले—''वत्स तुम्हारा प्रश्न बहुत ही सारगर्भित व संपूर्ण मानव समुदाय के लिए उपयोगी है। इसका उत्तर तुम ध्यानपूर्वक सुनो। ''हम इंद्रियों के माध्यम से जगत आदि विषयों के भोग में सुख पाते हैं, परंतु जिसे आत्मसाक्षात्कार, आत्मज्ञान की इच्छा हो उसे विभिन्न योग साधनाओं के माध्यम से अपनी इंद्रियों को विषय-भोगों से हटाने का बार-बार अभ्यास करते है। ऐसा करने से हमारी इन्द्रियाँ विषय भोगों से मुक्त हो जाती है। हृदय की चंचलता सदा के लिए समाप्त हो जाती है। हृदय परम पावन व पारदर्शी हो जाता है। ऐसा होने पर हृदय में स्वयं ही ब्रह्मज्ञान, आत्मवान की अग्नि प्रकट हो उठती है। उसका हृदय ब्रह्म के अखंड प्रकाश से जगमग हो उठता है। फिर जीवन मुक्त हो जाता है। व परम पद का अधिकारी बन जाता है। एक सच्चे शिष्य की भाँति नचिकेता ध्यान से यमदेव की सारी बातें सुन रहे थे। पूर्वजन्मों की तप साधना से उनका हृदय पहले ही धुल चुका था। अब मानो उस हृदय में ब्रह्म की अग्नि धधक उठी थी।

खुशी होकर वह अपने घर लौट आए। उनको देखते ही उनके पिता ने उनको अपनी गोद में भर लिया। पुत्र की सत्यनिष्ठा और आत्मज्ञान पाने की उत्कंठा देखकर व अब उसके आत्मज्ञान प्राप्त कर लेने पर स्वयं भी आत्मविभोर थे और आनंदित थे, नचिकेता, अपने बालपन में ही ऋषि बन चुके थे। ❑

पुस्तकालय

के.के. श्रीवास्तव, पुस्तकालय प्रभारी

पुस्तकालय वह स्थान है जहाँ विविध प्रकार के ज्ञान, सूचनाओं, स्रोतों, सेवाओं आदि का संग्रह रहता है। पुस्तकालय शब्द अंग्रेजी के लाइब्रेरी शब्द का हिंदी रूपांतर है। लाइब्रेरी शब्द की उत्पति लेटिन शब्द 'लाइवर' से हुई है, जिसका अर्थ है पुस्तक। पुस्तकालय का इतिहास लेखन प्रणाली पुस्तकों और दस्तावेज के स्वरूप को संरक्षित रखने की पद्धतियों और प्रणालियों से जुड़ा है।

पुस्तकालय शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– पुस्तक और आलय। पुस्तकालय उस स्थान को कहते हैं जहाँ पर अध्ययन सामग्री (पुस्तकें, फिल्म, पत्र-पत्रिकाएँ मानचित्र, हस्तलिखित ग्रंथ, ग्रामोफोन रेकार्ड एव अन्य पठनीय सामग्री) संगृहीत रहती है और इस सामग्री की सुरक्षा की जाती है। पुस्तकों से भरी अलमारी अथवा पुस्तक विक्रेता के पास पुस्तकों का संग्रह पुस्तकालय नहीं कहलाता क्योंकि वहाँ पर पुस्तकें व्यावसायिक दृष्टि से रखी जाती हैं। चीन के राष्ट्रीय पुस्तकालय में लगभग पाँच करोड़ पुस्तकें हैं और यहाँ के विश्वविद्यालय में भी विशाल पुस्तकालय हैं। इंपीरियल कैबिनो लाइब्रेरी के राष्ट्रीय पुस्तकालय की स्थापना 1881 ई. में हुई थी। इसके अतिरिक्त जापान में अनेक विशाल पुस्तकालय हैं। 1713 ई. में अमरीका के फिलाडेलफिया नगर में सबसे पहले चंदे से चलनेवाले एक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना हुई। लाइब्रेरी ऑव कांग्रेस अमरीका का सबसे बड़ा पुस्तकालय है। इसकी स्थापना वाशिंगटन में सन् 1800 में हुई थी। इसमें ग्रंथों की संख्या साढ़े तीन करोड़ है। पुस्तकालय में लगभग 2,400 कर्मचारी काम करते हैं। समय समय पर अनेक पुस्तकों का प्रकाशन भी यह पुस्तकालय करता है और एक साप्ताहिक पत्र भी यहाँ से निकलता है। अमरीकन पुस्तकालय संघ की स्थापना 1876 में हुई थी और इसकी स्थापना के पश्चात पुस्तकालयों, मुख्यतः सार्वजनिक पुस्तकालयों, का विकास अमरीका में तीव्र गति से होने लगा। सार्वजनिक पुस्तकालय कानून सन् 1849 में पास हुआ था और शायद न्यू हैंपशायर अमरीका का पहला राज्य था जिसने इस कानून को सबसे पहले कार्यान्वित किया। अमरीका के प्रत्येक राज्य में एक राजकीय पुस्तकालय है। सन् 1885 में न्यूयार्क नगर में एक बालपुस्तकालय स्थापित हुआ। धीरे-धीरे प्रत्येक सार्वजनिक पुस्तकालय में बालविभागों का गठन किया गया। स्कूल पुस्तकालयों का विकास भी अमरीका में 20वीं शताब्दी में ही प्रारंभ हुआ। पुस्तकों के अतिरिक्त ज्ञानवर्धक फिल्में, ग्रामोफोन रेकार्ड एवं नवीनतम आधुनिक सामग्री यहाँ विद्यार्थियों के उपयोग के लिए रहती है। आस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध शहर कैनबरा में राष्ट्रसंघ पुस्तकालय की स्थापना 1927 में हुई। वास्तव में पुस्तकालय आंदोलन की दिशा में यह क्रांतिकारी अध्याय था। मेलबोर्न में विक्टोरिया पुस्तकालय की स्थापना 1853 में हुई थी। विभिन्न पुस्तकालयों का अपना क्षेत्र और उद्देश्य अलग अलग होता है और वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनुकूल रूप धारण करते हैं। इसी के आधार पर इसके अनेक भेद हो जाते हैं जैसे- राष्ट्रीय पुस्तकालय, सार्वजनिक पुस्तकालय, व्यावसायिक पुस्तकालय, सरकारी पुस्तकालय, चिकित्सा पुस्तकालय और विश्वविद्यालय तथा शिक्षण संस्थाओं के पुस्तकालय आदि। ❑

चार पत्नियाँ

कु. काजल, बी.काम. द्वितीय वर्ष

शहर में एक व्यापारी अपनी चार पत्नियों के साथ रहता था। वह चौथी पत्नी से ज्यादा प्यार करता था। वह तीसरी पत्नी से भी प्यार करता था उसे उस पर बहुत गर्व था लेकिन वह उसे अपने मित्रो से दूर रखता क्योंकि उसे डर था कि वो उसे छोड़कर किसी दूसरे आदमी के साथ भाग न जाए। वही दूसरी पत्नी उसकी बहुत देखभाल करती थी। और व्यापारी उस पर काफी भरोसा करता था व्यापारी की पहली पत्नी बहुत वफादार थी लेकिन वो उससे प्यार नही करता। ना तो उसे देखता और ना उसकी देखभाल करता। एक दिन व्यापारी बीमार पड़ गया उसकी बीमारी लम्बे समय तक चलती गई। और व्यापारी को लगा कि वह मरने वाला है। उसने अपने जीवन के बारे मे सोचा और खुदा से कहा कि मेरी चार पत्नियाँ है! लेकिन मरूँगा अकेला ही कितना अकेला हूँ मैं...

- तब उसने अपनी चौथी पत्नी की बुलाया और पूछा कि तुमसे मैं सबसे ज्यादा प्यार करता हूँ मँहगे कपड़े और स्वादिष्ट मिठाई खरीदकर देता हूँ अब में मरने वाला हूँ तो क्या तुम मेरा साथ दोगी और मेरे साथ चलोगी! पत्नी ने कहा, बिल्कुल नही.....
- अब व्यापारी ने तीसरी पत्नी को बुलाया और कहा अब जब में मरने वाला हूँ तो क्या तुम मेरा साथ दोगी।
  'यहाँ जिन्दगी बहुत अच्छी है, तीसरी पत्नी ने जबाव दिया।
- तब उसने दूसरी पत्नी को बुलाया और पूछा जब मैं मर जाऊँगा तो क्या तुम मेरा साथ दोगी मेरे साथ चलोगी। तीसरी पत्नी ने जवाब दिया।
  'मुझे माफ करना
- तब एक आवाज आई 'मैं तुम्हारा साथ दूंगी और तुम्हारे साथ चँलूगी जहाँ तुम जाओगें, व्यापारी ने देखा ये पहली पत्नी की आवाज थी।
- दरअसल हम सबके जीवन में चार पत्नियाँ होती है चौथी पत्नी हमारा 'शरीर' होता है तीसरी पत्नी हमारी 'सम्पत्ति' होती है। हमारी दूसरी पत्नी हमारा 'परिवार और मित्र' होते है हमारी पहली पत्नी हमारी 'आत्मा' होती है संसारिक खुशियो के लिए जिसकी हम अपेक्षा करते है।
  केवल यही वर चीज है जो हमारा साथ देगी और जहाँ हम जाएगे हमारे साथ-साथ जाएगी इसीलिए हमे अपने सम्बन्धो को मजबूत करना चाहिए और इसकी देखभाल करनी चाहिए।
  परवाह उनकी मत करो, जिनका विश्वास वक्त के साथ बदल जाए।
  परवाह सदा उनकी करो, जिनका विश्वास तब भी आप पर रहे जब आपका वक्त बदल जाए। ❑

मेहनत का फल

निक्की कुमारी, बी.कॉम. प्रथम वर्ष

मेहनत का फल हमेशा मिलता है। यदि कोई किसान भी अपने खेतों में मेहनत करता है तो उसकी मेहनत का फल उसे जरूर मिलता है। अगर हम भी अपनी मेहनत से कोई काम करेगे तो हमें उस मेहनत का फल जीवन में एक ना एक दिन अवश्य मिलता है। इसलिए हमें कोई भी कार्य करना हैं तो उस कार्य को हमें बड़ी श्रद्धा और लगन के साथ करना चाहिए जैसे पढ़ाई।

मैने बचपन में जो भी देखा है, सुना है, और पढ़ा भी है कि जितने भी छात्र-छात्राएँ है वे अपनी मेहनत से कोई कार्य करना नहीं चाहते बल्कि दूसरों पर विश्वास करते है, और भरोसा भी रखते है वह उन पर इतना भरोसा रखते है कि परीक्षा के समय या परीक्षा में अपने प्रश्न का उत्तर सही होते हुए भी उनके कहने पर अपना उत्तर गलत कर देते है! यह बिल्कुल गलत है! हमें हमेशा कोई कार्य करना हैं तो अपनी मेहनत और अपने ऊपर विश्वास रखना चाहिए,

दूसरों के भरोसे नही रहना चाहिए!

ईश्वर में स्वयं कहा है—"मेहनत का फल हमेशा मीठा होता है।" ❑

नौकरी

कु. अंजू, बी.सी.ए. तृतीय वर्ष

बड़ी हसीन होगी तू ऐ! नौकरी
सारे युवक आज तुझपे ही मरते है,
सुख चैन खोकर चटाई पर सोते है,
सारी रात जगकर पन्ने पलटते है।
दिन में तहरी, रात को मैगी,
आधे पेट ही खाकर तेरा नाम जपते है,
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है।
अंजान शहर में छोटा रास्ता रूम लेकर,
किचन बैड रूम सब उसी में सहेज कर,
चाहत मैं तेरी अपने माँ-बांप और
दोस्ती से दूर रहते है,
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है।
राशन की गठरी सिर पे उठाये,
अपनी मायूसी और मजबूरियाँ खुद ही छुपाये,
खचाखच भरी ट्रेन में बिना
टिकट के रिस्क लेके आज सफर करते है,
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है।
इन्टरनेट अखबारो में तुझको तलाशते है,
तेरे लिए पत्र पत्रिकाएँ पढ़ते-पढ़ते
तीस साल तक के जवान कुँवारे फिरते है,
तू किसनी हसीन है ऐ! नौकरी
सारे युवा तुझपे ही मरते है... ॥ ❑

जिंदगी

लोकेश कुमार, बी.काम. द्वितीय वर्ष

बड़ी अजीब सी है। ये जिदंगी।
जो चाहा कभी पाया नही और जो पाया वो कभी सोचा नही और जो सोचा वो कभी मिला नही।।
जो खोया हुआ है। वह याद आता है।
और जो पाया है। वह सम्भाला जाता नही।।
क्युँ अजीब सी है। ये जिंदगी, कोई सुलझा पाता नही जीवन में कभी समझौता करना पड़े। तो कोई बड़ी बात नही।
क्योंकि झुकता वही है, जिसमे जान होती है। अकड़ तो मूर्खता की पहचान होती है।
जिंदगी जीने के दो तरीके होते है।
पहला जो पसंद आये उसे हासिल करना सीखे
और जो पसंद आये उसे हासिल करना सीखे
और जो हासिल है। उसे पसंद करना सीखो।।
जिंदगी जीना आसान नही होता।।
बिना संघर्ष के कोई महान नही होता।।
जब तक ना पड़े हथोड़ो की चोट
पत्थर भी भगवान नही होता।
जिंदगी बहुत कुछ सिखाती है।
कभी हँसाती है। तो कभी रुलाती है।।
पर जो हर हाल मे खुश रहता है।
जिंदगी उसी के आगे सर झुकाती है।
चेहरे की हँसी से हर गम छुपाना है।
बहुत कुछ बोलना पर कुछ न छिपाना
खुद न रुठो पर सबको मनाना
बस जीते चले जाना। बस जीते चले जाना।।
बड़ी अजीब सी है ये जिन्दगी.....❑

माता-पिता एक वृक्ष की तरह

शक्ति सिंह, बी.कॉम. तृतीय वर्ष

एक बच्चे को आम का पेड़ बहुत पंसद था जब भी फुर्सत मिलती वो आम के पेड़ के पास पहुँच जाता।

पेड़ के ऊपर चढ़ता, आम खाता, खेलता और थक जाने पर उसी की छाया मे सो जाता उस बच्चे और आम के पेड़ के बीच एक अनोखा रिश्ता बन गया।

बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता गया वैसे-वैसे उसने पेड़ के पास आना कम कर दिया कुछ समय बाद तो बिल्कुल ही बंद कर दिया आम का पेड़ उस बालक को याद करके अकेला रोता एक दिन अचानक पेड़ ने उसे अपनी तरफ आते देखा और पास आने पर कहा ''तु कहा चला गया था। मैं रोज तुम्हे याद करता था। चलो आज फिर से दोनो खेलते है। बच्चे ने आम के पेड़ से कहा मेरी उम्र अब खेलने की नही और अब मैं बड़ा हो गया अब मैं पढ़ना चाहता हूँ पर पढ़ने के लिए पैसे नही है। तो आम ने कहा तु मेरे सारे आम तोड ले और इन्हें बाजार मे बेचे दे इससे जो पैसे मिले अपनी फीस भर देना उस बच्चे ने आम के पेड से सारे आम तोड लिए और उन सब आमो को लेकर वहा से चला गया उसके बाद फिर कभी दिखाई नही दिया।

आम का पेड उसकी राह देखता रहता एक दिन वो फिर आया और कहने लगा'' अब मुझे नौकरी मिल गई है। मेरी शादी हो चुकी है। मुझे मेरा अपना घर बनाना है। इसके लिए मेरे पास पैसे नही है आम के पेड ने बड़ी दुःख से कहा ''तु मेरी सभी डाली को काट कर ले जा

उस जवान ने पेड़ की सभी डाली काट ली और ले के चला गया आम के पेड़ के पास अब कुछ नही था पेड़ बिल्कुल बंजर हो गया था कोई उसे देखता भी नही था। पेड़ ने भी अब वो बालक/जवान उसके पास फिर आयेगा यह उम्मीद छोड़ दी थी। फिर एक दिन अचानक वहाँ एक बूढ़ा आदमी आया उसने आम के पेड़ से कहा'' शायद आपने मुझे नही पहचाना, मैं वही बालक हूँ जो बार-बार आपके पास आता और आप हमेशा अपने टुकड़े काटकर भी मेरी मदद करते थे।

आम के पेड ने दुःख के साथ कहा पर बेटा मेरे पास अब ऐसा कुछ भी नही जो मैं तुम्हें दे सकूँ वृद्ध ने आँखों में आँसु लिए कहा

आज मैं आपसे कुछ लेने नही आया हुँ बल्कि आज तो मुझे आपके साथ जी भरके खेलना है। आपकी गोद में सर रखकर सो जाना है। इतना कहकर वो आम के पेड़ से लिपट गया और फिर से अंकुरित हो उठी।

वो आम का पेड़ कोई और नही हमारे माता पिता है। दोस्तो जब छोटे थे। उनके साथ खेलना अच्छा लगता था जैसे-जैसे बडे होते चले गये उनसे दुर होते गये पास भी तब आये जब कोई जरूरत पड़ी कोई समस्या खड़ी हुई आज कई माँ-बाप उस बंजर पेड़ की तरह अपने बच्चो की राह देख रहे है। जाकर उनसे लिपटे उनके गले लग गये।

फिर देखना वृद्धावस्था में उनका जीवन फिर से अंकुरित हो उठेगा। ❑

गंगा प्रदुषण-कारण एव निवारण

नीरज भारती, बी.कॉम. तृतीय वर्ष

ब्रहाजी के कमण्डल में संरक्षित भागीरथी राजा भागीरथ तपस्था से प्रसन्न होकर भगवान शिव जी की लटाओ में वास करती हुई पृथ्वी पर अवतरित हुई वह अपने पूर्वजो की मुक्ती करा पाये माँ गंगा पृथ्वी वासियो के लिए अमृत तुल्य है उत्तराखण्ड से लेकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे होती हुई बिहार तथा पश्चिम बंगाल का सींचन करती हुई हमारी जीवन दायनी बन गई है इसके किनारे पर अनेक नगर वसे हुए है जिसमे हमारा अनूपश हर भी आता है इसे छोटी काशी कहा जाता है इसके अमृत समान जल को गंगा जल कहते है हमारी सभी धार्मिक पूजा बिना गंगा जल के संभव नही है हमारे पूरे श्रवण मास मे शिव जी पर गंगा जल ही चढ़ता है यहा तक मृत्यु के समय व्यक्ति के मुँह में गंगा जल ही डाला जाता है कहा जाता है कि गंगा स्नान से मन शुद्ध होता है गंगा जल की अनेक विशेषताए है गंगा जल मे कभी कीड़े नहीं पड़ते जो जल इतना पवित्र और पावन है उसे आज पृथ्वी वासियों ने अपने स्वार्थ के कारण इतना गंदा कर दिया है कि आज गंगा जल काला प्रतित होता है

गंगा प्रदूषण के कारण– गंगा किनारे बसे नगरों का गंदा नाला (सीवेज) गंगा में पड़ता है हवनों की राख मृतक व्यक्तियों का द्वाह संस्कार गंगा किनारे किया जाता है गणेश पूजा के दौरान रासायनिक पेंट लगी हुई मूतियों का विसर्जन गंगा जल को प्रदुषित करता है गंगा जल को शुद्व करने वाले जलीय जीव जैसे कछुआ एव मछली का गंगा में स्नान करते समय साबुन शैम्पू का प्रयोग करना गंगा और मृतक व्यक्तियों के शरीर की राख को प्रवाहित करना आदि।

गंगा प्रदूषण के निवारण– गंगा किनारे दाह संस्कार पर रोक लगना गंगा किनारे शमशान घाट बनवाना मूर्तियों को गंगा में विसर्जित करने की जगह उन्हें धरती में गाढ़ना चाहिए, गंगा में साबुन शेम्पू का प्रयोग न किया जाये। गंगा जल को प्राकृतिक रूप से शुद्ध करने वाले जलिय जीव जैसे कछुआ एव मछली अवैध शिकार होने के कारण गंगा में समाप्त होते जा रहे है। हवन की राख आदि गंगा में न डाली जाती है मूर्तियों पर प्राकृतिक रंग का प्रयोग किया जाना चाहिए गंगा द्वारा छोड़ी गई जगह पर प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए

यदि हम सब अपने-अपने स्वार्थ को त्यागकर यह प्रण कर लें कि हमें अपने क्षेत्र में न गंगा को प्रदूषित करेंगे न करने देगें और न ही प्रदूषित बहने देगें तो सदा नीरा पूर्ण सलिला माँ गंगा युगों-युगों तक हम सबका कल्याण करती रहेंगी।

"जल है तो जीवन है जीवन है तो जहाँ है" ❑

वो वीर

काजल तौमर, बी.कॉम. प्रथम वर्ष

हर पल मौसम बदलते होंगे।
वो वीर फिर भी कदम से कदम, मिलकर चलते होगे।।
इतने रंगो में कुछ रंग, लहू के भी होगे।
कितना ही अंधकार छा जाए,
आशा के दियो से रोशनी करते होगे।
कितने ही तूफा आए, फिर भी वो वीर सरहद की रक्षा करते होगे।
जिंदगी को अपनी मौत के हवाले
वो वीर रोज करते होगे।।
हर पल मौसम बदलते होगे
वो वीर फिर भी कदम
मिलाकर चलते होंगे। ❑

जौं के दाने

सुरभि शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष

एक भिखारी सुबह-सुबह भीख मांगने निकला। चलते समय उसने-अपनी झोली में जौं के मुट्ठी भर दाने डाल दिए। उसका मानना था कि इससे शगुन अच्छा होता है, भिक्षा अच्छी मिलती है। थैली देखकर दूसरों को भी लगाता है कि इसे पहले से किसी ने दे रखा है। पूर्णिमा का दिन था, भिखारी सोच रहा था कि आज ईश्वर की कृपा होगी, तो मेरी झोली शाम से पहले ही भर जाएगी। अचानक समाने से राजपथ पर उसी देश के राजा की सवारी आती दिखाई दी। भिखारी खुश हो गया। उसने सोचा, राजा के दर्शन और उनसे मिलने वाले दान से सारे दरिद्र दूर हो जांएगे। जैसे ही राजा का रथ भिखारी के निकट आया, राजा ने अपना रथ रूकवाया और उतर कर उसके निकट पहुंचे। भिखारी की तो मानो सांसे ही रूकने लगीं। पर राजा ने उसे कुछ देने के बदले उलटे अपनी बहुमूल्य चादर उसके सामने फैला दी। भिखारी सोच में डूबा था कि राजा ने पुनः याचना की। भिखारी ने अपनी झोली में हाथ डाला, मगर सदैव दूसरों से लेने वाला मन देने को राजी नहीं हो पा रहा था, जैसे-तैसे उसने दो दाने जौ के निकाले और उन्हें राजा की चादर पर डाल दिया। उस दिन भिखारी को रोज से अधिक भिक्षा मिली। शाम को जब उसने झोली पलटी, तो आश्चर्य की सीमा न रही, जो जौ वह ले गया था, उसके दो दाने सोने के हो गए थे। उसे समझ आया कि यह दान की ही महिमा के कारण हुआ है। वह पछताया कि काश! उस समय राजा को और अधिक जौ दी होती, तो और लाभ मिलता। पर वह दो दाने से अधिक नहीं दे सका, क्योंकि उसमें देने की आदत जो नहीं थी। ❑

गुरू का ज्ञान

पिंकी, बी.ए. प्रथम वर्ष

गुरू के बिना ज्ञान नही,
ज्ञान के बिना कोई महान नही
भटक जाता है जब इसांन,
तब गुरू ही देता है ज्ञान
ईश्वर के बाद अगर कोई है,
तो वो गुरू है।
दुनियाँ से वाकिफ जो कराता है,
वो गुरू है।
हमें अच्छ इसांन जो बनाता है,
वो गुरू है।
बिना गुरू के जिंदगी आसान नही,
हमारी कमियों को जो बताता है,
वो गुरू है।
हमें इंसानियत जो सिखाता है,
वो गुरू है।
हमें जो हीरे की तरह तराश दे,
वो गुरू है।
हमारे अदंर एक विश्वास जगा दे,
वो गुरू है।
जिसके पास नही है गुरू,
समझ लेना की वो धनवान नही है।
गुरू का महत्व कभी होगा ना कम,
भले कर ले कितनी उन्नति हम।
वैसे तो इंटरनेट पर हर प्रकार का ज्ञान,
पर अच्छे-बुरे की नही उसे पहचान।
गुरू के बिना ज्ञान नही,
ज्ञान के बिना कोई महान नहीं।

❑

धैर्यबान बनो

देवेश तौमर, बी.काम. प्रथम वर्ष

अधीर होने से हमारी मनः स्थिति परिस्थिति को बद से बदतर बना देती है मुश्किल और परिस्थितियाँ इतनी विराट रूप धारण कर लेती है कि हम निर्णय लेने मे अक्षम हो जाते है

पत्रकार (अपने मित्र देव से) पता नही यह लोगो को आजकल जल्दी की बीमारी क्यो लगती जा रही है?

देव– क्या हुआ भाई? जल्दबाजी से इतने परेशान क्यो हो? अरे! तेज-रफ्तार वाली वी शताब्दी के मॉडल हैं हम सब। हमे तो सबकुछ जल्दी ही होता है, खाना जल्दी, नौकरी जल्दी, कमाना जल्दी...

पत्रकार– साथ ही गुस्सा जल्दी परेशान जल्दी, और तो दुर्घटनाएँ जल्दी। पता है आज तो जल्दबाजी के चक्कर मे हाई-वे पर कार का बहुत बुरा ऐक्सीडेंट हो गया कार मे बैठे सभी व्यक्तियों की मृत्यु हो गई।

देव– यह तो बहुत बुरा हुआ–

पत्रकार– हम अब इतने अधीर हो चुके हैं हम कि इंतजार नही कर सकते, भले ही जीवन खतरे मे क्यो न डालना पड़े हमारी अधीरता की छोटी सी झलक देता हूँ-

रिसर्च बताती है कि आजकल हम–

- ❖ लगभग हर 236 मिनट मे अपना फोन खोलकर ई-मेल देख रहे होते है,
- ❖ लगभग हर 48 मिनट मे फोन के मैसेज को चैक कर रहे होते है
- ❖ लगभग हर 39 मिनट मे टविटर अकाउंट चैक करते है
- ❖ लगभग हर 49.25 मिनट में मिस्ड कॉल देख रहे होते है
- ❖ 18 से 24 साल के लोग लगभग हर 10 मिनट मे कोई न कोई गैजेट देख रहे होते हैं।

कठिन परिस्थितियो मे निर्णय लेने की क्षमता बहुत हद तक निर्भर करती है हम कभी-कभी अधीर होकर अवसर ऐसे निर्णय ले बैठते है जो भारी हानि दे जाते है यह सच्ची घटना इसी तथ्य का प्रमाण है-

राकेश एक फ्रोजन फूड बनाने वाली कंपनी मे काम करता एक दिन कुछ सामान उठाने के लिए वह फ्रीजर कम्पाटमेंट मे गया उस कम्पार्टमेंट का दरवाजा ऐसा था जो बंद होने पर केबल बाहर से ही खोला जा सकता था इसलिए जो भी भीतर जाता था तो दरवाजे को अच्छे से खोलकर डाट (stopper) लगाकर जाता था अब क्योंकि ऑफिस का समय खत्म हो गया था राकेश जल्दी मे था उसने शायद डाट को ठीक से नही लगाया और जैसे ही सामान को अन्दर से उठाने गया तो कम्पार्टमेंट का दरवाजा बंद हो गया काम का समय खत्म हो चूका था इसलिए अन्य सभी कर्मचारी भी ऑफिस से निकल चुके थे राकेश ने दरवाजे को खोलने की बहुत कोशिश कि लेकिन दरवाजा नही खुला राकेश ने मोबाइल चैक किया सिग्नल नही आ रहे थे उफ कैसी विपरीत स्थिति बर्फीला कर्म्पाटमेंट लोहे का बंद दरवाजा मोबाइल का काम न करना और किसी को पता भी नही कि अंदर कोई बंद है। पर आज के तेज रफ्तार युग में धैर्य को जानता ही कौन है? इन सब कारणो से उत्पन्न भय ने राकेश को अधिर कर दिया वह बेसब्र हो इधर-उधर दौड़ने लगा, कुछ ही देर बाद राकेश को ठंड लगने लगी शरीर थर-थर काँपने लगा और वह जमीन पर गिर पड़ा अगली सुबह जब दरवाजा खुला तो राकेश को मृत पाया गया। वह दरवाजा एक कर्मचारी ने खोला जो कम्पार्टमेंट का दरवाजा ठीक करने आया था जो पिछले तीन दिन से खराब था और कम्पार्टमेंट के अन्दर एक दीवार पर यह बड़ा-बड़ा लिखा भी था कि दरवाजा खराब है जरा विचार करें-राकेश ने अपने जीवन को क्यो खोया? ठंड के कारण..... नही, धैर्य खोने के कारण।

❑

चुटकुले

रितु चौधरी, बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

- अध्यापक- छात्र से- 'बताओ तुम इतिहास पुरूष में सबसे ज्यादा नफरत किससे करते हो।
  बच्चा-राम मोहन राय से
  अध्यापक-क्यू??
  बच्चा-उसी ने बाल विवाह बन्द करवाया था वरना आज हम भी बीबी बच्चे वाले होते।
- लड़का- मै 4 साल का हूँ... और तुम?
  लड़की- मै भी 4 साल की हूँ
  लड़का- तो चले वाइक पर
  लड़की (शर्माते हुए)-कहाँ
  लड़का- पोलियो की ड्राप पीने पगली और कहाँ
- लड़की देखने का कार्यक्रम तय हुआ लड़के वाले बहुत सीधे लोग थे।
  लड़का-आपकी शिक्षा
  लड़की-MF. I.A.S
  लड़के ने आगे डिग्री की Detail यह सोचकर नही पूछी कि कहीं लड़की उसे अशिक्षित ना समझे
  बाद मे वे लोग चले गये।
  शादी के बाद लड़के ने लड़की से पूछा कि ये MF.I.A.S क्या होता है उसने बताया.....
  Matric fail in All Subjects. लड़का 4 दिन से बेहोश है।
- शादी के पहले दिन छोरा Confuse हो रहा था कि पत्नी से कैसे बात शुरु की जाये।
  कमरे में पहुँचा तो 5 मिनट के लिए तो दुल्हन के पास चुपचाप बैठा रहा, उसके बाद धीरे से बोला
  के नाम है तेरा?
  दुल्हन शरमाते हुए बोली
  क्यों, कार्ड में थारी बुआ का नाम लिखवाया था के। ❑

विचार!

तुलसी लोधी, बी.ए. प्रथम वर्ष

- सब को इकट्ठा रखने की ताकत प्रेम मे है, और सबको अलग करने की ताकत वहम में है।
- मन ऐसा रखो कि किसी को थी बुरा न लगे,
  दिल ऐसा रखो कि, किसी को दुःखी न करे,
  रिश्ता ऐसा रखो कि उसका अन्त न हो,
  कोई भी व्यक्ति हमारा शत्रु बनकर संसार में नहीं आता, हमारा व्यवहार और शब्द ही लोगो को मित्र और शत्रु बना देते हैं।
- जिन्दगी हसाएँ, तब समझना कि
  अच्छे कर्मो का फल मिल रहा है,
  और जब जिन्दगी रूलाए, तब समझना कि
  अच्छे कर्म करने का समय आ गया है।
- चलने वाले पैरो में कितना फर्क है, एक आगे है तो एक पीछे,
  पर ना तो आगे वाले का अभिमान है,
  और ना पीछे वाले को अपमान
  क्योकि उन्हें पता है,
  कि ये पलभर में बदलने वाला है
  इसी को जिन्दगी कहते है।
- "अंधेरा वहाँ है जहाँ तन गरीब है,
  अंधेरा वहाँ है जहाँ मन गरीब है....॥
- हजार महाफिलें हो, लाख मेले हों।
  जब आप खुद से न मिलो,
  तब तक अकेले हों...॥
- ना बुरा होगा, ना अच्छा होगा,
  होगा वैसा जैसा नजरिया होगा...—
- बड़ा बनने के लिए बड़ी डिग्री की नहीं,
  बल्कि बड़ी सोच का होना जरूरी है...॥

❖ छोटी-छोटी बातें दिल में रखने से,
बड़े-बड़े रिश्ते कमजोर हो जाते हैं....।।

❖ कभी पीठ पीछे आपकी बात चले
तो घबराना मत.....
बात तो उन्ही की होती है....
जिनमें कोई बात नहीं होती....।।

❖ सुबह की नींद इन्सान के इरादों
को कमजोर करती है...
मंजिलो को हासिल करने वाले कभी देर तक सोया नहीं करते....।
वो आगे बढते है, जो सूरज को जगाते है,
वो पीछे रह जाते हैं जिनको सूरज जगाता है।

❖ झूठ भी एक अजीब जायका है
स्वंय बोलो तो मीठा लगता है, और
कोई दूसरा बोले तो कड़वा लगता है...॥ ❑

दूध और पानी की मित्रता (संकलित)

प्रदीप भारती, एम.ए. द्वितीय

पानी ने दूध से मित्रता की और उसमें समा गया। जब दूध ने पानी का समर्पण देखा तो उसने कहा-मित्र तुमने अपने स्वरूप का त्याग कर मेरे स्वरूप को धारण किया है, अब मैं भी मित्रता निभाऊँगा और तुम्हे अपने मोल बिकवाऊँगा। दूध बिकने के बाद जब उबाला जाता है तब पानी कहता है। अब मेरी बारी है मैं मित्रता निभाऊँगा और तुमसे पहले मैं चला जाऊँगा दूध से पहले पानी उड़ता जाता है। जब दूध मित्र को अलग होते देखता है तो उफन कर गिरता है और आग को बुझाने लगता है। जब पानी की बूँदें उस पर छोट कर उसे अपने मित्र से मिलाया जाता है तब वह फिर शान्त हो जाता है। पर इस अगाध प्रेम में थोड़ी सी खटास (नींबू की दो चार बूँदे) डाल दी जाए तो दूध और पानी अलग हो जाते हैं। इसी प्रकार थोड़ी सी मन की खटास अटूट प्रेम को भी मिटा सकती है।

रिश्ते में कभी खटास मत आने दो, क्या फर्क पड़ता है, हमारे पास कितने लाख कितने करोड़, कितने गाड़ियाँ है खाना तो बस दो ही रोटी है जीना तो बस एक ही जिन्दगी है। फर्क इस बात से पड़ता है कितने पल हमने खुशी से बिताये और कितने लोग हमारी वजह से खुशी से जिए।

सुनने की आदत डालो क्योंकि ताने मारने वालों की कमी नही हैं। हँसने की आदत डालो क्योंकि रूलाने वालों की कमी नही है। ऊपर उठने की आदत डालो क्योंकि टाँग खींचने वालों की कमी नही है। प्रोत्साहित करनेकी आदत डालो क्योंकि हतोत्साहित करने वालों की कमी नहीं है। सच्चा व्यक्ति ना तो नास्तिक होता है, ना ही आस्तिक होता है। सच्चा व्यक्ति हर समय वास्तविक होता है। छोटी-छोटी बातें दिल में रखने से बड़े-बड़े रिश्ते कमजोर हो जाते है। कभी पीठ पीछे आपकी बात चले तो घबराना मत, क्योंकि बात उन्ही की होती है जिनमें कोई बात होती है।

निन्दा उसी की होती है जो जिन्दा होते है मरने के बाद तो सिर्फ तारीफ होती है।

माना दूनिया बुरी है हर जगह धोखा है। लेकिन हम तो अच्छे बने हमें किसने रोका है।। रिश्तों की सिलाई अगर भावनाओं से हुई है तो टूटना मुश्किल है।

और अगर स्वार्थ से हुई है तो टिकना मुश्किल है ॥ ❑

कठिनाइयां समझना जरूरी है

गौरव कुमार गौतम, एम.ए. द्वितीय वर्ष (संस्कृत)

एक युवक को किसी कंपनी में मैनेजर पद के लिए फाइनल इंटरव्यू के लिए कंपनी के डायरेक्टर के पास भेजा गया डायरेक्टर ने देखा कि उसकी शैक्षणिक योग्यताएं शानदार थी। डायरेक्टर ने युवक से पूछा, तुम्हारी फीस कौन भरता था? युवक ने जवाब दिया, 'मेरे माता-पिता मेरी फीस चुकाते थे।' डायरेक्टर ने पूछा, 'वे क्या काम करते है? युवक ने कहा, 'वे कपड़े धोने का काम करते है।' डायरेक्टर ने देखा कि युवक के हाथ बहुत सुन्दर और मुलायम थे। उन्होंने पूछा, क्या तुमने कपड़े धोने में माता-पिता की मदद नहीं की?

'कभी नहीं। वे दोनों यही चाहते थे कि मैं खूब पढ़ाई करूं, ताकि मुझे उनकी तरह कपड़े धोने का काम न करना पड़े। डायेक्टर ने युवक से कहा, आज तुम घर जाकर माता-पिता के हाथ अच्छी तरह साफ करना और कल मुझसे फिर मिलों। युवक अपने घर पहुंचा। उसने माता-पिता के हाथों को अपने हाथ में लेकर साफ करना शुरू किया, तो उसकी आँखो से आंसू बहने लगे। जीवन मे पहली बार उसे यह एहसास हुआ कि उसके माता-पिता के हाथ झुर्रियों से भर गए थे और यह कठिन काम करने के कारण रूखे और चोटिल हो गए थे। पहली बार युवक को यह बात गहराई से महसूस हुई कि उसे काबिल बनाने के लिए उसके माता-पिता ने कितना त्याग किया। उनके हाथ धोने बाद युवक ने कपड़े भी धोए।

अगले दिन युवक ने कहा, अब मैं जान गया हूँ कि माता-पिता की करूणा का मूल्य क्या है? यदि वे यह कठिन काम न करते तो मैं आज यहां आपके सामने नहीं बैठा होता। मैं यह जान गया हूं कि अपनी सुख-सुविधा को ताक पर रखकर परिवार के हर सदस्य का ध्यान रखना और उसे काबिल बनाना महत्वपूर्ण बात है। इसके लिए बड़ा त्याग करना पड़ता है।

डायरेक्टर ने कहा, 'यही मैं देखना चाहता था। मैं उसे ही कंपनी में रखता हूँ, जो यह जानता हो कि किसी भी काम को पूरा करने के लिए बहुत कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है।'

जिन बच्चों को बहुत जतन और एहतियात से पाला-पोसा जाता है और सुख-सुविधा में कोई कोर-कसर नहीं रखी जाती, उन्हें यह लगने लगता है कि उनका हक हर चीज पर है और उन्हे वह मिलनी चाहिए। ऐसे बच्चे अपने माता-पिता की मेहनत और उनके समर्पण का मूल्य नहीं जानते। बच्चों को बड़ा घर, महंगे खिलौने और शानदार लाइफस्टाइल देना ही पर्याप्त नहीं है, उन्हें रोजमार्रा के काम खुद करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उनमें यह आदत डालनी चाहिए कि वे अपना भोजन कभी नहीं छोड़े, अन्न का तिरस्कार न करें और अपनी थाली खुद धोने के लिए रखने जाएं।

हो सकता है कि आपके घर में नौकर-चाकर लगें हों, लेकिन उनमें दूसरों के प्रति संवेदना जगाने के लिए ऐसे कदम उठाने चाहिए। सभी बच्चों में यह बात विकसित करनी चाहिए कि हो दुनिया के हर व्यक्ति की जरूरतो, प्रयासो, और कठिनाइयों को समझें और उनके साथ मिलकर चलना सीखें, ताकि हर व्यक्ति का हित हो। ❑

क्रोध का फल

कु.सोनम, बी.ए. प्रथम वर्ष

अध्याय– अध्याय के अनुसार हमें अपने क्रोध को काबू में रखना चाहिए। क्रोधवश हम कोई ऐसा कार्य कर बैठते हैं और फिर सारा जीवन पछताते रहते हैं। जिस प्रकार किसान ने बिना कोई कारण जाने, नेवले को मार दिया था तथा बाद में उसे बहुत पछतावा हुआ।

कहानी– एक गाँव में एक व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ रहता था। उनके एक छोटा बेटा था। उन्होंने एक नेवला पाल रखा था। वे नेवले को भी अपने बच्चे की तरह प्यार करते थे। नेवला भी उनमें बहुत घुल-मिल गया था। वह छोटे बच्चे को बहुत प्यार करता था। वह उसकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहता था, लेकिन नेवले से पति-पत्नी को सदैव यह डर बना रहता कि कहीं नेवला उनके बेटे को हानि न पहुँचा दे। एक दिन पति-पत्नि खेतों में काम करने के लिए गए हुए थे। उनका बेटा पालने में सो रहा था। तभी एक बिल से एक जहरीला साँप निकला और पालने की ओर बढ़ने लगा। नेवला बच्चे की रक्षा के लिए साँप से भिड़ गया। उसने साँप को मार डाला और दरवाजे पर बैठकर दंपत्ति की प्रतीक्षा करने लगा। दंपत्ति खेत से काम करके जब वापस आए तो उन्होंने नेवले को दरवाजे पर बैठे देखा। उसके मुँह पर खून लगा था। व्यक्ति ने सोचा कि नेवले ने उसके बेटे को खा लिया है। वह क्रोध से आग बबूला हो उठा। प्यार पाने के लिए आ रहे नेवले पर व्यक्ति ने छड़ी से प्रहार किया। बेचारा नेवला पहले ही वार में मर गया। तब व्यक्ति ने अपने घर के भीतर जाकर देखा कि उसका लडका पालने में सुरक्षित सो रहा था। नेवले द्वारा मारा गया साँप पालने के निकट पड़ा था। व्यक्ति पुनः नेवले के पास गया। नेवले को मरा देखकर वह फूट-फूटकर रोने लगा। उसने रोते हुए अपनी पत्नी से कहा, ''मैंने पुत्र की तरह प्यार करने के योग्य नेवले को क्रोध में आकर मार दिया। मुझसे बड़ा पाप हो गया। मैं अपराधी हूँ।'' शिक्षा–"क्रोध में किया गया कार्य सदैव नुकसानदायक होता है।" ❑

यह भी जानिए

दीक्षा वार्ष्णेय, बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष

राज्य	–	राम का
सतीत्व	–	सीता, सावित्री का
सेवा	–	लक्ष्मण, हनुमान, श्रवण कुमार की
मैत्री	–	श्रीकृष्ण की
बाण	–	अर्जुन का
दान	–	कर्ण का
प्रतिज्ञा	–	भीष्म की
हाजिर जबाबी	–	वीरबल की
संगीत	–	तानसेन का
जौहर	–	पद्यमिनी का
सौभाग्य	–	सावित्री का
अहिंसा	–	बुद्ध की
त्याग	–	पन्नाधाय का
शौर्य	–	राणा प्रताप का
सज्जनता	–	युधिष्ठिर की
शिष्य	–	एकलव्य जैसा
भक्ति	–	प्रहलाद की
तपस्या	–	ध्रुव की
त्याग	–	दधीचि का
मर्यादा	–	राम की
वीरता	–	शिवाजी की
नीतियाँ	–	चाणक्य की
दया	–	अशोक की

आज भी याद किया जाता है। ❑

ऐ मेरे स्कूल मुझे, जरा फिर से बुलाना

तान्या शर्मा, बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

ऐ मेरे स्कूल मुझे,
जरा फिर से तो बुलाना
कमीज के वटन, ऊपर नीचे लगाना
वो अपने बाल खुद न काढ पाना
पीटी शूज को चाक से चमकाना
वो काले जूते यूनिफार्म से पोछते जाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे,
जरा फिर से तो बुलाना
वो बडे नखूनों को दाँतो से चबाना
और लेट हो जाने पर मैदान के चक्कर लगाना
वो पेपर के समय क्लास में रुक जाना
और पकडे जाने पर पेट दर्द का बहाना बनाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे,
जरा फिर से तो बुलाना
वो टिन के डिब्बे को फुटवाल बनाना
ठोकर मार-मार कर उसे घर तक ले आना
साथी के बैठने से पहले बैन्च सरकाना
और उसके गिरने पर जोर से खिलखिलाना।
ऐ मेरे स्कूल जरा फिर से तो बुलाना
गुस्से में एक दूसरे की यूनिफार्म पे स्याही छिडकाना
वे लीक करते पेन को बालो से पोछते जाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे,
जरा फिर से तो बुलाना
वो Games Period के लिये Sir को पटाना
Unit Test को टालने के लिये उनसे गिडगिडाना
जाडो में बाहर धूप मे Class लगवाना
और उनसे घर-परिवार के किससे सुनते जाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे,
जरा फिर से तो बुलाना
वो बेर वाली के बेर चुपके से चुराना,
लाल-पीला चूरन खाकर एक दूसरे को जीभ दिखाना
खट्टी-मीठी इमली देख जमकर लार टपकाना
साथी से आइसक्रीम खिलाने के मिन्नते करते जाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे,
जरा फिर से तो बुलाना
वो लंच से पहले टिफिन चट कर जाना,
आचार की खूशबू पूरे Class में फैलाना
वो पानी पीने में जमकर देर लगाना
दीवारो पर लिखे शब्दों को बार-बार पढ़के सुनाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे,
जरा फिर से तो बुलाना
वो Exam से पहले Sir के चक्कर लगाना लगातार बस Important ही पूछते जाना वो उनका पूरी किताब में निशान लगवाना और हमारा ढेर सारा Course देखकर सर चकराना
ऐ मेरे स्कूल मुझे,
जरा फिर से तो बुलाना
वो मेरे स्कूल का मुझे, कालेज तक पहुचाना,
और मेरा खूद मे खो उसको भूल जाना
बाजार में किसी परिचित से टकराना
वो जवान गुरुजी का बूढा चेहरा सामने आना
तुम सव अपने स्कूल एक बार जरूर जाना। ❑

एक चिड़िया

शीतल चौधरी, बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष

निकल पड़ी सबेरे भोजन की तलाश में
काले-काले बादल घिरे थे, आकाश में
कुछ दूर उड़ने पर उसे यह आभासा हुआ
कि यह बादल नहीं, चिमनी का धुँआ
जिसमें वह चकरा गई
खेत में पड़े अर्द्धसुस्त कीड़े को चोंच में उठाया
तभी देख एक सरिता को बहता
तो उसका मन भी पानी को ललचाया
अभी पानी था बहुत गदला
दो घूँट से ज्यादा पिया न गया।
अरे यह क्या? उसका चमन तो उजड़ चुका था
शाम ढलने से पहले आदमी उसके आशियाना
को
काटकर कब का जा चुका था।
भूख से बिलबिलाते बच्चे
उस मरे हुए कीड़े को खा, तभी तृप्त भी नहीं
हुए थे,
तभी कीटनाशक दवा का प्रभाव
उस पर भी दिख गया था।
इधर बच्चे भी मर चुके थे, भूख से
इधर वह खाकर भी मर चुकी थी। ❑

सबसे सच्चा रिश्ता-दोस्ती (संकलित)

रिंकी राघव, बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष

एक युद्ध में, एक जख्मी सैनिक अपने जख्मी दोस्त को अपने क्षेत्र में लाने की कोशिश कर रहा था।

उसके कप्तान ने कहा, "वो अभी किसी काम का नहीं; तुम्हारे दोस्त को मरना होगा।" लेकिन सैनिक फिर भी जाता है, और अपने दोस्त को लेकर आता है।

दोस्त का मृत शरीर देखकर, कप्तान कहता है, ''मैंने तुमसे कहा था कि यह अब किसी काम का नहीं, वह अब मर चुका है।''

तभी वह सैनिक नम आँखो से जवाब देता है। "नहीं सर यह मेरे लिए बहुत कीमती है, जब मैंने उसे ढूँढा तब मेरे दोस्त ने मुझे देखा, मुस्कुराया और अपने अंतिम शब्द कहे, "मैं जानता था तुम जरूर आओगे।"

ऐसी कीमती, सच्ची और मजबूत दोस्ती हमें बहुत कम देखने को मिलती है। जीवन में सच्चे दोस्त, जब आपको जरूरत होती है तब हमेशा आपके साथ रहे हैं। कहा जाता है कि माता पिता के बाद कोई अगर किसी के लिए जान दे सकता है तो वो दोस्त होता है।

जीवन में कई बार हम ऐसी मुश्किलों में फंसे होते है, जिस समय हम किसी और से सहायता नहीं ले सकते, उस समय दोस्त हमारी सहायता करता है। दोस्त वही होता है जो हमारे दिल की बातों को जान लेता है। निश्चित ही यदि हमारे दोस्त हमारे साथ हों तो हम बड़ी से बड़ी चुनौती को आसानी से पार कर सकते हैं। ❑

क्या भारत में वित्त पोषण हासिल करने में वित्तीय तकनीक क्रन्तिकारी हो सकती है ?

सुरभि शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष

भारतीय अर्थव्यवस्था में एक लम्बे अरसे के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बदलाव आया है इस बदलाव से न केवल भारत की घरेलू अर्थव्यवस्था में स्थायित्व होगा बल्कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी भारत अपने स्थायित्व को बनाये रखने में कामयाब रहा है । भारतीय अर्थव्यवस्था की रेटिंग अंतर्राष्ट्रीय बाजार में सुधारने के लिए भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने जीएसटी (एक राष्ट्र, एक कर, एक बाजार) तथा नोटबंदी, आधार लिंक, एनपीए (गैर निष्पादित परिसंपत्तियां) घटने को कदम उठाए । भारत में व्यापार करना आसान हो इसके लिए भी विशेष कदम एवं विशेष तकनीक को अपनाया है एवं माँनीटरी पालिसी में सुधार भी भारतीय अर्थव्यवस्था की रेटिंग में अपनी अहम् भूमिका अदा करेगा तथा इसके अतरिक्त करों में कम राजस्व मिलने तथा सरकारी खर्च अधिक होने की वजह से साल 2017-18 में बजट घटा अधिक हो सकता है लकिन केंद्र सरकार द्वारा कर आधार बढ़ाने तथा खर्च की दक्षता में सुधार करने को लेकर उठाये गए कदमों से भविष्य में बजट घाटा कम होगा ऐसा अनुमान अमेरिका स्थित रेटिंग एजेंसी मूडीज का है।

नोटबंदी एवं जीएसटी की भूमिका– वित्तीय वर्ष 2016-17 में भारतीय केंद्र सरकार द्वारा लिए गए ऐतिहासिक फैसले (नोटीबंदी का ऐलान) ने भी भारतीय अर्थव्यवस्था की रेटिंग बढ़ाने अहम् भूमिका अदा की है। वित्त वर्ष 2016-17 में 08 नवम्बर को केंद्र सरकार ने जनता के समक्ष रखा और भारत के प्रत्येक तबके ने इसमें अपना सहयोग प्रदान किया। भारतीय आम-आदमियों ने इसमें विशेष सहयोग प्रदान किया। क्योकि कोई भी कानून तब तक सफल नहीं होता जब तक प्रत्येक व्यक्ति उसी अनुपात में उसका पालन न करे अतरू यह कहना अतिशियोक्ति नहीं होगी कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सम्पूर्ण भारतवासियों ने अपनी अहम भूमिका अदा की। नोटबंदी के सफल होने के बाद से ही भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधर कायम होने लगा और विभिन्न देशों ने भारत, भारतीय प्रधानमंत्री, भारतवासियों एवं भारतीय अर्थव्यवस्था की सराहना की एवं भारतीय अर्थव्यवस्था विभिन्न स्तरों पर अपना सुधार प्रोन्नति के साथ बढ़ाने में कामयाब रही है। जीएसटी द्वारा लाये गए कर प्रणाली में परिवर्तन से भी भारतीय अर्थव्यवस्था में उछाल आया है। केंद्र सरकार की पहल पर एक राष्ट्र, एक कर एक सरकार का नारा भी सफल सिद्ध होता दिख रहा है। वस्तु एवं सेवा कर की विशेष बात यह है कि जीएसटी में कर की चार श्रेणियां मानी गयी हैं एवं उन चार श्रेणियों में अल्प कर ही लिया जायेगा एवं कर कि उन चार श्रेणियों में जो वस्तु एक व्यक्ति की रोजमर्रा की जिन्दगी के लिए बेहद आवश्यक है उन्हें अल्प कर की श्रेणी में 5% में रखा गया है। इससे उद्योग एवं व्यापर में विशेष इजाफा होगा एवं उपभोक्ताओं को आर्थिक लाभ देने के लिए अधिकतम खुदरा मूल्य में संशोधन किया गया है। इसी सन्दर्भ में अमेरिका की संस्था मूडीज ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि जीएसटी जैसे सुधार राज्यों के बीच व्यापार की बाधा को हटाते हुए उत्पादकता बढ़ाएंगे। मौद्रिक नीति के ढांचे में सुधार, बैंको के अटके लोन की समस्या से निपटने के लिए उठाये गए कदम और नोटबंदी जैसी कवायदें अर्थव्यवस्था की खामियों को ठीक करने की मंशा से उठायी गयी हैं। एजेंसी ने अगाह किया कि कर्ज का बड़ा बोझ अब भी देश की क्रेडिट प्रोफाइल के लिए बड़ी रूकावट है एवं एजेंसी ने अपने बयान में कहा कि संस्था मानती है की सुधारों की वजह से कर्ज में तेज बढोत्तरी का जोखिम भी होगा सुधारों से स्थायी विकास की संभावनाओं को बढावा मिलेगा। इस बात का उल्लेख करते हुए एजेंसी ने कहा कि सरकार आर्थिक और संस्थागत सुधारों के व्यापक कार्यक्रम को लेकर अभी बीच रास्ते में है। वित्त मंत्री ने नोटबंदी और जीएसटी की सराहना करते

हुए कहा कि ऐसे फैसलों की मदद से ही भारतीय अर्थव्यवस्था अधिक डिजिटल बन सकी। इन्ही कदमों की वजह से भारत की दुनियाभर में सराहना की जा रही है ।

जीडीपी में भारत एक पायदान ऊपर– भारत प्रति व्यक्ति औसत जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) के मामले में एक पायदान ऊपर चढ़ा है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की रिपोर्ट के अनुसार वह अब 186 वें स्थान पर पहुँच गया है । हालांकि ब्रिक्स देशों में वह सबसे नीचे है। सूची में खनिज तेल से मालामाल कतर शीर्ष पर है। आईएफएफ की अक्टूबर 2017 की क्रय शक्ति समानता पर आधारित आंकड़ो पर 200 देशों को रैंकिंग दी गयी है। भारत प्रति व्यक्ति औसत जीडीपी पिछले साल 6690 डालर हो गई है। के मुकाबले बढ़कर इस साल 7170 डालर हो गई है। भारत में 2.45 लाख लोग करोड़पति है और देश की कुल घरेलू सम्पदा 5000 अरब डालर है। जहाँ भारत एक पायदान की उछाल के बाद 126 वाँ स्थान पाने में कामयाब रहा वहीं अमेरिका 59500 डालर प्रति व्यक्ति औसत जीडीपी के साथ 13 वें नंबर पर रहा जबकि ब्रिटेन इससे भी नीचे है।

रेटिंग एजेंसी का भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रति बढ़ता विश्वास– मूडीज के इवेस्टर सर्विस वी-पी (सावरेन रिस्क ग्रुप) विलियम फास्टर ने कहा कि एजेंसी का मानना है कि सरकार राजकोषीय समकेन के प्रति प्रतिबद्ध हैं और सतत वृद्धि कर्ज के भार को कम करने में उसकी मदद करेगी। कुछ दिन पहले ही मूडीज ने 13 वर्षों बाद यह कहते हुए भारत की संप्रभु रेटिंग बढ़ायी है कि लगातार आर्थिक तथा संस्थागत सुधारों से वृद्धि की संभावनाएं बेहतर हुई हैं। रेटिंग एजेंसी ने भारत की रेटिंग आउटलुक सकारात्मक से बदलकर स्थिर कर दिया है। फास्टर ने यह भी कहा कि अपग्रेड उस उम्मीद को दर्शाता है कि आर्थिक व संस्थागत सुधारों की दिशा में निरंतर प्रगति भारत की उच्च विकास की क्षमता को बढ़ाने के साथ ही सरकार के कर्ज के लिए इसके व्यापक तथा वित्तीय आधार को बढ़ाएगा और मध्यम अवधि में सामान्य सरकारी कर्ज को धीरे धीरे कम करेगा। मूडीज ने कुछ दिन पहले जारी की अपनी रिपोर्ट में जीएसटी, मॉनीटरी पालिसी फ्रेमवर्क में सुधार सहित अन्य प्रयासों को सराहा है। नोटबंदी, बायोमैट्रिक व्यवस्था के लिए आधार का विस्तार एवं डायरेक्ट बेनीफिट ट्रॉसफर से सब्सिडी की रकम सही व्यक्ति तक पहुँचाने जैसे उपायों को प्रभावी माना गया है रेटिंग से न सिर्फ कर्ज मिलने में आसानी होगी बल्कि कर्ज पर ब्याज भी कम देना होगा इससे रोजगार के भी अवसर बढेंगे।

भारतीय अर्थव्यवथा में सुधार एवं उनके प्रभाव– शीर्ष अमेरिकन क्रेडिट रेटिंग एजेंसी मूडीज द्वारा भारत की रेटिंग सुधार कर इसे सकारात्मक से स्थिर कर देना बताता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में व्याप्त सुधारों का अब असर होने और दिखने लगा है। कुछ दिनों पहले विश्व बैंक की कारोबार सुगमता रैंकिंग में भारत ने तीस अंको की ऐतिहासिक छलांग लगाई थी। अब मूडीज ने भारत की आर्थिक सुधार पर मुहर लगाई है। उसका मानना है है कि जीएसटी, नोटबंदी, आधार, सीधे नकद हस्तांतरण (DBT) और मौद्रिक नीति ढांचे में सुधार से वित्तीय घाटा कम हुआ है और मुद्रास्फीति पर पैनी नजर है। लाभार्थियों के खातों में नकद सब्सिडी देने से भ्रष्टाचार में कमी आयी है और कर्ज में बढ़ी वृद्धि के जोखिम को कम किया गया है इसके साथ साथ चालू खाते का घाटा कम किया गया है और विदेशी मुद्रा भंडार में हुई बढ़ोत्तरी को भी जोड़ लें तो वित्तीय अनुशासन की कसौटी पर हमारी अर्थव्यवस्था खरी उतरती है। इसी कारण मूडीज को यह लग रहा है कि मध्य और दीर्घावधि में भारत में निवेश करना सुरक्षित है क्योकि फंडामेंटल्स सही होने के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था टिकाऊ है। हालांकि इसी मूडीज ने हाल के वर्षों में भारत में बढ़ते कर्ज और उसके बोझ में दबे बैंकों की दयनीय स्थिति की आलोचना की थी। रेटिंग सुधरने का शेयर बाजार पर असर दिखा है। इसके अलावा इसके दो बड़े फायदे होंगे एक तो भारतीय कंपनियों को विश्व बाजार में ज्यादा सस्ती दरों पर कर्ज मिल सकेगा तथा विदेशी निवेशक अब भारत का रुख करेंगे। अलबत्ता रेटिंग सुधरने का यह मतलब नहीं है कि सब-कुछ अच्छा ही अच्छा है। क्रेडिट रेटिंग एजेंसियां मुख्यतः कर्ज एवं निवेश पर ही ध्यान केन्द्रित करती हैं । जबकि हमारी अर्थव्यवस्था के कई मोर्चों पर स्थिति अच्छी नहीं जैसे जीएसटी से जुडी व्यावहारिक मुश्किलें कायम हैं, औद्योगिक उत्पादन तथा

निवेश रूका पड़ा है। निर्यात के क्षेत्र में सुस्ती है तथा रोजगार अब भी बड़ी चुनौती है। इसके अलावा कच्चे तेल की बढ़ती कीमत से आर्थिक अनुशासन पर असर पड़ सकता है। ऐसे में रेटिंग में यह सुधार अब अर्थव्यवस्था के इन क्षेत्रों में सुधार के लिए कदम उठाने का अवसर होना चाहिए।

दिवालिया कानून संशोधन अध्यादेश को मंजूरी– भारतीय राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविंद ने दिवाला एवं दिवालियापन सहिंता, 2016 को और सख्त बनाने के लिए लाए जा रहे अध्यादेश को मंजूरी दे दी। अब बिलफुल डिफाल्टर फंड की हेरा-फेरी कर चुके और फर्जीवाड़े के जुर्म में सजा पा चुके लोग दिवालिया से शमन की प्रक्रिया (दिवाला समाधान प्रक्रिया) के दौरान अपनी कम्पनी या उसकी संपत्ति खरीदने के लिए बोली नहीं लगा पाएंगे। इस अध्यादेश को संभवतः शीतसत्र में होने वाले संसद सत्र में संसद की मंजूरी लेनी होगी।

भारत में आयकर में बदलाव की तैयारी– अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था में अब तक के सबसे बड़े सुधार जीएसटी को लागू करने के बाद केंद्र सरकार अब प्रत्यक्ष कर यानि आयकर के क्षेत्र में भी आमूल-चूल बदलाव की तयारी में है। इस विषय में सुझाव देने के लिए सरकार के एक बयान के मुताबिक बीते एक और दो सितम्बर को आयोजित राजस्व ज्ञान संगम के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि आयकर कानून 1961 को तैयार हुए 50 वर्ष से अधिक हो चुके हैं और इसका मसौदा दोवारा तैयार करने की जरुरत है। यह भी उल्लेखनीय है कि पूर्ववर्ती मनमोहन सिंह सरकार के दौरान भी प्रत्यक्ष कर व्यवस्था में बदलाव की रूपरेखा खींची गई थी। उस दौरान एक समिति के सुझावों के आधार पर मसौदा तैयार किया गया था और उसके बाद एक विधेयक वर्ष 2010 में लोकसभा में पेश भी किया गया। उस समय कोशिश थी कि यदि विधेयक कानून बन गया तो पहली अप्रैल 2012 से इसे लागू किया जाएगा। उसमे वैसे तो कर की दरें आम लोगों के लिए 10, 20 और 30 फीसदी तक रखे जाने की बात कही गयी थी, लकिन कई तरह की कर रियायतों को खत्म करने का प्रयास भी किया गया।

निष्कर्ष– भारतीय अर्थव्यवस्था विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की ओर उन्मुख है। केंद्र सरकार द्वारा अपनायी गयी तकनीकें भारतीय अर्थव्यवस्था में सफल सिद्ध हो रही हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय अर्थव्यवस्था ने ऐतिहासिक उछाल प्राप्त की है। ऐसा परिवर्तन भारतीय अर्थव्यवस्था में लम्बे समयान्तराल के बाद देखने को मिला है। वित्त वर्ष 2004 में भारत ने अमेरिकी संस्था मूडीज में अपनी रैंकिंग Baa3 प्राप्त की थी। इतने लम्बे अन्तराल के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था की रैंकिंग में सुधार हुआ और इस सुधार के साथ भारत ने न केवल अमेरिकी संस्था मूडीज का विश्वास भारत के प्रति बढ़ाया है बल्कि मौद्रिक स्थिरता को भी कायम रखा एवं सरकार की विनिवेश योजना के तहत लाए गए 8000 करोड़ रुपये भारत 22 एक्सचेंज ट्रेडिंग फंड (ETF) को 32000 करोड़ रुपये का अभिदान प्राप्त हुआ है। जो इसके निर्गम आकार का चार गुना है इससे उत्साहित सरकार ने इसके निर्गम आकार को बढ़ाकर 14,500 करोड़ रुपये कर दिया है। निर्गम में खुदरा निवेशकों के हिस्से को 1.450 गुना, रिटायरमेंट फंड के हिस्से को 1.50 गुना और एनआईआई और QTB वाले उद्योग के इतिहास में यह सबसे ज्यादा अभिदान प्राप्त करने वाली न्यू फंड ऑफर है। भारतीय अर्थव्यवस्था में हुए सभी सुधार वित्तीय तकनीक अपनाने के कारण ही संभव हुआ है। अतः यह कहना अतिशियोक्ति नहीं होगा कि भारत में वित्त पोषण हांसिल करने में वित्तीय तकनीक क्रांतिकारी हो सकती है।

आशा की मोमबत्ती

प्रीति, बी.एड. प्रथम वर्ष

रात का समय था चारों तरफ सन्नाटा पसरा हुआ था। नजदीक ही एक कमरे में चार मोमबत्तियाँ चल रही थी, मानो एकांत पाकर आज वो दुसरे से अपने दिल की बात कह रही थी।

पहली मोमबत्ती बोली–''मैं शांति हूँ पर मुझे लगता है अब इस दुनिया को मेरी जरुरत नहीं है। हर तरफ आपाधापी है और लूट मार मची है मैं यहाँ अब और नहीं रह सकती, और ऐसा कहते हुए, कुछ देर में वो मोमबत्ती बुझ गयी ।

दूसरी मोमबत्ती बोली–''मैं विश्वास हूँ, और मुझ लगता है झूठ और फरेब के बीच मेरी भी यहाँ कोई जरुरत नहीं है, मैं भी यहाँ से जा रही हूँ'' और ऐसा कहते हुए वह भी बुझ गयी।

तीसरी मोमबत्ती बोली– तीसरी मोमबत्ती भी दुःखी होती हुई बोली, ''मैं प्रेम हूँ मेरे पास जलते रहने की ताकत है, पर आज हर कोई इतना व्यस्त है कि मेरे लिए किसी के पास वक्त नहीं है, दूसरों से तो दूर लोग अपनों से भी प्रेम करना भूलते जा रहे हैं। मैं यह सब और नहीं सह सकती, मैं भी इस दुनिया से जा रही हूँ।'' ऐसा करते हुए तीसरी मोमबत्ती भी बुझ गयी। वो बुझी ही थी तभी एक बच्चा भागता हुआ उस कमरे में दाखिल हुआ। मोमबत्तियों को बुझता देख वह घबरा गया, और उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे और वह रूंआसा होते हुये बोला, ''अरे तुम मोमबत्तियाँ जल क्यों नहीं रही तुम्हें तो अंत तक चलना है, तुम इस तरह बीच में हमें कैसे छोड़ के जा सकती हो।''

तभी अचानक चौथी मोमबत्ती बोली– ''प्यारे बच्चे घबराओं नहीं मैं आशा हूँ और जब तक मैं जल रही हूँ हम बाकी मोमबत्तियों को फिर से जला सकते हैं।

यह सुन बच्चे की आँखों चमक उठीं और उसने आशा के बल पर शांति, विश्वास और प्रेम को फिर से प्रकाशित कर दिया। जब सब कुछ बुरा होते हुए दिखे, चारों तरफ अंधकार ही अंधकार नजर आये, जब अपने भी पराये लगने लगते हो तो फिर भी उम्मीद मत छोड़िये आशा मत छोड़िये। क्योंकि इसमें इतनी शक्ति है कि ये हर खोई हुई चीज आपको वापस दिला सकती हो।

''अतः अपनी आशा की मोमबत्ती जलाएं रखे, संघर्ष करते रहिए।''

मंजिल मिल ही जायेगी
भटकते ही सही।
गुमराह तो वो हैं
जो घर से निकले ही नहीं।
कोई भी लक्ष्य मुनष्य के हौंसले
से बड़ा नही
हारा तो व ही जो लड़ा ही नहीं ॥ ❑

अच्छे विचार

राजकुमार, बी.एड. प्रथम वर्ष

– कोई भी लक्ष्य मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं, हारा वही है जिसने परिश्रम किया नही।
– सफलता सदैव अच्छे विचारों से आती है, अच्छे विचार अच्छे लोगों के सम्पर्क से आते है।
– जिस दिन आप अपनी सोच बड़ी लेंगे बड़े-बडे लोग आपके बारे में सोचना शुरु कर देंगे
– जब लोग आपकी नकल करने लगें तो समझ लेना, चाहिए कि आप जीवन में सफल हो रहे हैं।
– जीवन में दो ही व्यक्ति असफल होते हैं। एक वे जो सोचते हैं पर करते नहीं, दूसरे वे जो करते हैं पर सोचते नही।''
– मेरी हर एक सोच मेरे भाग्य का निर्माण कर रही है, मुझे कैसा बनना है यह मुझ पर निर्भर करता है।
– जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं कि उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की।
– ज्ञान वो सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिससे आप पूरी दुनिया बदल सकते हैं।
– जीवन ऐसे जियो कि आप कल मर जायेंगें, ज्ञान ऐसे प्राप्त करो कि आप अमर हैं।
– किसी भी सफलता का आधार सकारात्मक सोच और निरन्तर मेहनत है।
– यदि हार का पता न हो तो जीत कोई मायने नहीं रखती है।
– ऐसा कभी भी आप न सोचें कि आप क्या कर सकते हैं, बल्कि आप हमेशा ऐसा सोचें की आप क्या नहीं कर सकते। ❑

हमारा कॉलेज

शहजाद अली, बी.एड. प्रथम वर्ष

पढ़ने वालो पढो कहीं भी इस पर कोई जोर नहीं
पर डी.पी.बी.एस. कॉलिज जैसा जग में कोई और नहीं,
नीला गगन सा भवन है इसका सर्वत्र हरियाली छायी है
पूरे बुलन्दशहर मण्डल में इसने अपनी जगह बनायी है।
जैसी यहां रहे सफाई ऐसी तो कहीं ओर नहीं,
पढ़ने वालों पढो कहीं भी इस पर कोई जोर नहीं
पर डी.पी.बी.एस. कॉलिज जैसा जग में कोई और नहीं

सबका वेश एक सा और इसमें भाईचारा है।
एक एक कण विद्यालय का लगता सबको प्यार है।
कक्षाएं चलती रहती हैं करता कोई शोर नहीं।
पढ़ने वालों पढ़ों कहीं भी इस पर कोई जोर नहीं
पर डी.पी.बी.एस. कॉलिज जैसा जग में कोई और नहीं।

सभी तरह की शिक्षा मिलती सभी तरह का ध्यान है,
हर शिक्षक को अपने-अपने विषयों का पूरा ज्ञान है।
गुरूजनों की पूजा होती, अनुशासन का ज्ञान है,
प्राचार्य को देखा अद्‌भुत योग्य महान हैं।
पढ़ने वालों पढ़ों कहीं भी इस पर कोई जोर नहीं
पर डी.पी.बी.एस. कॉलिज जैसा जग में कोई ओर नहीं,

खेलकूद का हो आयोजन सबको रहता ध्यान है
सहगामी क्रियाओं का भी होता जहां सम्मान है
जैसी शिक्षा मिले यहां पर ऐसी कहीं ओर नहीं
पढ़ने वालों पढ़ों कही भी इस पर कोई जोर नहीं
पर डी.पी.बी.एस. कॉलिज जैसा जग में कोई ओर नहीं

❑

मेरा कॉलिज महान

शैलेन्द्र कान्त, बी.एड प्रथम वर्ष

हिन्दुस्तानी चित्रकार ने
ऐसा चित्र बनाया
डी.पी.बी.एस. (पी.जी.) कॉलेज
को महान बनाया
कितनी सुंदर इसकी बसुधा
कितना सुंदर इसका जहान
प्राकृतिक सुविधाओं का है
यहाँ पर भरपूर योगदान
अध्ययन करने हेतु बना देते है।
ये बहुत अच्छा परिवेश यहाँ
निकट अचल पर्यावरण है इसके
पेड़ो की छटा निराली है।
जिसने इसकी रचना की है।
वह कौन अनोखा माली है।
यू.के. झा प्राचार्य इसके
कितने गौरवशाली है।
होकर निडर कार्य को करते
कितने वैभवशाली है।
अनुशासन में रहना छात्रों का
अनुशासन वर्ग सिखलाते है,
उलटा काम देख छात्रों का
सीधा कर दिखलाते है।
शिक्षा के अलावा होते हैं
यहाँ अनेको प्रोग्राम
खेलो की प्रतियोगिता का
जीतने में भी इनका नाम
अध्यापक वर्ग यहाँ सभी छात्रो के
बड़े हितकारी है।
समय पर अधिक ध्यान देकर
परीक्षाफल अच्छा दिखलाते है।
प्रकृति माँ निज कर कमलों से
कॉलेज का मान बढ़ाती है।
छात्रों की किलकारी से
वसुधा कितनी हर्षाती है। ❑

कोशिश

पूनम, बी.एड. प्रथम वर्ष

करे कोशिश अगर इन्सान तो क्या-क्या नहीं मिलता
वो चलकर तो जरा देखे, जिसे रास्ता नहीं मिलता
भले ही धूप हो काँटे, हाँ पर चलना ही पड़ता है।
किसी प्यासे को घर बैठे, कभी दरिया नहीं मिलता
करे कोशिश.....

कहें क्या ऐसे लोगों की, जो कहकर लड़खड़ाते हैं।
कि हम आकाश छू लेते हमें, मौका नहीं मिलता
कमीं कुछ चाल में होगी, कमीं होगी, इरादों में
जो कहते कामयाबी का हमें, रास्ता नहीं मिलता।

❑

History of Mathematics in India

Gurudatt Sharma, Assistant Professor, B.Ed. Department

In all early civilizations, the first expression of mathematical understanding appears in the form of counting systems. Numbers in very early societies were typically represented by groups of lines, though later different numbers came to be assigned specific numeral names and symbols (as in India) or were designated by alphabetic letters (such as in Rome). Although today, we take our decimal system for granted, not all ancient civilizations based their numbers on a ten-base system.

The Decimal System in Harappa : In India a decimal system was already in place during the Harappan period, as indicated by an analysis of Harappan weights and measures. Weights corresponding to ratios of 0.05, 0.1, 0.2, 0.5, 1, 2, 5, 10, 20, 50, 100, 200, and 500 have been identified, as have scales with decimal divisions.

Mathematical Activity in the Vedic Period : In the Vedic period, records of mathematical activity are mostly to be found in Vedic texts associated with ritual activities. Arithmetic operations (Ganit) such as addition, subtraction, multiplication, fractions, squares, cubes and roots are enumerated in the Narad Vishnu Purana attributed to Ved Vyas (pre-1000 BC). Examples of geometric knowledge (rekha-ganit) are to be found in the Sulva-Sutras of Baudhayana (800 BC) and Apasthmaba (600 BC) which describe techniques for the construction of ritual altars in use during the Vedic era. It is likely that these texts tapped geometric knowledge that may have been acquired much earlier, possibly in the Harappan period. Baudhayana's Sutra displays an understanding of basic geometric shapes and techniques of converting one geometric shape (such as a rectangle) to another of equivalent (or multiple, or fractional) area (such as a square).

Panini and Formal Scientific Notation : A particularly important development in the history of Indian science that was to have a profound impact on all mathematical treatises that followed was the pioneering work by Panini in the field of Sanskrit grammar and linguistics. Besides expounding a comprehensive and scientific theory of phonetics, phonology and morphology, Panini provided formal production rules and definitions describing Sanskrit grammar in his treatise called Asthadhyayi.

Philosophy and Mathematics : Philosophical doctrines also had a profound influence on the development of mathematical concepts and formulations. Like the Upanishadic world view, space and time were considered limitless in Jain cosmology. Jain set theory probably arose in parallel with the Syadvada system of Jain epistemology in which reality was described in terms of pairs of truth conditions and state changes. The Anuyoga Dwara Sutra demonstrates an understanding of the

law of indeces and uses it to develop the notion of logarithms. Terms like Ardh Aached , Trik Aached, and Chatur Aached are used to denote log base 2, log base 3 and log base 4 respectively. Buddhist literature also demonstrates an awareness of indeterminate and infinite numbers. Buddhist mathematics was classified either as Garna (Simple Mathematics) or Sankhyan (Higher Mathematics). Numbers were deemed to be of three types: Sankheya (countable), Asankheya (uncountable) and Anant (infinite).

Emergence of Calculus : In the course of developing a precise mapping of the lunar eclipse, Aryabhatta was obliged to introduce the concept of infinitesimals - i.e. tatkalika gati to designate the infinitesimal, or near instantaneous motion of the moon, and express it in the form of a basic differential equation. Aryabhatta's equations were elaborated on by Manjula and Bhaskaracharya who derived the differential of the sine function. Later mathematicians used their intuitive understanding of integration in deriving the areas of curved surfaces and the volumes enclosed by them.

Applied Mathematics, Solutions to Practical Problems : Developments also took place in applied mathematics such as in creation of trigonometric tables and measurement units. Yativrsabha's work Tiloyapannatti gives various units for measuring distances and time and also describes the system of infinite time measures. In the 9th Century, Mahaviracharya (Mysore) wrote Ganit Saar Sangraha where he described the currently used method of calculating the Least Common Multiple (LCM) of given numbers. He also derived formulae to calculate the area of an ellipse and a quadrilateral inscribed within a circle (something that had also been looked at by Brahmagupta) The solution of indeterminate equations also drew considerable interest in the 9th century, and several mathematicians contributed approximations and solutions to different types of indeterminate equations.

Educational Technology: Importance & Utility

Dr. Sudha Upadhyaya, Assistant Professor, B.Ed. Department

Educational technology has influenced modern educational world. In gaining knowledge of students in educational institutions and in the direction of qualitative development of teaching the educational technology has unique role. Besides formal education, informal educational has been influenced by Educational technology. Curriculum development and evaluation have also been enriched by the use of educational technology. in brief , the utility of educational technology may be seated in the following points :

1. It has expanded individual and collective teaching.
2. It has developed unexpected production of

educational techniques.

3. It has given scientific base for teaching.
4. It has developed quality in instruction.
5. Through it rapid learning has become possible.
6. It has developed aptitude and motivation in the field of education.
7. Knowledge communication from person to person has become possible through its use.

Learning field and subject materials of educational technology

Educational technology includes whole teaching process and educational system. With the study point of view, in the area of educational technology mainly following study materials are introduced—

1. Teaching technology: it includes different aspects of teaching. in other words , all those aspects which are used to make the teaching effective are applied due to this in it, methods of teaching, standard of teaching and concepts of teaching etc. are studied.
2. Learning technology: in it concept of learning, principles of learning and , elements which make the learning effective are studied.
3. Curriculum technology: in this scientific principles related to curriculum, rules and opinions etc. are discussed.
4. Behaviour technology: different aspects of the behaviour of teacher and taught are included in the technology.
5. Administration technology: in this technology, principles and rules of administration, educational planning, educational organisation and different aspects of institutional management are studied.
6. Instructional technology: it studies different aspects of instruction, programmed instruction, helping elements of instruction and methods of adjustment.
7. Instructional design: in this technology, investment or input of teaching, process of teaching and different aspects of output are studied, in this way the field of educational technology is very wide.

Under education teaching – learning , instruction and training etc are included , in the same way as under educational technology , different types of techniques have included, according to objectives , educational technology has been divided into four groups as under :

1. Behaviour technology
2. Instructional technology and learning technology.
3. Instructional design.
4. Teaching technology.

Importance of Information Technology for Teacher Empowerment

Dr. K.C. Gaur, Head of the Department, B.Ed. Department

Introduction

Teachers play a critical role in the development of the nation. Kothari commission begins its report with this remark- "The destiny of India is being shaped in its classrooms no doubt a sound programme plays a significant role in nation's development and the quality of education programme is greatly determined by the quality of the teachers". Thus teacher is the pivot of the educational system. So, teacher must: be well trained and powerful.

Power to Empowerment

Ashcroft views power as "personal in origin and intention". Dewey's idea that "Power" refers to an Individual's inherent abilities or capabilities. According to Ashcroft an empowered person..... would be someone who believed in his or her ability / capability to act, and this belief would be accompanied by able/ capable action" means an empowered person's final satisfaction is in their condition.

Teacher Empowerment

It is a process in which there is cultivation of ability, capacity, imagination, management, Self evalution and self-central of teachers keeping in account the changing concerns of education. It is directly related to the capacity, efficacy and effectiveness of the teacher. Thus, we can say that the all round development of theacher there are many dimensions of a teacher. Empowerment-one of them is information technology information technology play very important role to empower teachers in this global age.

Role of Information Technology

The Introduction of information technology in the filed of education was brought about a revolution in the field of education. The computers have become more accessible in the schools. The introduction of computers has changed the definition of classroom instructions. SSA has implemented the CAL Programme in elementary schools of Gujarat State to empower teacher.

With the use of Information & Communication technology teachers can take a leading role in the production of mullti-media educational software in different school. Subjects, skills of learning through internet, accessing information from different websites, Creating ones Own Website to Contribute and share one's own experience Teleconferencing is an effective means of bringing teachers, teacher-trainees, teacher-education institutions together who stay miles apart as a mutual learning strategy.

Use in different methods of teaching learning

Information Technology is a very important part of problem based teaching learning and project based teaching learning with the internet access, teacher can find something on the topic and can bring into

the classroom.

It is also important in organizing their information and categorizing it through database, comparing it as in a spreadsheet talking about it as inward processing document or communicating with someone though internet. They have been able to bring more data into the picture and manipulate and analyze that data so much more Sophisticated ways in their old activities like when they were using a piece of paper and a calculator. Today's. reractive multimedia technology provides us with a new way to draw upon natural impulses. These new media voice, music, graphics, photos, animation and video. Teacher can make students to explore the relations among ideas and experiences. These new media are interactive and conclusive to active. Again some educationists note that the focus of the educational technology should not be on the capabilities of the hardware or software but rather on how teacher uses it.

Classification of Educational Technology

Educational technologies can be classified into four board uses, like they can tutor they can explore, They can be plied as tools and they can Communicate. It is used as a tutor when it does teaching directly, typically in a e-like manner. Technological system pro videos information, demonstration, displays a phenomention or predure and practice to the student to solve problems. In contrast, technology is used to explore when it allows teachers to move through information or obtain demonstration upon request. Through the discovery one can learn facts, concepts, procedures and strategies interact with the system. Technologies applied as tools provide the same kind of tools generally found in the workplace at the home. Finally, use of technology to Communicate encompasses programs and devices that allow teachers and students to send and receive message and other information through networks or other technologies.

Helpful in improving student's achievement

Teacher can develop the higher order thinking skill of their students by engaging them in authentic, complex tasks within collaborative learning contexts. Nowadays, teacher realize that computer networking offers flexible and powerful new ways to accomplish a range of goals that have been important in Schools Such as gaining and use of informational resources, establishing contact with students and professionals in other places and putting teacher in touch with a broader community of teachers in their disciplines etc.

Professional Development

Technology not only helps to provide meaningful instruction and activity for classroom but also give time to discuss technology, use with students and professional collaboration includes communicating With Similar situation. This activity can be done in face to face meeting or by using by email or video conferencing. It increased collaboration among teachers within a school and increased interaction with external collaborators and resources. Teachers are working with a technology infrastructure that realistically supports the work then they will be more activa tad and Can make a real difference in the classroom.

Effective teaching & Role of media

Dr. Sunita Gaur, Assistant Professor, B.Ed. Department

The role & responsibilities of teachers are inter related and inter dependent. Teacher's responsibility varies through ages & teachers are required to perform various functions according to the needs & requirements at different stages of education.

The qualities of head, heart & hand mainly constitute the teacher's personality. His intellect, knowledge & thoughts are the qualities of head, sympathy, understanding, fellow feeling, love & affection are the qualities of heart & handwriting, drawing, painting & other muscular activates are the qualities of land.

Teachers should be the living in connection of the great trinity of truth, goodness & beauty. He must have a deep sense of reasoning right & wrong; he must cultivate non-violence & objective Outlook towards everything & he must appreciate beauty & Orderliness. His vision of life must be based on love, Sympathy & affecticn for all in general & for the needy & deprived classes of the society in particular. According Viswakabi Rabindranath –

"A lamp never lights another lamp.
Unless it Continues to bum its own flame
A teacher can never truly teach,
Unless he is still learning in himself".

The teacher as the leader of the group exerts a great impact of his personality on his teaching on interaction On the achievement of students. He should ensure democratic organization & active participation of students for optimum realization of the goals. Teaching is therefore more a facilitating a motivating & promoting process. It is halping students to acquire knowledge, skills, ideals, attitudes, interests and appreciations, leading to changed behavior & growth of a person with a balance personality.

The system consisting of examination, syllabi, teaching method & instructional material has formed a grand corspiracy to persuade everyone involved in it that learning is to be equalized with memorization. As a result, learning is a heavy task to be undertakes for a system of rewards not directly related to the beauty & power of subjects like mathematics, chemistry, Literature or history. The fact that students may come through this process with an interest in or even a love for chemistry or Mathematics or History, must be explained by something Out side the system.

The characteristics of an effective teacher have;

1. Teacher can teach using different methods of teaching employing a variety of audio-visual aids.
2. He should have moral prestige & intellectual depth.
3. He should have a sense of humors.
4. He should be man of all-round personality.
5. He should be confident & at ease when teaching.

6. He has good relations with the pupils & he manages the class well.

In Conclusion, it may be pointed out that

"A poor teacher informs.

An average teacher gives knowledge

A good teacher explains

A better teacher demonstrates

An excellent teacher gives experience'

A great teacher inspires.

The modern media of communication have come in a large way in the shape of radio, T.V. Computer, etc. In this paper an attempt will be made to deal with different media on Teacher education.

Radio-cum-correspondence in Service teacher training programmes are organized by different government & non-government agencies in various states for training teachers in the subjects in which they are found deficient and incapable to transact the newly developed & upgraded curriculum.

Television is, no doubt, dynamic and versatile medium. However, proper planning, production, utilization and evaluation can help it to be effective and useful. With a view to enabling teachers to be upto-date in their knowledge and efficient in their professional skills, suitable ETV programmes are essential. Favorable attitude and motivation have to be created among the teachers for the use of ETV programmes. It is felt imperative that specific radio and TV programmes should be produced and broadcasting a planned way in Order to cater to the needs of teachers in the subjects or topics where they are found deficient.

It is also necessary to conduct studies of different kinds internal and external, for native and external, formative and summative in order to improve the Radio and TV programmes in the desired lines.

So that Effective Teaching can be made more effective, efficient and successful.

A Teacher

Pooja Chaudhary, B. Com. I

"East or west a teacher is always bets
in her life there is no rest"
"Every moment for her is new test
he is like a ladder that helps other"
"To attain heights of glary"
"As a guide he is like a AIRTEL
which Says.....Connecting People"
"For every duty he is like NIKE SHOES
which says..... JUST DO IT!!"
"For every he is like a ANGLE
which says....MAIN HOON NA"
"In Punctuality is like a TITAN WATCH
which says....SAMAY KE SATH CHALO"
"At lest I want to say only one thing
respect your teacher and change your
habbit because teacher is always right"
"Day Ho Ya Night
Teacher is Always Right
East or West
Teacher is Always Best"

Role of Computer

Sakshi Agrawal, BCA II

In the current world, it's almost impossible to imagine that someone can live without computers. They have become an electronic device of almost every day use for individuals of every age, and essential in almost all the business dealings that are made nowadays.

Computers process various types of data, which is entered by users. These electronic devices execute a number of programs to achieve the correct result. The computer is the most brilliant gifts of science. It is an electronic device for storing and analyzing information feed into it, for calculating, or for controlling machinery automatically.

There are many different languages that can be used to programme a computer. BASIC, COBOL, FORTRAN, C, C++, JAVA and Visual Basic are some of them Speed, accuracy, reliability and integrity are some of the characteristics of a computer. It can execute over a million instructions per second without committing any mistake.

Education : Computers have a great contribution in the education field. Moreover, the concept of smart classes, books, multimedia learning, etc., has become possible only because of computers.

Internet : With the help of internet on computers we stay connected with our friends and family. Computers provide us information and also entertain us. Computers are extremely helpful in the distribution of information and knowledge. Also, we can watch movies, videos, news, etc., on computers with internet.

Calculation : While computers carry out calculations and store and process data at office, they are also useful at home for many domestic tasks. For instance, they help us calculate the household budget by storing every day/monthly essential data.

Help Businesses to grow : Regardless of being small or big, various businesses maintain their books of accounts in computers. Also, there are various online methods like email campaign, social media marketing, etc., that help businesses to promote and grow.

Conclusion : Computer is one of the best gift of technology. They are a pack of entertainment, information, knowledge and intelligence. Undoubtedly, computers have made significant contribution in human life and progress, but we suggest that one should not become a slave of technology! What we exactly mean to say is that we should spend time in front of screen with a purpose and meaning and that, we should always remember that the real world lies off-screen!

What is the meaning of commerce?

Deepika, B.com. I

"The commerce in real life is rarely so simple and never so pust." Which stream should I choose after 10th? The commerce stream after completion of class 10 is qute a popular choice in India, as most students feel that the stream after then a wide arena of carrear options to pursue after class 12, that would bring them both success as well as financial security easily. However, what most student do not realize is that just as is the case with the science stream, a student also needs to have a certain aptitude for commerce, to be completely successful in it.

Some student may choose the commerce stream for this reason. However, It is a fact that if they have a mind that is more suited to a career in the humanities stream or even the science stream, they would find if hard to survive and perform well in commerce.

But even them, **we will tell you why onw should choose commerce**. To help you guage whether you are meant to purpose a career in the field of commerce, its importance, scope and careers. This section provide a basic knowledge of what this stream is all about.

Real meaning of commerce : Commerce as a stream of education can be defined as a study of trade and business activities such as the exchange of goods and services from producer to final consumer. The main subjects that are taught in the commerce stream in class 11 & 12 include economics, Accounting & Business studies. Choose this field if you have a genuine Interest in the subject and have an affinity per numbers, the economy and business.

Economics is a social science that deals with the study of the production, distribution, and consumption of goods & services. Economic has two broad branches : Micro economic and Macro economic.

Micro Eco-When the unit of analysis is the Individual agent, such as a household or firm and macro Eco, where the unit of analysis is an economy as a whole.

Business studies is an important subject for commerce students. There are some of the reason. **Why one should study Business studies**. Business studies is a subject that deals with the operation and orqanization of modern business enterprises. The subjects covers each features of a business firm, such as how a firm will be affected into different business situations.

Accountancy is an integral part of commerce stream. It's scope and reasons for studing accountancy are olaborated below :

- Studying account enable a student to learn and discover the various cares of success and failure

of different business enterprises.

· A Student studing accountancy will learn the art of recording, classifying and summarizing in a significant manner and in term of money, transactions and events which are financial in character to any extent and the interpretation of these results of these transaction and events.

· The word **statistics** seems to have been derived from the Latin word '**Status**' or Italian word '**statista**' or the German word '**statistik**' or the French word '**statistique**' each means a political state.

In India, An efficient system of collecting official and administrative statistics existed even 2000 yr. age.

In singular sense statistics is used to describe the principles and methods which are employed in collection, presentation, analysis and interpretation of data.

These devices help to simplify the complex data. And make it possible for a common man to understand if without much difficulty.

Students who wish to take up the commerce stream should keep in mind that his subject is not an easy alternative as compared to science. Both science & Commerce are complex study areas in their own ways and cannot be compared. Hence, if a student wishes to pursue the commerce stream only because they fill that science is not a suitable for them, they need to rethink their choice the commerce stream should be pursued by student who have an optitude as well as an av interest in it.

Make me a Promise Dad

Gourav Kaushik, B.C.A., III

Make me a Promise, Dad,
To his father said a little lad.
While driving a car,
Put on your Seat belt;
And when riding a Scooter,
Don't forget your Helmet.
Though you have it with you all the while when on the move
Nover use or answer the mobile.
Don't Mind my telling you so,
No Matter Where you go
To work or to roam
Dad, We want you safe back home.

Happiness

Ginni Sharma, B.Com. I

In our busy life there is work, tensions and problems and alot of pain too. people have no time to enjoy and not to feel their life. So many things are taking away our happiness life- I regular sleep, work pressure, mindless eating and insufficient exercise. But don't you worry There's music to helps our mind and give relex in busy hours. Music not only help mental & Cars but can give new personality and power to be anything without any tension. Music helps in thanging your thoughts and feelings. We can listen music all time and while we sitting in the free music gives us sufficient happiness...

The Smog: A State of Air Pollution

Dr. S. K. Singh, Assistant Professor, B.Ed. Department

The term smog was first used in 1905 by Dr. H. A. Des Voeux to describe the conditions of fog that had soot or smoke in it. Smog is basically derived from the merging of two words; smoke and fog. Smog is also used to describe the type of fog which has smoke or soot in it. Smog is a yellowish or blackish fog formed mainly by a mixture of pollutants in the atmosphere which consists of fine particles and ground level ozone. Smog which occurs mainly because of air pollution can also be defined as a mixture of various gases with dust and water vapour. Smog also refers to hazy air that makes breathing difficult.

Causes of smog : Smog is caused as a result of industrial activities, vehicle traffic, open burning, incinerators, higher temperature, and geography of a place, sunlight and calmer winds. These factors contribute to all-encompassing smog, which can remain trapped in the atmosphere with higher temperature and sunlight. *The main sources of these precursors are pollutants released directly into the air by gasoline and diesel-run vehicles, industrial plants and activities, and heating due to human activities.* Smog is often caused by heavy traffic, high temperatures, sunshine and calm winds. These are few of the factors behind increasing level of air pollution in atmosphere.

Formation of Smog : The atmospheric pollutants or gases that form smog are released in the air when fuels are burnt. When sunlight and its heat react with these gases and fine particles in the atmosphere, smog is formed. It is purely caused by air pollution. Ground level ozone and fine particles are released in the air due to complex photochemical reactions between volatile organic compounds (VOC), sulphur dioxide (SO2) and nitrogen oxides (NOx). These VOC, SO2 and NOx are called precursors. During the winter months when the wind speeds are low, it helps the smoke and fog to become stagnate at a place forming smog and increasing pollution levels near the ground closer to where people are respiring. It hampers visibility and disturbs the environment.

Effects of smog : Exposure to smog can be severely harmful for the health of the exposed as it can cause/aggravate health conditions such as follows :

Chest infections/Irritation: When you inhale ground-level ozone, it can affect your respiratory system in an adverse way, leading to coughing and irritation. When you are exposed to it for longer durations, it can even lead to lung infections. **Worsening of asthma/bronchitis/emphysema** : Patients of such respiratory problems have the worst of times when smog hits such high levels. Patients can have frequent and severe asthma attacks. In extreme cases, the risk of developing these diseases may also significantly shoot up.

Cold and eye irritation: Smog significantly

reduces one's immunity to cold and can cause irritation in the eyes.

Damage to crops: Besides impacting humans negatively, smog can also inhibit plant growth and cause damage to forests and crops.

Smog is a devastating problem especially due to the fast modernization or industrialization as the hazardous chemicals involved in smog formation are highly reactive is spread around in the atmosphere. Smoke and sulphur dioxide pollution in urban areas is at much lower levels than in the past, as a result of law passed to control emissions and in favour of cleaner emission technology. Smog is harmful and it is evident from the components that form it and effects that can happen from it. It is harmful to humans, animals, plants and the nature as a whole. Many people deaths were recorded, notably those relating to bronchial diseases. Heavy smog is responsible for decreasing the UV radiation greatly. Thus heavy smog results in a low production of the crucial natural element vitamin D leading to cases of rickets among people.

So how should you fight with the forceful impact of smog? It can be reduced by implementing modifications in your lifestyle, decreasing the consumption of fuels that are non-renewable and by replacing them with alternate sources of fuel which will reduce toxic emissions from vehicles.

Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana (PMKVY)

Gaurav Sharma, B.Ed. I

Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana (PMKVY) is the flagship scheme of the Ministry of Skill Development & Entrepreneurship (MSDE). The objective of this Skill Certification Scheme is to enable a large number of Indian youth to take up industry-relevant skill training that will help them in securing a better livelihood. Individuals with prior learning experience or skills will also be assessed and certified under Recognition of Prior Learning (RPL). Under this Scheme, Training and Assessment fees are completely paid by the Government.

Key Components of the Scheme

Short Term Training : The Short Term Training imparted at PMKVY Training Centres (TCs) is expected to benefit candidates of Indian nationality who are either school/college dropouts or unemployed. Apart from providing training according to the National Skills Qualification Framework (NSQF), TCs shall also impart training in Soft Skills, Entrepreneurship, Financial and Digital Literacy. Duration of the training varies per job role, ranging between 150 and 300 hours. Upon successful completion of their assessment, candidates shall be provided placement assistance by Training Partners (TPs). Under PMKVY, the entire training and assessment fees are paid by the Government.

Payouts shall be provided to the TPs in alignment with the Common Norms. Trainings imparted under the Short Term Training component of the Scheme shall be NSQF Level 5 and below.

Recognition of Prior Learning : Individuals with prior learning experience or skills shall be assessed and certified under the Recognition of Prior Learning (RPL) component of the Scheme. RPL aims to align the competencies of the unregulated workforce of the country to the NSQF. Project Implementing Agencies (PIAs), such as Sector Skill Councils (SSCs) or any other agencies designated by MSDE/NSDC, shall be incentivized to implement RPL projects in any of the three Project Types (RPL Camps, RPL at Employers Premises and RPL centres). To address knowledge gaps, PIAs may offer Bridge Courses to RPL candidates.

Special Projects : The Special Projects component of PMKVY envisages the creation of a platform that will facilitate trainings in special areas and/ or premises of Government bodies, Corporate or Industry bodies, and trainings in special job roles not defined under the available Qualification Packs (QPs)/ National Occupational Standards (NOSs). Special Projects are projects that require some deviation from the terms and conditions of Short Term Training under PMKVY for any stakeholder. A proposing stakeholder can be Government Institutions of Central and State Government(s)/Autonomous Body/Statutory Body or any other equivalent body or corporates who desire to provide training to candidates.

Kaushal and Rozgar Mela : Social and community mobilisation is extremely critical for the success of PMKVY. Active participation of the community ensures transparency and accountability, and helps in leveraging the cumulative knowledge of the community for better functioning. In line with this, PMKVY assigns special importance to the involvement of the target beneficiaries through a defined mobilisation process. TPs shall conduct Kaushal and Rozgar Melas every six months with press/media coverage; they are also required to participate actively in National Career Service Melas and on-ground activities.

Placement Guidelines : PMKVY envisages to link the aptitude, aspiration, and knowledge of the skilled workforce it creates with employment opportunities and demands in the market. Every effort thereby needs to be made by the PMKVY TCs to provide placement opportunities to candidates, trained and certified under the Scheme. TPs shall also provide support to entrepreneurship development.

Monitoring Guidelines : To ensure that high standards of quality are maintained by PMKVY TCs, NSDC and empanelled Inspection Agencies shall use various methodologies, such as self-audit reporting, call validations, surprise visits, and monitoring through the Skills Development Management System (SDMS). These methodologies shall be enhanced with the engagement of latest technologies.

Tourism Circuits of Uttar Pradesh

Dr. (Smt.) Chandrawati, Assistant Professor, Chemistry Department

1. The Buddhist Circuit :

Thousands of years ago, a large part of the life of Gautam Buddha was spent in this area. The Buddha attained enlightenment, travelled widely, spread his message and towards the end, attained mahaparinirvan in this region. The circuit has places having grand Stupas, ancient monasteries, Buddhist chants and a steady stream of Buddhist pilgrims and monks who come here for meditation and worship. What a devout can perceive of the entire life of Lord Buddha in Uttar Pradesh, cannot be replicated anywhere else. If you are looking for enlightenment in your life, this is the Circuit to visit.

Kapilvastu : This is the holy place where Prince Siddharth grew up as a child.

It is identified with the present day township of Piprahwa in Siddharthanagar district.

Devotees feel transported thousands of years back to an era when young Prince Siddharth renounced all worldly riches and pleasures in search of salvation.

Kaushambi : About 60 km from Allahabad, this is believed to be the place where Buddha delivered many sermons.

Renowned as a centre of higher learning for Buddhists, it is believed to be among the most prosperous cities of those times.

Excavations have revealed ruins of an Ashokan Pillar, an old fort and a grand monastery, besides a huge number of sculptures and figurines, cast coins and terracotta objects.

Sarnath : Just 10 km away from Varanasi, this is where lord Buddha delivered his first sermon after attaining Enlightenment.

The great Dhamekh Stupa and its ruins still reverberate with the Buddha's teachings.

The smooth glistening pillar established by Emperor Ashoka in 273-232 B.C. marks the foundation of the Buddhist Sangha.

The Lion Capital atop this pillar is now India's National Emblem.

Sankisa : Legend says that Lord Buddha descended here after giving sermon to his mother in heaven.

It is identified with Basantpur village on the bank of Kali river in Farrukhabad district.

Emperor Ashoka erected a pillar here with an elephant capital to mark this holy spot.

Sravasti : About 15km from Bahraich, lies this sprawling complex of well-preserved stupas and ruins.

It was the capital of the ancient Kosala Kingdom and here the Buddha showed his divine prowess to impress upon the non-believers.

Believed to be founded by the mythological king Sravast, it is the place where Buddha spent many monsoons and delivered important sermons.

Kushinagar : About 50 km from Gorakhpur, it is the place where the Lord Buddha left his corporal self and attained Mahaparinirvana.

A uniquely designed Mahaparinirvana temple houses a huge statue of the reclining Buddha, excavated in 1876.

Extensive excavations have revealed the presence of a large community of monks living here as late as 11th Century A.D.

2. The Bundelkhand Circuit:

The romance and magic of Bundelkhand are still alive today. Rugged palaces and forts, tough, valiant and courageous people make a visit to this land a magical experience. Tales of chivalry and valour bear a silent testimony to the splendor of an era long gone by.

Bithoor : A small temple town on the outskirts of Kanpur, on the bank of the holy Ganga.

Take a quick trip around Valmiki Ashram, Brahmavart Ghat, Dhruv Teela and Nana Saheb's palace.

It offers a grand view of the vast expanse of the Ganga on sunrise and sunset.

Chitrakoot : It is famed in Hindu mythology and the epic Ramayana as the place where Lord Ram and Sita spent many years of their exile.

This holy town along the Mandakini river is spread over U.P. and Madhya Pradesh.

Visitors say that they could feel the tranquility and peace of mind as soon as they reach Chitrakoot.

Hanuman Dhara, Kamad Giri, Sphatik Shila and Ram Ghat are some of the must-see places here.

Jhansi : Jhansi is the gateway to the legendary Bundelkhand region known for tales of valour and courage.

It is linked with the legend of Rani Laxmibai who at the age of 22 had led freedom fighters against the British.

A picturesque town overseen by the majestic Jhansi Fort, it also has several temples and lakes.

Kalinjar : About 280 km from Jhansi, close to Banda, the ancient Fort of Kalinjar had strategic importance during medieval times.

The Kalinjar Fort, situated at a height of 700 ft, is a veritable historical treasure house.

The picturesque Vindhya ranges give it a charm which will linger in your memory for a long time.

The Neelkanth Temple, legend says, is built at the spot where Lord Shiva, after consuming poison that emerged from the churning of ocean, came to rest for some time.

Mahoba : It is small town known for its myriad lakes and temples situated on hills and valleys.

The impregnable hilltop fort and the man-made lakes built by Chandela kings are engineering feats.

Ballads praise its days of glory and narrate the inspiring saga of Alha and Udal, the two legendary warrior brother to sacrifice their lives for the honour of their land.

The Sun Temple at Rahila is a unique 9th century granite structure. Its basic architectural plan is similar to temples found in Khajuraho.

3. Braj Circuit:

This ancient land is an integral part of the life of Lord Krishna. Melody, harmony and art reign supreme in this region steeped in history and legends.

A visit to the temples and monuments in Braj is a trip straight into history. It is also the seat of the erstwhile great empire of the Mughal kings.

Agra : Agra is the city of the Taj Mahal and capital of the erstwhile Mughal empire.

The marble monument is a picture straight out of a colourful history book.

Get wonder-struck at the awesome architecture of the Agra Fort and Fatehpur Sikri.

Take a memorable walk through the gardens, the lanes where art and craft takes shape of the buzzing bazaars.

Almost next door to New Delhi, Agra is a must-do for all those who are seeking to revisit history.

Mathura : Mathura and Vrindavan are the fabled twin cities of Braj Bhumi.

Amidst the mesmerizing temples, music, art and dances, the legend of Lord Krishna comes alive every day.

Charkula dance, Raasleela and the renowned Mathura Museum will keep you asking for more.

Vrindavan : This is the place where Lord Krishna played his flute and performed leelas.

It is immortalised in the poems of Meerabai, Surdas and Vallabhacharya.

The Rangaji temple, an amalgam of Rajput and South Indian architecture, is the largest temple dedicated to Lord Vishnu.

The Bankey Bihari temple, Radha Madhav temple and ISKCON temple are some of the examples of great architecture.

4. Awadh –Lucknow Circuit:

Peace, harmony and finesse have made this region known all over the world. Situated in the heart of Uttar Pradesh, this region has a global identity for its culture, cuisine, literature and spirituality. Monuments, spiritual destinations and nature's nests beckon you in Awadh.

Dewa Sharif : A renowned shrine of Sufi Saint Haji Waris Ali Shah about 25 km from Lucknow.

The impressive shrine attracts devotees of all communities.

An annual fair is organized here which in November is a perfect example of universal brotherhood.

Naimisharanya : A sacred place of pilgrimage for Hindus dating its significance to Vedic era.

Chakra Teerth, Vyas Gaddi and Suraj Kund are places of worship and ancient architecture.

Ayodhya-Faizabad : Famed as the birth place of Lord Ram, Ayodhya is an important pilgrimage centre.

Temples and mosques exist side by side in all architectural splendor in the twin cities of Faizabad and Ayodhya.

Ramkot, Hanumangarhi,Kanak Bhawan and Suraj Kund appear to spring up from pages of history.

The ghats of Saryu bring alive a deeply spiritual experience.

Faizabad was the seat of the Nawabs of Awadh.

5. Vindhya- Varanasi Circuit:

Varanasi is among the most ancient living cities in the world. Located along the Ganga, it is a sacred place for all Hindus, Jains and Buddhists. The Vindhya ranges of mountains straddle the states of

Uttar Pradesh, Madhya Pradesh and Chhattisgarh. The region not only has religious and spiritual significance but is also among the richest in mineral wealth.

Varanasi : A visit to this legendary city will be among the most moving trips you'll ever make.

It is a land of religious, spiritual and academic thought and beliefs.

The evening Ganga arti changes the way you see the holy Ganga.

The fabled Banarsi silk saree and carpets have made the city a big name in global markets.

A morning spent at the ghats and temples is a spiritually cleansing experience.

Chunar : About 40 km from Varanasi is this unique mix of religion, history and nature.

The forests in the Vindhya ranges along the Ganga are ideal for a day's trek.

The imposing Chunar Fort along the Ganga is a marvellous sight.

Vindhyachal : Situated on the bank of the Ganga near Mirzapur amid the Vindhya hills it is a sacred pilgrimage site.

The Shaktipeeth of goddess Vindhyavasini is supposed to be the abode of divine power and blessings.

6. Wildlife -Eco Tourism Circuit:

The state has one of the richest biosphere reserves in the Tarai. This lush green region is home to a host of wildlife and fauna. Tigers, elephants, deer, crocodiles, dolphins, exquisite bird species and dense vegetation are dream come true for the nature lover.

Dudhwa : This National Park is home to tigers, leopards, varieties of deer and antelopes, elephants and birds.

A quiet, tranquil and green nest in the Tarai foothills is an excellent weekend getaway.

The rich green forests and the rivers flowing through it give you the complete wilderness experience.

Pilibhit : The Pilibhit Tiger Reserve is located in the districts of Pilibhit, Lakhimpur Kheri and Bahraich on the India-Nepal border in the foothills of the Himalayas and the plains of the Tarai.

It is one of India's Project Tiger reserves and is heavily forested, giving a good prey base for tigers' survival.

It is home to a habitat of over 127 animals, 556 bird species and 2,100 flowering plants.

The fauna includes tiger, Indian leopard, swamp deer, hispid hare and Bengal floricans.

Katarnia Ghat : A swathe of pristine forest about 200 km from Lucknow in Bahraich district.

The Girwa river is home to fresh water Gangetic dolphins.

Have a roaring experience amidst tigers, leopards, deer and antelopes.

Smart City Project

Sachin Agarwal, Assistant Professor, BCA Department

The first question is what is meant by a 'smart city'. The answer is.. there is no universally accepted definition of a smart city. It means different things to different people. The conceptualisation of Smart City, therefore, varies from city to city and country to country, depending on the level of development, willingness to change and reform, resources and aspirations of the city residents. A smart city would have a different connotation in India than, say, Europe. Even in India, there is no one way of defining a smart city.

Some definitional boundaries are required to guide cities in the Mission. In the imagination of any city dweller in India, the picture of a smart city contains a wish list of infrastructure and services that describes his or her level of aspiration. To provide for the aspirations and needs of the citizens, urban planners ideally aim at developing the entire urban eco-system, which is represented by the four pillars of comprehensive development-institutional, physical, social and economic infrastructure. This can be a long term goal and cities can work towards developing such comprehensive infrastructure incrementally, adding on layers of 'smartness'.

Smart City Features : Some typical features of comprehensive development in Smart Cities are described below.

1. Promoting mixed land use in area based developments–planning for 'unplanned areas' containing a range of compatible activities and land uses close to one another in order to make land use more efficient. The States will enable some flexibility in land use and building bye-laws to adapt to change;
2. Housing and inclusiveness - expand housing opportunities for all;
3. Creating walkable localities –reduce congestion, air pollution and resource depletion, boost local economy, promote interactions and ensure security. The road network is created or refurbished not only for vehicles and public transport, but also for pedestrians and cyclists, and necessary administrative services are offered within walking or cycling distance;
4. Preserving and developing open spaces - parks, playgrounds, and recreational spaces in order to enhance the quality of life of citizens, reduce the urban heat effects in Areas and generally promote eco-balance;
5. Promoting a variety of transport options - Transit Oriented Development (TOD), public transport and last mile para-transport connectivity;
6. Making governance citizen-friendly and cost effective - increasingly rely on online services to bring about accountability and transparency, especially using mobiles to reduce cost of services and providing services without having to go to municipal offices. Forming e-groups to listen to people and obtain feedback and use

online monitoring of programs and activities with the aid of cyber tour of worksites;

7. Giving an identity to the city - based on its main economic activity, such as local cuisine, health, education, arts and craft, culture, sports goods, furniture, hosiery, textile, dairy, etc;
8. Applying Smart Solutions to infrastructure and services in area-based development in order to make them better. For example, making Areas less vulnerable to disasters, using fewer resources, and providing cheaper services

In the approach of the Smart Cities Mission, the objective is to promote cities that provide core infrastructure and give a decent quality of life to its citizens, a clean and sustainable environment and application of 'Smart' Solutions. The focus is on sustainable and inclusive development and the idea is to look at compact areas, create a replicable model which will act like a light house to other aspiring cities. The Smart Cities Mission of the Government is a bold, new initiative. It is meant to set examples that can be replicated both within and outside the Smart City, catalysing the creation of similar Smart Cities in various regions and parts of the country.

The core infrastructure elements in a smart city would include:

1. Adequate water supply,
2. Assured electricity supply
3. Sanitation, including solid waste management,
4. Efficient urban mobility and public transport
5. Affordable housing, especially for the poor
6. Robust IT connectivity and digitalization
7. Good governance, especially e-Governance and citizen participation
8. Sustainable environment
9. Safety and security of citizens, particularly women, children and the elderly
10. Health and education.

As far as Smart Solutions are concerned, an illustrative list is given below. This is not, however, an exhaustive list, and cities are free to add more applications.

My Teacher My Guru

Neha, B. Com., I

My teachers are like beautiful Pearls,
They take care of all boys and girls.
They are very helpful and kind,
Every thing the teacher says stays in my Mind.
They are Seldom rude, they are seldom cold,
They make me conifident they make me bold.
Their mind are intelligent, Their hearts are Pure,
They want my progress, that is for sure
They are very gentle, they are very nice
I can neither forget them nor their advice
They always help me, they always adore me
I Love my teacher
A Say in chorus
It is better to read one book For ten times,
than to read ten books For one time.

Digital India

Pankaj Kumar Gupta, Head of the Department, BCA Department

Digital India project was launched by the Prime Minister NarendraModi on 1st of July in 2015. It is an effective scheme to transform India for better growth and development of the people and country. Digital India week (from 1st July to 7th July) was inaugurated by the PM on Wednesday in the presence of senior ministerial colleagues and leading companies CEOs. It aims to give India a digital push for good governance and more jobs. The PM of India has tried his best towards digitizing campaign for India in order to bridge the gap between government services and people. Digitization was the need to be implemented in India for bright future and grow more than any other developed country. Following are the benefits of digital India campaign:

- It makes possible the implementation of digital locker system which in turn reduces paper work by minimizing the usage of physical documents as well as enabling e-sharing through registered repositories.
- It is an effective online platform which may engage people in governance through various approaches like "Discuss, Do and Disseminate".
- It ensures the achievement of various online goals set by the government.
- It makes possible for people to submit their documents and certificates online anywhere which reduces physical work.
- Through e-Sign framework citizens may digitally sign their documents online.
- It may ease the important health care services through e-Hospital system such as online registration, taking doctor appointments, fee payment, online diagnostic tests, blood check-up, etc.
- It provides benefits to the beneficiaries through National Scholarship Portal by allowing submission of application, verification process, sanction and then disbursal.
- It is a big platform which facilitates an efficient delivery of government or private services all over the country to its citizens.
- Bharat Net programe (a high-speed digital highway) will connect almost 250,000 gram panchayats of country.
- There is a plan of outsourcing policy also to help in the digital India initiative.
- For better management of online services on mobile such as voice, data, multimedia, etc, BSNL's Next Generation Network will replace 30-year old telephone exchange.
- National Centre for Flexible Electronics will help in the promotion of flexible electronics.
- Large scale deployment of Wi-Fi hotspots has been planned by the BSNL all across the country.
- There is a Broadband Highways in order to handle all the connectivity related issues.
- Open access of broadband highways in all the cities, towns and villages will make possible the availability of world-class services on the click of mouse.

Internet Banking

Mayank Sharma, Assistant Professor, BCA Department

In present times, Internet banking has no alternatives. Indian banking is gradually getting more and more access of Internet banking. Thus, Internet banking would drive us into an age of creative destruction due to non-physical exchange; complete transparency is also giving rise to perfectly electronic market place and customer supremacy.

At this moment, the question may be asked "what the Indian Banks should do under the present circumstances?" Whatever is the strategy chosen and options adopted, certain key parameters would largely determine the success of banks on web.

In order to attain long term success, in respect of Internet banking, a bank may follow:

(i) Adopting a webs mindset.
(ii) Catching on the first mover's advantage.
(iii) Recognizing the core competencies.
(iv) Enabling handling multiplicity with simplicity.
(v) Initiating senior management to transform the organisation from inward to outward looking.
(vi) Aligning roles and value propositions with customers segments.
(vii) Redesigning optimal channel port-folio.
(viii) Acquiring new capabilities through strategic alliances.

However, the above mentioned steps can be implemented by following four steps mentioned below:

(i) In the first phase, the customer be familiarized to new environment by demo version of software on banks, website. This will enable users to give suggestions for improvements, which can be incorporated in its later versions wherever possible.
(ii) The second phase provides various services such as account information and balances, statement of account, transaction tracking, mail box, check book issue, stop payment, financial and customized information.
(iii) The third phase may include additional multi-utility services like fund transfers, DD issue, standing instructions, opening fixed deposits and intimation of loss of ATM cards.
(iv) The final phase should include advanced corporate banking services like third party payments, utility bill payments, establishment of L/Cs, Cash Management Services etc. Enhanced plan for the customers in future may include requests for demand drafts and pay orders and many more to bring in the ultimate in banking convenience.

Thus by following the above mentioned strategies, it will help banks to translate their traditional business model into a Internet banking one, falling into the following three main categories:

(i) One-stop shop.
(ii) Virtual one stop shop.
(iii) Best of Breed Supplier.

Uses of Computers in the Field of Education

Amit Soam, Assistant Professor, BCA Department

Computers are being used actively in educational institutes to improve the learning process. Teachers can use audio video aids through computer to prepare lesson plans. They can use Microsoft Power Point to prepare electronic presentations about their lectures. These electronic presentations will be displayed on multimedia projectors in class rooms. This will be interesting and easy to learn for students. Multimedia presentations are easy to deliver for teachers too.

Computers will be helpful for :

1. Instructing the students using Power Point Presentation, Word documents or Web pages and using hyperlinks for better concept clarity.

2. Helps in improving pronunciation of students by using microphones, headphones, speakers, specially prepared software and special dedicated websites.

3. Encouraging the students to use internet, surf web pages and gather relevant detailed information through search engines.

Computer-Based Training (CBT):

In Computer Based Training, we prepare different educational programs with the help of professional teachers and audio visual aids. These educational programs are generally in the shape of lectures on a specific subject. These programs are provided on CDs.

Online Education:

Now days, Open Schooling and Open Universities, fully provide online education. You can read or download educational material and books from websites. Students use internet to access VU website. The students log in to their accounts and e-mail boxes. They interact with different teachers online. They receive and submit their assignments and work through internet to their teachers.

Research:

Computers are also used for research work. Internet is a huge source of information on any topic. Different researchers can analyze data through some software and also share their research work through Internet.

Institute Administration:

Computers are being used to perform many tasks in educational institutions, easily and quickly:

1. Keeping Records of students.
2. Storing Records of employees of institution.
3. Managing Accounts of the institution.
4. Fees collection and maintenance of fees record.
5. Circulation of instruction/notices and getting it in printed form.
6. Preparation of school/ college magazine, newsletter etc.

A Brief Summary of the English Language

Dev Swaroop Gautam, Assistant Professor, BCA Department

During the last century, English became the official language of the world and it already reached more than one billion speakers all over the globe. Although it is generally accepted that English is not one of the hardest languages to learn, its fast dissemination involves much more than this. It involves historical facts. Nowadays English is the world's second most spoken language, behind Mandarin only, and it is the most used language in international markets, in scientific resources and in the internet. English is the most learned and spoken foreign language in the world and the number of non-native speakers are increasing year after year.

Pre English:

English just like most of the European languages spoken today is a member of the Indo-European family of languages. Sometime around the year 3500 BC, the Indo-Europeans started to spread across Europe and in 600 BC, a specific group called the Celts settled in the British Isles. This immigration kept growing for centuries until the Roman occupation, which occurred around 55 BC. Britain remained under the Romans control for over 400 years and this domination had a huge effect on the culture, religion and social behaviour of its population. However, the use of Latin by the natives was restricted to the members of upper classes in the society and the constant attacks from the Celts made the Romans give up on their permanent occupation plans. The influence of the Latin from that time in the modern English language is also very limited. Therefore, most of the linguistic legacy of the Romans takes form in dozens of words, such as candel (candle), plante (plant), rosa (rose), port (harbor), piper (pepper) and others.

Old English:

Around the year 600 AD, St. Augustine and his missionaries from Rome spread the Christianity through the whole England and not so long after that, the Anglo-Saxons adopted the new Roman alphabet with the addition of some letters for sounds that could not be found in Latin. Once again the Latin language was restricted to both upper class and church members. During this period of time, important words such as fork, school, tower, paper, circle, bishop, priest, angel, baptism, monk and lily were included in the language. The influence of Old Norse is found today in words like skin, leg, neck, fellow, sky, cake, egg, skirt, bank, law, anger, knife, like, smile, hug, window, weak, wrong, mistake, ugly, ill, seem, want among others. Old English was a very complex language compared to the modern English.

Middle English:

The lower classes kept speaking English and the development of both languages together is called

the Middle English. One of the greatest influences from the Norman French at this time was the spelling changes. Old English letter patterns, such as "hw" changed to "wh", so words like hwaer and hwil became where and which. Latin words related to medicine, literature, law and religion, such as legal, private, history, library, tolerance, infinite, solar, recipe were included in the vernacular.

During this period, English became the third language of its own country and for that reason; many of the grammatical complexities and inflections disappeared. Noun genders and adjective inflections no longer existed except for singular and plural.

Early Modern English:

An important point in the development of Modern English was the advent of the printing press. During that period, there were five main dialects in England with huge differences in spelling and pronunciation. The printing press contributed significantly for the English's standardization and the differences between the dialects got smaller. There were several important facts during this period but the most important was the action of one person that changed the English language forever and his name is William Shakespeare.

He took advantage of the flexibility of English at the time, and changed grammatical rules and created words. He personally created over 2000 neologisms, such as critical, majestic, monumental, homicide, obscene, countless, premeditated, excellet, hint, lonely, pedant, accommodation and others that are common until today.

Late Modern English (1800AD to Present):

The Late Modern English started with the industrial and scientific revolution and the need to describe new things and new invents such as, oxygen, nuclear, protein, bacteria, caffeine, electron, train, electricity, camera, telegraph and others. These words were basically brought from Latin and Greek. Another crucial point during this period was the colonialism and the British Empire. During this period, Britain ruled almost one quarter of the world and English adopted many foreigner words from other languages and from its colonies, such as boomerang and kangaroo from Australia, thug, jungle, candy and shampoo from India, yoghurt from Turkish, carnival, design, piano and fiasco from Italian and many other words.

The history of the English language is fascinating, the most incredible part is that English is still developing and changing. Every year new words are created and become highlights such as, selfie, meme, sharenting, uber, gosh, jomo and others. Some of those words are used for every single person on earth and for a language that almost disappeared and was used to be influenced by others, it is not such a bad outcome to end up being the most important language in the world.

महाविद्यालय परिवार

प्रबन्ध कार्यकारिणी

1.	श्री अजय गर्ग	अध्यक्ष
2.	श्री विकास कुमार	उपाध्यक्ष
3.	डॉ. के.पी. सिंह	सचिव
4.	श्री रवि परमार	संयुक्त सचिव
5.	श्री सुरेश चन्द जिन्दल	कोषाध्यक्ष
6.	श्री सुनील गुप्ता	आन्तरिक लेखा परीक्षक
7.	श्री एस.पी.एस. तोमर	सदस्य
8.	डॉ. सुधीर कुमार	सदस्य
9.	कमा. एस. जे. सिंह	सदस्य
10.	डॉ. यू. के. झा	प्राचार्य (पदेन)
11.	डॉ. वी.के. गोयल	प्राध्यापक प्रतिनिधि
12.	श्री सुनील कुमार गर्ग	तृतीय श्रेणी कर्मचारी प्रतिनिधि

प्राध्यापक (वित्त पोषित)

1.	डॉ. यू. के. झा	प्राचार्य एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
2.	डॉ. मुनेश कुमार	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग
3.	डॉ. विनोद कुमार गोयल	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भौतिकी विभाग
4.	डॉ. प्रदीप कुमार त्यागी	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, सांख्यिकी विभाग
5.	डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गणित विभाग
6.	डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती	एसो. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
7.	श्री यजवेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर, भौतिकी विभाग
8.	श्री सीमान्त कुमार दुबे	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग
9.	डॉ. मुकेश गुप्ता	गणित विभाग

प्राध्यापक (स्ववित्त पोषित)

1.	डॉ. कृष्ण चन्द्र गौड़	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग
2.	डॉ. सुनीता गौड़	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
3.	डॉ. सुधा उपाध्याय	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
4.	डॉ. वीरेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
5.	डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
6.	श्री देव स्वरूप गौतम	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
7.	श्री गुरूदत्त शर्मा	असि. प्रोफेसर शिक्षा विभाग
8.	श्री रविकान्त गौड़	असि. प्रोफेसर शिक्षा विभाग
9.	डॉ. भुवनेश कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,, वाणिज्य विभाग
10.	डॉ. तरूण बाबू	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
11.	डॉ. राजीव गोयल	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
12.	डॉ. विशाल शर्मा	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
13.	श्री पंकज कुमार गुप्ता	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,, बी.सी.ए.
14.	श्री मयंक शर्मा	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए.
15.	श्री सचिन अग्रवाल	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए.
16.	श्री सत्य प्रकाश गौतम	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए.
17.	श्री अमित कुमार सोम	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए.
18.	डॉ. घनेन्द्र बंसल	असि. प्रोफेसर, रसायन विभाग
19.	डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह	असि. प्रोफेसर, रसायन विभाग
20.	श्री गौरव जैन	अंशकालिक प्रवक्ता, संस्कृत विभाग
21.	श्री सत्यपाल सिंह	अशंकालिक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
22.	श्री चन्द्र प्रकाश	अशंकालिक प्रवक्ता, अंग्रेजी विभाग
23.	कु. कुशमाण्डे आर्य	अंशकालिक प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग
24.	श्रीमती ममता शर्मा	अंशकालिक प्रवक्ता, अर्थशास्त्र विभाग
25.	श्री ऋषभ वार्ष्णेय	अंशकालिक प्रवक्ता, भौतिकी विभाग
26.	कु. देवश्री	अंशकालिक प्रवक्ता, संस्कृत विभाग
27.	श्री अनुज कुमार बंसल	अंशकालिक प्रवक्ता, राजनीति विभाग

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (वित्त पोषित)

1.	श्री सुनील कुमार गर्ग	कार्यालय अधीक्षक
2.	श्री अनिल कुमार अग्रवाल	कनिष्ठ सहायक
3.	श्री के. के. श्रीवास्तव	पुस्तकालय सहायक
4.	श्री पंकज शर्मा	प्रयोगशाला सहायक, भौतिकी
5.	श्री सुनील कुमार	प्रयोगशाला सहायक, रसायन विभाग विभाग
6.	श्री लक्ष्मण सिंह	कनिष्ठ सहायक
7.	श्री चन्द्र पाल सिंह	अंशकालिक कम्प्यूटर ऑपरेटर
8.	श्री नारायण देव मिश्रा	कार्यालय दफ्तरी
9.	श्री डम्बर सिंह	अर्दली
10.	श्री गजेन्द्र सिंह	गैसमैन, रसायन विज्ञान विभाग
11.	श्री कपूर चन्द्र	चौकीदार
12.	श्रीमती पार्वती	पुस्तकालय परिचायिका
13.	श्री सुनील कुमार निर्मल	प्रयोगशाला परिचर, भौतिकी विभाग
14.	श्री महेश चन्द्र	सेवक, कार्यालय
15.	श्री अमरनाथ राय	प्रयोगशाला परिचर, रसायन विज्ञान विभाग
16.	श्री विजय पाल सिंह	माली
17.	श्री राम अवतार	प्रयोगशाला परिचर, सांख्यिकी विभाग

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (स्ववित्त पोषित)

1.	श्री दीपक कुमार शर्मा	लेखाकार
2.	श्री सुरेश रावत	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
3.	श्री आशीष कुमार	कनिष्ठ सहायक
4.	श्री जितेन्द्र कुमार	कनिष्ठ सहायक
5.	श्री विजय कुमार शर्मा	बी.सी.ए. प्रयोगशाला सहायक
6.	श्री प्रमोद कुमार	प्रशासनिक सहायक
7.	श्री विजय कुमार	दैनिक भोगी सेवक
8.	श्री योगेश कुमार	दैनिक भोगी सेवक
9.	श्री राम बाबू	दैनिक भोगी सेवक
10.	श्री त्रिलोक चन्द	दैनिक भोगी सेवक
11.	श्री विक्रम सिंह	दैनिक भोगी सेवक
12.	श्री नेत्रपाल सिंह	दैनिक भोगी सेवक
13.	श्री जितेन्द्र कुमार	दैनिक भोगी सेवक
14.	श्री सुबोध कुमार	दैनिक भोगी सेवक
15.	श्री नितिन कुमार	दैनिक भोगी सेवक
16.	श्री साहब सिंह	दैनिक भोगी माली
17.	श्री सुन्दर पाल	दैनिक भोगी माली
18.	श्री मान सिंह	दैनिक भोगी माली
19.	श्री जगदीश कुमार	दैनिक भोगी माली
20.	श्री सोनू कुमार	दैनिक भोगी माली
21.	श्री अंकुर	दैनिक भोगी सेवक
22.	श्री राजीव	दैनिक भोगी सेवक
23.	श्री अरविन्द	दैनिक भोगी सेवक

विभिन्न समितियाँ

प्राचार्य परिषद

1. डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य)
2. डॉ. मुनेश कुमार
3. डॉ. वी. के. गोयल
4. डॉ. पी.के. त्यागी
5. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल
6. श्री पंकज गुप्ता
7. डॉ. के. सी. गौड़
8. डॉ. भुवनेश कुमार

सूचना एवं प्रौद्योगिकी समिति (I.T. Commitee)

1. डॉ. ऋषि कुमार, अग्रवाल (प्रभारी)
2. श्री सचिन अग्रवाल
3. श्री सुनील कुमार गर्ग
4. श्री दीपक कुमार शर्मा

क्रीड़ा समिति

1. श्री सीमान्त कुमार दुबे (प्रभारी)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री मयंक शर्मा
5. श्री गुरूदत्त शर्मा
6. डॉ. विशाल शर्मा

अनुशासन समिति

1. डॉ. पी. के. त्यागी (मुख्यानुशासक)
2. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री यजवेन्द्र कुमार
6. डॉ. विशाल शर्मा
7. श्री के. के. श्रीवास्तव

एंटी रैगिंग समिति

1. श्री सीमान्त कुमार दुबे (प्रभारी)
2. श्री मयंक शर्मा
3. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
4. डॉ. विशाल शर्मा

आन्तरिक गुणवत्ता सुनश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC) **एवं राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन समिति** (NAAC)

1. डॉ. वी. के. गोयल (समन्वयक)
2. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री पंकज गुप्ता
6. डॉ. भुवनेश कुमार
7. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह
8. श्री सुरेश चन्द्र गर्ग (सामाजिक कार्यकर्ता)
9. डॉ. आलोक गोविल (सामाजिक कार्यकर्ता)
10. श्री सुनील कुमार गर्ग

छात्र कल्याण समिति

1. डॉ. पी. के. त्यागी (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3. श्री यजवेन्द्र कुमार
4. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
5. श्री अमित सोम

शिकायत-निवारण प्रकोष्ठ

1. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल (प्रभारी)
2. श्री पंकज गुप्ता
3. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
4. डॉ. तरुण बाबू
5. श्री सुनील कुमार गर्ग

भवन निर्माण समिति

1. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल (प्रभारी)
2. डॉ. पी.के.त्यागी
3. श्री सीमान्त कुमार दुबे
4. श्री सुनील कुमार गर्ग

महाविद्यालय प्रकाशन समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. श्री सीमान्त कुमार दुबे
3. डॉ. भुवनेश कुमार
4. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह
5. डॉ. विशाल शर्मा

चिकित्सा समिति

1. डॉ.वी.के गोयल (प्रभारी)
2. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल
3. श्री सत्य प्रकाश गौतम
4. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह

यू.जी.सी. अनुदान योजना समिति

1. डॉ. मुनेश कुमार (प्रभारी)
2. डॉ. वी. के. गोयल
3. डॉ. पी. के. त्यागी
4. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल
5. श्री सुनील कुमार गर्ग
6. श्री. के. के. श्रीवास्तव

विकास कोष समिति

1. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल (प्रभारी)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ.(श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री सुनील कुमार गर्ग

महिला संरक्षण समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
3. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
4. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह

पुस्तकालय समिति

1. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल (प्रभारी)
2. श्री सीमान्त कुमार दुबे
3. श्री यजवेन्द्र कुमार
4. श्री के.के.श्रीवास्तव

सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
3. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
4. श्री सचिन अग्रवाल
5. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह

अन्य विभागीय प्रभारी

1.	**व्यवसाय परामर्श इकाई**	: डॉ. मुनेश कुमार
2.	**वि. वि. परीक्षा, गृह परीक्षा, विद्युत व्यवस्था एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र**	: डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल
3.	**नोडल अधिकारी, दशमोत्तर छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति**	: डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4.	**राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी)**	: श्री यजवेन्द्र कुमार
5.	**राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)**	: श्री सीमान्त कुमार दुबे
6.	**छात्रावास**	: श्री सचिन अग्रवाल

ANOOP SHAHR
BULANDSHAHR
NATIONAL SERVICE SCHEME

P. B. S. (P.G.) COLLEGE, ANOOPSHAHR
दिवस -2017
निवास रामानुजन जयन्
दिसम्बर 1887 – 26

l= 2016&17 d gekj ifrHkk'kkyh fo|kFkh

उवर्शी वार्ष्णेय
एम.एस-सी. (भौतिकी)
74.40%

हिमानी शर्मा
एम.एस-सी. (रसायन)
78.75%

पूनम
एम.ए. (संस्कृत)
74.55%

नीतू बंसल
बी.सी.ए.
74.63%

निधि भारद्वाज
बी.एड.
80.35%

दिव्या बंसल
बी.कॉम.
70%

प्राची शर्मा
बी.एस-सी.
76.90%

गीता
बी.ए.
58.25%

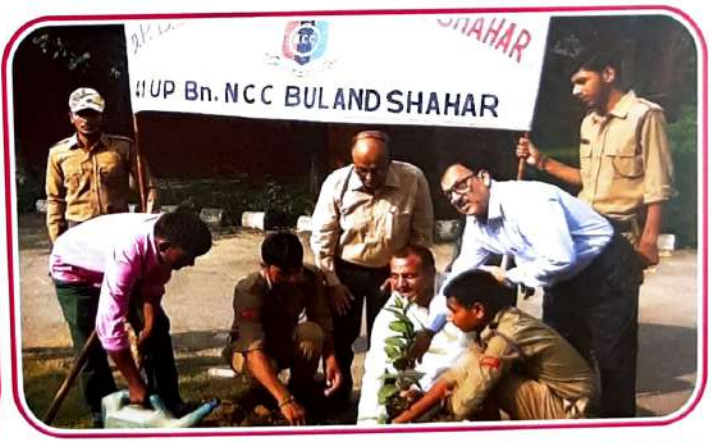
UP Bn. NCC BULAND SHAHAR

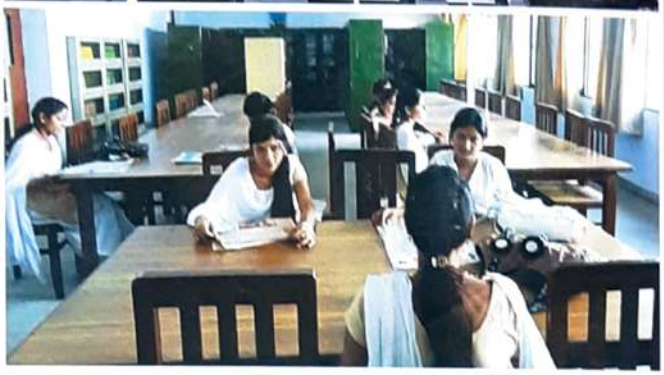

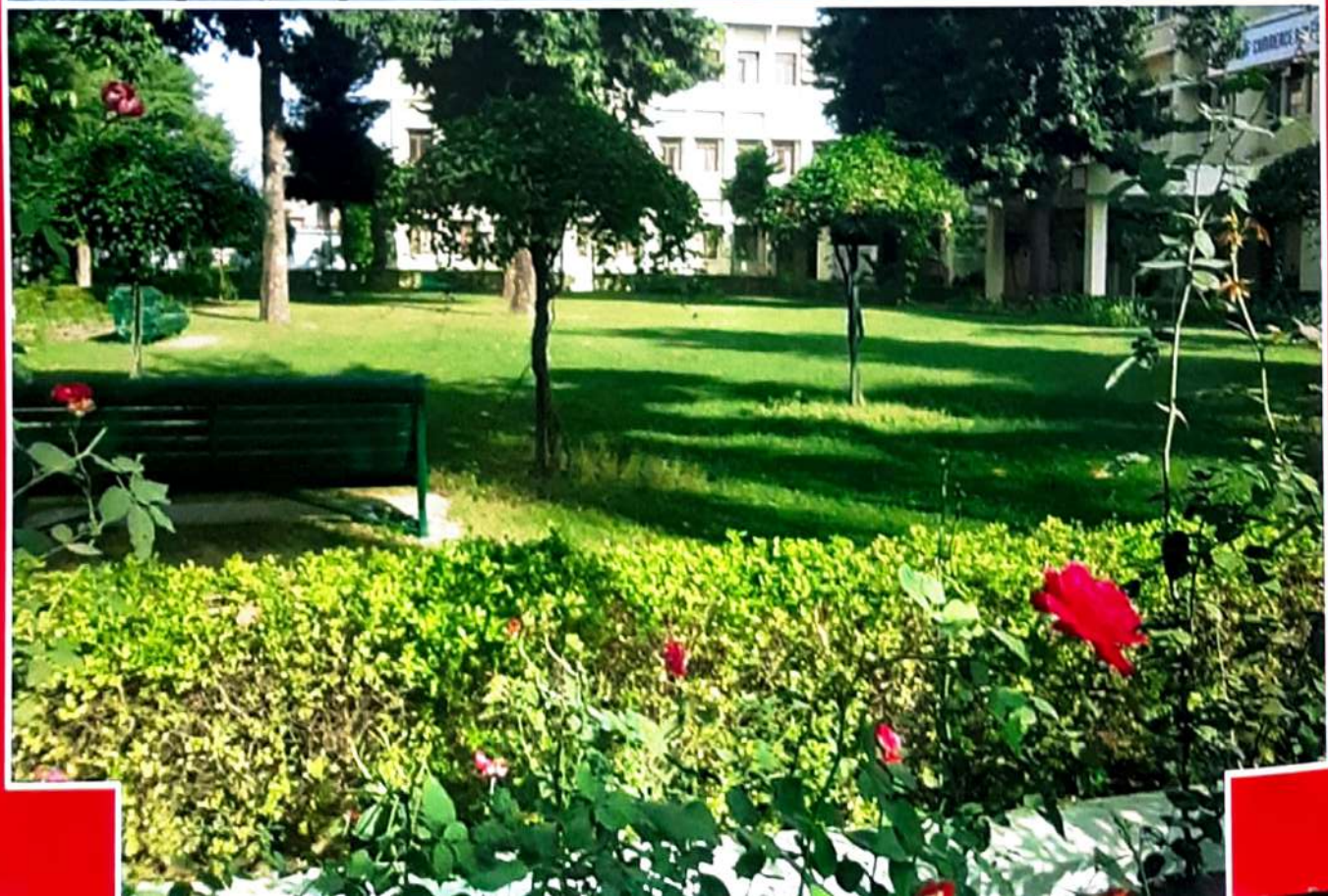

Print : deekay publishers & printers # 9873205033